# 1. पंच सालिकणाणं सत्ति

रायगिहे नयरे महाधणो धणो सेट्ठी होत्था। तस्म य पयइभद्दाए गेहिणीए चउरो पुत्ता——धणपालो, धणदेवो, धणरक्खिओ य। सव्वेवि ते सुदेरं–मंदिरं कलाकुसला सोजन्नपुन्ना य। घरिणीओ तेसिं पहाणकुलब्भवाओ कमेणं सिरी, लच्छी, धणा, धन्ना य। ते जणयपसाएण निच्चं सुहिया विहरंति। अन्नया सेट्ठी परिणयवओ परलोगहियं काउकामो चिंतेइ——''एए पुत्ता मए एत्तियं कालं सुहिणो कया, संपयं पुण जइ सुण्हा काइं गिहकज्जाइं चिंतेइ, तो मइ पव्वइएवि सुत्थिया हवंति। का पुण एयासिं गिहचिंताए उचिय त्ति हुं नायं, जा पुन्नाहिया। सा कहं नायव्वा? बुद्धीए। जओ लोयवाओ——''बुद्धी कम्माणुसारिणी होइ।'' एमाइ चिंतिऊण सेट्ठिणा पारद्धा तेसिं बुद्धीए परिक्खा। पवत्तिओ गिहे ऊसवो। निमंतिओ तासिमप्पणो सयणवग्गो, भोयाविओ सगोरवं।

भुत्तुत्तरेय सुहक्खानिविट्ठोचित्तसालिगाए।समाणिओ कुसुमविलेवणतंबोलाइणा। तस्समक्खं च धणेणाहूया सुण्हाओ, पंच पंच सालिकणे दाऊण भणियाओ य——''एए सम्मं पालेयव्वा। जया य मग्गामि तया मम समप्पियव्वं'' ति। तओ विसज्जिओ सयणवग्गो। 'किमेत्थं तत्तं' ति? सवियक्को गओ सट्ठाणं। तत्थ जेट्ठसुण्हाए एते पंचवि उज्झिया, जया जाइस्सइ तया जओ तओअप्पिसामि त्ति कट्टु। बीयाए एयं चेव चिंतियं। नवरं छोलिऊण मुहे पक्खित्ता। तइयाए सुद्धवत्थे बंधिऊणाभरणकरंडिगाए ठविया, तिसंज्झं पाडियारिया य। चउत्थीए पुण समप्पिया कुलहरे, पत्ते पाउसे वविया, उक्खेया य, पडिउक्खया य कया। तेसिं पढमवरिसे जाओ कुलओ। बीए वरसे आढगं। तइयवरिसे खारि। चउत्थे कुंभा। पंचमए कुंभसहस्साणि।

पुणोवि सयणसमवायपुव्वं मग्गिया जेट्ठसुण्हा। तीए वि किच्छेण सरिऊण समप्पिआ कुओ वि पंच कणा। सवहसावियाए अन्ने एए त्ति साहिओ सब्भावो। बीयाए वि एव चेव। नवरं ते मए छोल्लिऊण भुत्त त्ति। तइयाए गंठिबद्धा चेव समप्पिया, किर मए एवं चेव रक्खिय त्ति। चउत्थीए कुंचियाओ समप्पिऊण भणियं——''मम जणयगिहेसु चिट्ठंति। सगडाइपेसणेणं आणावेउ ताओ त्ति।'' सेट्ठिणा भणियं, पुत्ति! कीस तए एवं कयं? तीए भणियं——''ताएण समाइट्ठं पालेयव्वा एए, ते एवं चेव सम्म पालिया भवंति। तओ सेट्ठिणा नियाहिप्पायं साहिऊण भणिया तब्बंधुणो, किमेत्थ उचिय त्ति?

तेहिं भणियं——''तुब्भे चेव बुद्धिनिउणा पमाणं।'' सेट्ठिणा वुत्तं——''जेट्ठा उज्झणसीला, ता जं किंचि मज्झगिहे छारछगणकयवराइ उज्झियव्वं तत्थ एयाए अहिगारो। जं किंचि रंधणकडणसोहणाइ, तंमि बीयाए निओगो। तइया भंडागारसामिणि। चउत्थी सव्वाहिगारिणी, एयाए आएसेण सेसाहिं हिंडियव्वं। एवं चेव एयाओ सुहभाइणीओ भविस्संती त्ति जायमणुमयमेयं सव्वेसिं। तप्पभिइ तासिं नामपसिद्धी जाया——उज्झिया, भोगवई, रक्खिया, रोहिणी त्ति। जायं च सेट्ठिघरं सुत्थं। तओ सलाहिओ सेट्ठी लोएण। तेणावि कयं हियइच्छियं ति। एरिसो दीहदंसी धम्मारिहो त्ति।

# 1. पांच धान्यकणों की शक्ति

**अनुवाद**–राजगृह नगरी में धन नाम का एक धनवान श्रेष्ठी रहता था। उसकी स्वभाव से भद्र सुभद्रा नाम की पत्नी के चार पुत्र थे——धनपाल, धनदेव, धनगोप और धनरक्षित। वे सभी सौन्दर्य के मन्दिर कलाओं में कुशल एवं सज्जनता से पूर्ण थे। उनकी पत्नियां प्रधान व विख्यात कुलों में उत्पन्न थीं। उनके नाम क्रमशः श्री लक्ष्मी, धना एवं धन्या थे। वे पिता (श्वसुर) की कृपा से निरन्तर संतोष से रहती थीं।

वृद्धावस्था को प्राप्त सेठ ने अपने परलोक सुधारने की चिंता करते हुए विचार किया——'इन पुत्रों को मोने इतने समय से सुखी रखा। संप्रति ये पुत्रवधुएं कौन–कौन गृह–कार्य करती हो, ऐसा यदि विचारकर लिया जाए तो मेरे प्रवर्जित होने पर भी ये सुखी हो सकते हो।

इनमें से कौन गृहकार्य की चिंता में उचित है वह मुझे जानना चाहिए। किंतु वह कैसे जानी जाए? बुद्धि से ही जानी जा सकती है।

लोक में यह बात प्रचलित है कि ''बुद्धि कर्म के अनुसार होती है।'' ऐसा सोचकर उस साधु ने उन पुत्रवधुओं की बुद्धि की परीक्षा के लिए अपने घर में एक उत्सव किया। उस उत्सव में पुत्रवधुओं के रिश्तेदारों और घर के लोगों को निमंत्रित किया और उनको गरिमापूर्वक भोजन करवाया।

भोजनोपरान्त सभी को चित्रशाला में (ड्राइंगरूम) सुखपूर्वक बैठाया और पुष्प, गन्ध, ताम्बूल आदि से सम्मानित किया।

Jain Vishva Bharati Institute (Deemed University), Ladnun

फिर उनके समक्ष चारों पुत्रवधुओं को बुलाया और उन्हें धान के पांच–पांच कण देकर कहा–इन धान्यकणों को अच्छी तरह संभाल कर रखना और जब मो मांगूं, तब मुझे दे देना। यह कहकर उसने उन सभी को विदा कर दिया। यहां क्या तथ्य है? इस प्रकार चिन्तन करते हुए वे चले गये।

सबसे बड़ी बहू ने उन धान्यकणों को फेंक दिया और सोचा कि जब मांगेगे तब कहीं से लाकर दे दूंगी। दूसरी ने भी ऐसा ही विचार किया किन्तु फेंका नहीं, बल्कि छीलकर खा गई। तीसरी पुत्रवधू ने एक शुद्ध वस्त्र में उन्हें बांधकर अपने आभूषणों की पेटी में रख दिया और तीनों सन्ध्याओं में वह उनका देखभाल करने लगी। चौथी बहू ने उन धान्यकणों को अपने पीहर में भेज दिया। वर्षा के प्रारम्भ होते ही उन्हें खेत में बो दिया गया और उत्क्षेपण–प्रतिक्षेपण की क्रिया प्रारम्भ कर दी गई। पहले वर्ष में एक कुलक धान हो गया, दूसरे वर्ष में एक आढक, तीसरे वर्ष में एक खारी, चौथे वर्ष में एक कुम्भ और पांचवें वर्ष में एक हजार कुम्भ धान से भर गए।

पुनः सभी रिश्तेदारों को बुलाकर सभी के आगे अपनी बड़ी पुत्रवधू से धान के उन पांच बीजों को मांगा। उसने बड़ी ही कठिनाई से स्मरण कर कहीं से धान के पांच बीज लाकर दे दिये। सेठ के द्वारा जब शपथ सहित पूछा गया तब उसने सरलता से सब कुछ बता दिया कि यह दूसरे धान्य हो। दूसरी ने भी ऐसा ही किया और कहा——मैंने उन पांचों धान्यकणों को खा लिया था। तीसरी ने वस्त्र में बंधे हुए धान के उन पांच बीजों को समर्पित कर दिया और कहा कि मो उसकी सुरक्षा करती रही। चौथी ने चाबी सोपते हुए कहा——धान के बीज मेरे पिता के घर में है। गाड़ी आदि भेजकर पिता के घर से मंगवा लीजिए। यह सुन सेठ ने कहा——पुत्री! तूने यह कैसे किया? उसने कहा——पिता ने (अर्थात् आपने) कहा था कि इसकी सम्यक् देखभाल करना, अतः उन पांच कणों की सम्यक् रक्षा की गई है। तब श्रेष्ठी ने अपने अभिप्राय को पूरा होते देख उन वधूओं के घर से आए हुए बन्धुओं से पूछा——क्या करना उचित है? यह सुनकर उन लोगों ने कहा——आप ही बुद्धिमान् हो अतः आपका निर्णय ही प्रामाणिक होगा।

तब सेठ ने कहा——बड़ी पुत्रवधू (चीजों को) फेंक देने वाली है, अतः आज से घर में राख, कण्डे कचरे आदि जो कुछ चीजें फेंकने की हो, वही सब इसके अधिकार में है, अर्थात् कचरे आदि फेंकन का कार्य यही करेगी। घर में जो भी सफाई का कार्य है, भोजनादि बनाना है, वे सब काम दूसरी पुत्रवधू के अधिकार में है। तीसरी पुत्रवधू भण्डारगृह की स्वामिनी होगी। किन्तु चौथी समस्त (सम्पत्ति) की स्वामिनी होगी। उसके आदेश से ही सभी कार्य होंगे।

उसी समय से उन सभी पुत्रवधूओं के नाम इस प्रकार प्रसिद्ध हो गये——उज्झिता, भोगवती, रक्षिता एवं रोहिणी। इसके बाद धन्य सेठ का घर सुव्यवस्थित हो गया। सभी लोगों ने सेठ की बड़ी प्रशंसा की। उस सेठ ने भी अपने मनोवांछित परलोक में हितकर कार्य किये। दीर्घदर्शी एवं धर्म करने में समर्थ व्यक्ति ही ऐसा कर सकते हैं।

**कठिन शब्दों के अर्थ**

होत्था——था
काइं——कितने
सिरी——श्री
निच्चं——नित्य
काउकामो——करने की इच्छा
एत्तियं——इतना
कया——किया
मइ——मेरा
सुत्थिया——प्रसन्न हूं मैं
नाय——जान लिया
पुन्नाहिया——अधिक पुन्य
एमाद्——ये
पारद्धा——प्रारम्भ किया
समाणिओ——सम्मान किया
पक्खिता——फेंक दिया
करंडिगाए——पेटी में
ठबिया——रख दिया
कट्टु——करके
किच्छेण——कष्टपूर्वक
कुओवि——कहीं से भी
सढाओ——सद्भावपूर्वक
पाउसे——वर्षा ऋतु में
आढयं, खारी, कुंभा——माप विशेष
वुत्तं——कहा
रंधककंडण सोहणाइ——भोजन बनाना, चुनना, सफाई करना आदि

Jain Vishva Bharati Institute (Deemed University), Ladnun

### (1) वस्तुनिष्ठ प्रश्न

(1) धनश्रेष्ठी ..... में रहता था।
(2) धनश्रेष्ठी के धान्य के पांच–पांच कण अपने .....दी।
(3) दूसरी पुववधू धान्यकणों ..... ।
(4) प्रथम वर्ष में पांच कणों के ..... हो गये।
(5) प्रथम पुत्रवधू का नाम ..... था।

### (2) निबन्धात्मक प्रश्न

(1) चौथी पुत्रवधू ने किस प्रकार धान्यकणों का संवर्धन किया, विस्तार से लिखें।
(2) पाठ का सारांश अपने शब्दों में लिखें।
(3) धन्य सार्थवाह के व्यक्तित्व पर प्रकाश डालें।

## 2. रमणीए पराभूअ–सिकन्दरस्स कहा

दुसहस्सवासाओ पुव्वं गीसविसए साहसिओ महासूरो सिकंदरो नाम महाराया आसि। बालत्तणाओ आरब्भ तस्स अज्झावगो रायनीइ–वियक्खणो सम्मग्गदंसगो 'एरिस्टोटलो' नाम असाहारणो विउसवरो गुरु अहेसि। सो सिकंदरो सया गुरुसेवापरो आणाए वट्टमाणो जोव्वणे वि चत्तकाभोगाहिलासो परंगणासु वि दिट्ठिं अकुणंतो, केवलं जस–कित्ति–विजयकंखिरो गुरुणो पहावेण अणेगदेसविजयं कासी। वीसपसिद्धो सो एगया सव्वदिसाविजयं काउं इच्छंतो पबलसेणापरिवरिओ गुरुणा सह नियनयराओ निग्गओ।

मग्गे खुहापिवासा–परिस्समं अगणंतो पबलूसाहजुओ दूसहेज्ज–नरिंदवग्गे जयंतो कमेण इराणदेसे समागओ, तत्थ काओ महानयराओ बाहिरं सिविरं ठावेअ सयं उज्जाणमज्झे भव्वपासाए ठिओ। एगया आसारूढो सो गिरिसिहरमालालंकिय–विविहपएससोहं निरिक्खंतो अग्गओ गच्छमाणो नियरूवनिज्जिअदेवगणं महरिसीणं पि चित्तक्खोहकारिणिं एगं सुंदरिं पासेइ। सा अच्चब्भुयरूवा सुंदरी त्ति ससिसिणेहनयणकडक्खेहिं ताडित्ता कामविसयविसमुच्छियं करेइ। सो वि कामग्गहगसिओ तं चिय पासेमाणो सबलो वि विमूढमणो अग्गओ गंतुं असमत्थो तत्थ च्चिय निच्चलो ठिओ। सा बाला विमोहित्ता नियट्ठाणे गया। समीववट्टिणा गुरुणा सव्वा एव तस्स चेट्ठा निरिक्खिया। सो वि नरिंदो गुरुं दट्ठूणं जायक्खोहो पुणरवि सावहाणचित्तो संजाओ।

एगया नियपबलसेणामज्झे उवविट्ठो सो सिकंदरो मंतिसेणावइपमुहसुहडवराणं अग्गओ नियपरक्कमवत्तं कहेइ, तम्मिय काले तस्स गुरु तत्थ समागंतूण सहासमक्खं तं अवहेलेइ––''जं विजइक्करसियाणं पुरिसाणं इत्थीरूवावलोगणं पि भयंकरं, जाओ दंसणमेत्ताओ वीरियं हणेइरे, हलाहलमिव कज्जं कुणंति। वीरपुरिसाण नरिंदाणं च नरगुवारसमा सा सत्थेसु गणिआ, तासिं सुंदेरं पि विसमविसाओ व महाभयजणगं।'' एवं अवहिलित्ता नियावासे गओ।

सो महानरिंदो बालत्तणाओ गुरुस्स उवगारं सुमरंतो सहासमक्खं एवं निंदिओ गरिहिओ वि मउणेण अहोदिट्ठिं काऊ सव्वं सहेइ। किंतु मणंमि अच्चंतदूमिओ विविहविगप्पे कुणंतो कियंतं कालं तत्थेव ठाऊण सहं विसज्जित्ता नियपासाए आगओ। तत्थ वि खणं दिट्ठसुंदरीए सुंदरयं, खणं अप्पणो निब्बलयं, खणं गुरुओ दढिमं वियारंतो एवं निण्णयं करेइ––''कयावि तीए रमणीए मुहं न पासेमि' त्ति नियचित्तं थिरीकरेइ। तह वि अणाइकालमोहब्भासेण इंदियाणं च पबलत्तणेण निब्बलस्स तस्स चित्ते सच्चिय रमणी आगच्छइ।

तया सो तं चियं रमणीरूवं झायंतो विम्हरिनियकज्जो सहसा नियमासरयणं आरोहित्ता तीए सुंदरीए घरंमि समुवागओ। सा वि सिकंदरं पासित्ता अच्चंतहरिसचित्ता तं सक्कारेइ सम्माणेइ य। तया सो संभरियगुरुवयणो 'हा! अहं किं करोमि? नियरज्जाओ जगज्जयणपिवासाए निग्गओ हं एईए रमणीए पराइओ, मज्झ सव्वं नट्ठं, लोगा वि किं मं वइस्संति? अलाहिं एयाए।'––एवं वियारित्त पच्चागंतुं पवट्टइ।

तया सा सुंदरी इंगियागारेण तस्स मणोभावं जाणित्ता कहेइ––''किं पच्छा गच्छेह? अत्थ आगमणे तुमं को निवारेइ? सच्चं मम कहेह, हं तु नियरूव–मइ–कला–संपयाए महरिसीणं पि चित्तं खोहेउं समत्था। मम अग्गओ सो वरागो को? खणेण

Jain Vishva Bharati Institute (Deemed University), Ladnun

तस्स गव्वं विणासेमि। अहं बीसमोहिणी इराणनरिंदपुत्ती अम्हि, मज्झ चरणेसु महापुरिसा वि निवडंति, तया सो तुम्हाणं निवारगो को?'' सिकंदरस्स गुरुणं उवरि अवियला सद्धा, आयरो सम्माणो य अपुव्वो, तह वि तीए रूवासत्तो सो गुरुकयनियतिरक्कारवुत्तंतं सव्वं कहेइ।

तस्स मुहाओ गुरुकयनारीविसयावमाणं सोच्चा कोहेणं अईव पयंडा रोद्दसरूवा संजाया। सा तं पइ वएइ——''हे कुमार! तुम्ह गुरुणा समत्तत्थीणं सुंदेरस्स सत्तीए साहसस्स य अवमाणं कयं, तेण अज्जाहं पइण्णं करोमि——'कल्ले तुम्हाण गुरुं अहं रूवेण सत्तीए साहसेण य मम पायपडणसीलं न काहं, तया अलं मे जीविएणं।' मम नयणबाणपुरओ तस्स वयस्स नाणस्स अणुभवस्स य का गणणा!''

सिकंदरो वएइ——''सो मम गुरु सव्वपोग्गलियसुहाओ परं वट्टइ, सएव अज्झप्पचिंतणपरो धम्मत्थसलिहणतल्लिच्छो कालं गमेइ। तं कावि रूववई सुंदरी चालिउं असमत्था।'' तया सा रमणी वएइ——''सो वि किं मणूसो न सिया? तस्स हिंययं किं न? हियए किं विसउम्मीओ न जायंति? कया वि तस्स मयप्पायं हिययं होज्जा; तहवि अहं तस्स हिययं सरेण रूवेण नयणकडक्खेहिं य सजीवियं सोम्मायं अवस्सं करिस्सं'' ति कहित्ता नियकज्जकरणपरा जाया। सिकंदरो वि तीए साहसकम्मं दट्ठुं इच्छंतो नियट्ठाणे समागओ।

बीयदिणंमि पच्चूसकाले तस्स गुरु धम्मसत्थत्थचिंतणिक्कपरो वट्टइ, तया सा सुंदरी अच्चब्भुयवेसधारिणी तस्स उज्जाणे समागंतूण महुरसरेण गाएइ, तीए गानसवणे पसुपक्खिणो वि खणमेत्तं मूढा जाया। तस्स गुरु वि सत्थत्थाइं चितमाणो तीए महुरज्झुणीए अक्खित्तो समाणो तग्गीसवणेण आकड्ढियचित्तो खणंमि वामूढो संजाओ, तस्स य गत्ताइं सिढिलीभूयाइं, चित्तं पि संखुद्धं जायं। मणसा चिंतेइ——'का एसा गाएइ' त्ति निरूवणत्थं वायायणे ठाऊण बाहिरं पासेइ, तया उग्घाडियमत्थयं नियंबयावलंबमाणदीहकेसिं गयगामिणिं मंदं मंदं संचरमाणिं अच्छरगणाणं पि रूवेण पराभवंति दिव्वसरेण गायंति रमणिज्जरूवं रमणिं पासित्ता जराजज्जरिअदेही वि जायतिव्वकामाहिलासो मूढमणो सो उज्जाणमज्झे गच्छइ। तत्थ गंतूण तीए रूवसोहं दट्ठूण मयणानलदद्धो सो सुंदरीखंधे हत्थं ठवेइ, सा वि तं पासित्ता चित्तखोहेण हिट्ठम्मि पासेइ। तया सो कहेइ——'अहं तुमं कामेमि, मए सह कामभोगाइं भुंजसु।'

सा वि रमणी ईसिं विहसिअ लज्जं धरंती वएइ——'जइ मम पइण्णं पूरसु, तया अहं अहोनिसं तुमं सेविस्सामि।' तीए रूवविमोहिओ स पुच्छइ——'का तुम्ह पइण्णा?' सा कहेइ——''जइ तुम्हे तुरंगीभूअ चिट्ठेह, घोडगीभूअं तुम्हाणमुवरि उववेसित्ताणं हत्थे कसं धरित्ता वाहेमि तया जावज्जीवं तुम्ह आणाए वट्टिस्सं।'' सो एवं सोच्चा तिव्वरागपासबद्धो तुरंगीभूओ। जया सा तुरंगीभूअं तं आरोहित्ता वाहेइ, तया तीए सण्णापेरिओ सो सिकंदरो तत्थागंतूण तयवत्थं गुरुं पासेइ। सा वि सुंदरी सिकन्दरं दट्ठूणं कहेइ——''दिट्ठं मज्झ माहप्पं। मम पुरओ सत्तिमंत्ता वि पुरिसा तणायंति।'' विम्हरियगुरुसिणेहो सो सिकंदरो वि पुव्वुत्तं गुरुवायं——''जे इत्थीओ नरगदुवारसमाओ इच्चाइं सुणावित्ता तुम्हाणमुवएसो कत्थ गओ?'' त्ति उवहसेइ।

तया गुरु नायपरमट्ठो सिकंदरं कहेइ——''तं हे वच्छ! तुं मोहाओ खलियं मं दट्ठूणं हसेसि, परं तु तुमंसि मए दिण्णं णाणं वियारियं सिया, हिययंमि सुटठुत्तणेण धरियं होज्जा, तया एवं न उवहसेज्जा। किं च वियारेसु तुं ''जइ एसा रमणी मारिसं बुद्धं धीरं गंभीरं सया नाणज्झाणासत्तं पि एरिसिं अवत्थं काउं समत्था, तया जुव्वणुम्मत्तस्स तुम्ह किं न करिस्सइ? रूवमत्ता एसा सुंदरी किंकरीभूए अम्हे 'मए मइसामत्थेण केरिसं कयं' ति उवहसेइ। एयाए सुंदरीए अग्गओ अम्हे दुण्णि वि मुरुक्ख'' त्ति कहित्ता सो गुरु नियावासे गंतूण पुव्वं पिव झाणमग्गो जाओ। तया सो सिकंदरो सा वि सुंदरी वियारिंति——'एसो किल धीरो गंभीरो तत्तण्णू महापुरिसो अत्थि, एयाण पुरओ अम्हे अवुहा बालग च्चिय' त्ति।

## 2. रमणी से पराजित सिकन्दर की कथा

**अनुवाद**——दो हजार वर्ष पूर्व ग्रीस देश में साहसिक तथा महान् शूरवीर सिकन्दर नाम का महाराजा था। बालकपन से ही राजनीति में विचक्षण सन्मार्ग दिखाने वाला एरिस्टोटल (अरस्तू) नाम का——असाधारण श्रेष्ठ विद्वान् गुरु था। सिकन्दर सदा गुरुसेवा में तत्पर तथा गुरु आज्ञा में रहता हुआ यौवनकाल में भी कामभोग की अभिलाषा को छोड़कर तथा दूसरों की पत्नियों पर भी दृष्टि न रखता हुआ, केवल यश–कीर्ति और विजय की इच्छा रखता हुआ गुरु के प्रभाव से अनेक देशों पर

Jain Vishva Bharati Institute (Deemed University), Ladnun

विजय प्राप्त कर लेता है। विश्वप्रसिद्ध वह (सिकन्दर) एक बार सभी दिशाओं में विजय प्राप्त करने की इच्छा करता हुआ बलशाली सेना से (या अत्यधिक) युक्त होकर गुरु के साथ अपने नगर से निकला।

मार्ग में भूख–प्यास और परिश्रम की उपेक्षा करता हुआ प्रबल उत्साह से असह्य राजाओं को जीतता हुआ क्रमशः ईरान देश में पहुंचता है, वहां किसी महानगर से बाहर शिविर को स्थापित कर स्वयं उद्यान के मध्य में भव्य प्रासाद में ठहर जाता है। एक बार घोड़े पर चढ़कर वह पर्वत के शिखरों से सुशोभित अनेक प्रदेशों के सुन्दरता को देखता हुआ आगे जाता हुआ——अपने रूप से जिसने देवाँनाओं को भी जीत लिया है तथा महर्षियों के भी चित्त में क्षोभ उत्पन्न करने वाली एक सुन्दरी को देखता है। वह अद्‌भुत रूप वाली सुन्दरी स्नेहयुक्त आंखों के कटाक्ष से ताड़ित कर काम–वासना रूपी विष से मूर्च्छित कर देती थी।

वह भी कामरूपी ग्रह से ग्रसित होकर उसी को ही देखता हुआ बलवान होता हुआ भी विमूढमन वाला आगे जाने के लिए असमर्थ होकर वहीं पर ही निश्चल होकर खड़ा रह गया। वह लड़की (युवती) भी मोहित होकर अपने स्थान पर चली गई।

समीपवर्ती गुरु ने उसकी सारी चेष्टाएं देख लीं। वह राजा भी गुरु को देखकर क्षुभित चित्त वाला पुनः सावधान चित्त वाला हो गया।

एक बार अपने बलशाली सेनाओं के बीच उपस्थित हो वह सिकन्दर मंत्री सेनापति तथा प्रमुख सुभटों के आगे अपने पराक्रम की बातें कहता है, उसी समय उसका गुरु वहां आकर सभा के समक्ष उसकी अवहेलना करता है——कि विजय के रसिक पुरुषों को स्त्री के रूप को देखना भी भयंकर है क्योंकि देखने मात्र से वीर्य (शक्ति) का हरण कर लेती हो, हलाहल अर्थात् विष के समान कार्य करती हो। वीरपुरुषों तथा राजाओं के लिए नरक के द्वार के समान वह शास्त्रों में मानी गयी है। उनकी सुन्दरता भी विषम विष के समान महान् भय को उत्पन्न करने वाली होती है। इस प्रकार अवहेलना करके अपने वासस्थान में चला गया।

वह महान् राजा बचपन के गुरु के उपकार को स्मरण करता हुआ सभा के समक्ष इस प्रकार निन्दित और गर्हित होने पर भी मौनपूर्वक नीचे दृष्टि कर सब सह लेता है। किंतु मन में अत्यन्त दुःखी वह विविध प्रकार के चिंतन करता हुआ कुछ समय वहां ठहरकर सभा को विसर्जित कर अपने प्रासाद में आ गया। वहां भी क्षणभर दृष्ट सुन्दरी की सुन्दरता को क्षणभर अपनी निर्बलता को तथा क्षणभर गुरु की दृढ़ता को विचारता हुआ ऐसा निर्णय करता है——कभी भी उस रमणी का मुंह नहीं देखूंगा इस प्रकार अपने चित्त में स्थिर कर लेता है। फिर भी अनादिकाल के मोह के कारण तथा इन्द्रियों के प्रबलता से निर्बल उसके चित्त में वही स्त्री आ जाती है।

तब वह उसी स्त्री के रूप को याद करता हुआ अपने कार्य को भूलकर अचानक अपने अश्वरत्न पर आरूढ़ होकर उस सुन्दरी के घर में चला गया। वह भी सिकन्दर को देखकर अत्यन्त प्रसन्न मन वाली उसका सत्कार करती है, सम्मान करती है। तब वह गुरु के वचन को याद करता हुआ सोचता है——हा! मो क्या कर रहा हूं? अपने राज्य से संसार को जीतने की पिपासा से निकला था और इस सुन्दरी से पराजित हो गया, मेरा सबकुछ नष्ट हो गया, लोग भी मुझे क्या कहेंगे? इससे दूर ही रहना ठीक है। ऐसा विचार कर वापस जाने लगता है।

तब वह सुन्दरी इंगित और आकार से उसके मनोभाव को जानकर कहती है——वापस क्यों जाते हो? यहां आने के लिए आपको कौन रोकता है? मुझे सत्य कहो, मो अपने रूप, बुद्धि तथा कला की संपदा से महर्षियों के भी चित्त को क्षुभित (विचलित) करने में समर्थ हूं। मेरे आगे बेचारा वह कौन है। क्षण भर में ही उसके गर्व को नाश कर दूंगी। मो विश्वमोहिनी ईरान के राजा की पुत्री हूं, मेरे चरणों में महापुरुष भी गिरते हो, तब वह तुमको रोकने वाला कौन है? सिकन्दर का गुरु के ऊपर अविकल श्रद्धा, आदर और सम्मान का भाव अपूर्व था फिर भी उसके रूप में आसक्त वह गुरु के द्वारा कृत अपने तिरस्कार के वृतान्त को पूर्णतया कह देता है।

उसके मुंह से गुरु के द्वारा किये गये नारी के अपमान को सुनकर क्रोध से अत्यधिक प्रचण्ड रौद्र रूप वाली (चण्डी के समान) हो गई। वह उसे कहने लगी——हे कुमार! तुम्हारे गुरु ने समस्त स्त्रियों के सुन्दरता की शक्ति का तथा साहस का अपमान किया है, अतः आज मो प्रतिज्ञा करती हूं——कल मो तुम्हारे गुरु को अपने रूप की शक्ति और साहस से मेरे चरणों में नहीं गिरा लूं तो मो जीवित नहीं रहूंगी। मेरी आंखों रूपी बाण के सामने व्रत का, ज्ञान का और अनुभव का क्या महत्त्व है।

Jain Vishva Bharati Institute (Deemed University) Ladnun

सिकन्दर कहता है——वह मेरा गुरु सभी पौद्गलिक सुखों से परे है तथा हमेशा अध्यात्म चिन्तन तथा धर्मशास्त्रों के आस्वादन में लीन रहकर समय बीताते हो। उनको कोई भी रूपवती स्त्री विचलित करने में समर्थ नहीं है। तब वह स्त्री कहती है——वह भी क्या मनुष्य नहीं है? क्या उसके हृदय नहीं है? हृदय में कामरूपी ऊर्मियां नहीं उत्पन्न होती हो? कदाचित् उसका हृदय मृतप्रायः हो जाये तथापि मो उसके हृदय को अपने रूप से तथा आंखों के कटाक्षों से जीवित तथा उन्मत्त अवश्य कर दूंगी। ऐसा कहकर वह अपने कार्य में लग गई। सिकन्दर भी उसके साहसयुक्त कार्य को देखने की इच्छा करता हुआ अपने स्थान पर आ गया।

दूसरे दिन प्रातःकाल उसका गुरु धर्मशास्त्रों के अर्थ का चिंतन करने में लगे हुए थे तब वह युवती अत्यधिक अद्भुत वेश को धारण कर उसके उद्यान में आकर मधुर स्वर से गाती है, उसके गीत के श्रवण से पशु–पक्षी भी क्षणभर के लिए मूढ़ हो गये। उसका गुरु भी शास्त्रों का अर्थ को चिंतन करता हुआ उसके मधुर ध्वनि से आकर्षित होता हुआ उसके गीत को सुनने के लिए आकर्षित चित्त वाला होकर क्षणभर में आमूढ़ हो गया। उसका शरीर शिथिल हो गया, चित्त भी विचलित हो गया। मन में सोचता है——यह कौन गा रही है, देखने के लिए खिड़की में ठहरकर बाहर देखता है, तब माथा उघाड़कर नितम्ब तक लटकते हुए लम्बे बालों वाली, हाथी के समान, धीरे–धीरे चलती हुई, अप्सराओं को भी रूप से पराजित करने वाली, दिव्य स्वर से गाती हुई, रमणीय रूपवाली रमणी को देखकर बुढ़ापे से जर्जरित शरीर वाला भी तीव्र कामभोगों की अभिलाषा जिसमें उत्पन्न हो गयी है, वैसा वह मूढ मन वाला उद्यान में जाता है। वहां जाकर उसके रूप की शोभा देखकर कामदेव रूपी अग्नि से दग्ध वह सुन्दरी के कंधे पर हाथ रखता है, वह भी उसको देखकर चित्त में क्षोभ होने से नीचे देखने लगती है। तब वह कहता है——मो तुमको चाहता हूं, मेरे साथ कामभोगों को भोगो।

वह रमणी थोड़ा–सा हंसती हुई लज्जित होते हुए कहती है——यदि मेरी प्रतिज्ञा पूरी करोगे तब मो दिन–रात तुम्हारी सेवा करूंगी। उसके रूप से विमोहित वह पूछता है——तुम्हारी प्रतिज्ञा क्या है? वह कहती है——यदि तुम घोड़े हो जाओ और घोड़े बने हुए आपके ऊपर बैठकर हाथ में चाबुक लेकर हाकूंगी तब जीवनभर तुम्हारी आज्ञा में रहूंगी। वह ऐसा सुनकर अति राग रूपी पास में बंधा हुआ घोड़ा बन जाता है। जब वह घोड़े बने हुए उसके ऊपर चढ़कर हांकती है, तब उसके इशारे से वह सिकन्दर वहां आकर गुरु को उस अवस्था में देखता है। वह सुन्दरी भी सिकन्दर को देखकर कहती है——देखा मेरे प्रभाव को। मेरे आगे शक्तिमान पुरुष भी तृण के समान हो जाते हो। गुरु के स्नेह को भूलकर वह सिकन्दर भी पूर्व में कहे गये गुरु के वचन को कहता है जो स्त्री नरक के द्वार के समान है इत्यादि सुनाया था वह आपका उपदेश कहां गया? ऐसा कहकर उपहास करता है।

तब गुरु वास्तविकता को जानकर सिकन्दर को कहता है——हे वत्स! तुम मोह से स्खलित मुझको देखकर हंसते हो, किंतु यदि तुम मेरे द्वारा दिये गये ज्ञान का विचार किये होते, तो हृदय में अच्छी तरह धारण किये होते तब ऐसा उपहास नहीं करते।

थोड़ा विचार करो——यदि यह स्त्री मेरे जैसे बुद्ध गंभीर धीर तथा सर्वदा ज्ञान ध्यान में लगे हुए को भी ऐसी अवस्था करने में समर्थ हो गई, तब यौवन से उन्मत्त तुमको क्या नहीं कर देगी? रूपवती यह स्त्री दास बने हुए हमको ''मुझको बुद्धि की सामर्थ्य से कैसा कर दिया'' ऐसा उपहास करते हो। इस सुन्दरी के आगे हम दोनों ही मूर्ख हो गये ऐसा कहकर वह गुरु अपने आवास स्थल पर जाकर पूर्व की तरह ध्यानमग्न हो गये। तब वह सिकन्दर और वह सुन्दरी विचार करते हो——यह निश्चित ही धीर, गंभीर, तत्त्वज्ञ और महान् पुरुष हो, इनके सामने हम अबोध बालक ही हो।

**कठिन शब्दों के अर्थ**

दुसहस्सवासाओ——दो हजार वर्ष
गीसविसए——यूनान देश में
एरिस्टोटलो——अरस्तू (यूनान का एक महान् दार्शनिक)
विजय कंखिरो——विजय का आकांक्षी
अहेसि——था
कासी——कर ली
निग्गओ——निकला
काऊं——करने के लिए
खुहा——भूख
काओ——किया, बनाया

Jain Vishva Bharati Institute (Deemed University), Ladnun

ठविअं——रखकर
अगणंतो——न मानकर
ताडित्ता——मारकर, त्रस्त कर
निच्चतो——निश्चल
समीववट्टि——समीपवर्ती
जायक्खोहो——क्षुब्ध होकर
निक्खिआ——देखा
अवहेलेइ——अपमान करता है।
अणेइरे——हरण कर लेता है।
काऊण——करके
अच्चंतदुमिओ——अत्यन्त दुःखी
दढिमं——दृढ़ता से
थिरीकरइ——स्थिर किया
खणं——क्षणभर
अणाइकालमोहभासेण——अनादिकालीन मोह के अभ्यास से।
चिय——निश्चित
वियारित्ता——विचार करके
मयप्पायं——मृतप्राय
करहं——कर लूं
वएइ——बोला
वट्टइ——है
महुरसरेण——मधुर स्वर से
अक्खित्तो——आकृष्ट
वामूढ़ो——मोहित
ईसि——कुछ–कुछ
पूरउ——पूरा करो
नायपरमट्ठो——परमार्थ को जानकर
सुट्टुत्तणेण——ठीक से, भलीभांति
मए——मेरा
तत्तण्णू——तत्त्वज्ञ
किंकरीभूए——सेवक बनकर
च्चिय——निश्चित
दिण्णं——दिया।

**(1) वस्तुनिष्ठ प्रश्न**

(क) सिकन्दर के गुरु का नाम ..... था।
(ख) सिकन्दर ..... महाराजा था।
(ग) सुन्दरी ..... देश की थी।
(घ) सो मम ..... सव्वपोग्गलियसुहाओ परे वट्टइ।
(ङ) प्रातःकाल सिकन्दर का गुरु ..... में लगा हुआ था।

**(2) निबन्धात्मक प्रश्न**

(1) प्रस्तुत पाठ से क्या शिक्षा मिलती है लिखें।
(2) सिकन्दर के गुरु के चरित्र पर प्रकाश डालिए।
(3) सिकन्दर के गुरु ने उसे क्या शिक्षा दी थी, लिखते हुए, उसके महत्त्व पर प्रकाश डालें।

## 3. विउसीए पुत्तबहुए कहाणगं

**कालो गओ जो धम्मम्मि सो णेओ सहलो च्चिअ।**
**निप्फलो सयलो सेसो बहू एत्थ निदंसणं।।**

कम्मि नयरे लच्छीदासो सेट्ठी वरीवट्टइ। सो बहुधणसंपत्तीए गव्विट्ठोआसि। भोगविलासेसु एव लग्गो कयावि धम्मं ण कुणेइ। तस्स पुत्तो वि एयारिसो अत्थि। जोव्वणे पिउणा धम्मिअस्स धम्मदसस्स जहत्थनामाए सीलवईए कन्नाए सह पाणिग्गहणं पुत्तस्स कारावियं। सा कन्ना जया अट्ठवासा जाया, तया तीए पिउपेरणाए साहुणीसगासाओ सव्वण्णधम्मसवणेण सम्मत्तं अणुव्वयाइं, य गहीयाइं, सव्वण्णधम्मे अईव निउणा संजाआ।

जया सा ससुरगेहे आगया तया ससुराइं धम्माओ विमुहं दट्ठूण तीए बहुदुहं संजायं। कहं मम नियवयस्स निव्वाहो होज्जा? कहं वा देवगुरुविमुहाणं ससुराईणं धम्मोवएसो भवेज्जा, एवं सा वियाहेइ।

एगया 'संसारो असारो, लच्छी वि असारा, देहोवि विणस्सरो, एगो धम्मो च्चिय परलोगवन्नाणं जीवाणमाहारु' त्ति उपएसदाणेण नियभत्ता सव्वण्णधम्मेण वासिओ कओ। एवं सासूमवि कालंतरे बोहेइ। ससुरं पडिबोहिउं सा समयं मग्गेइ।

एगया तीए घरे समणगुणगणालंकिओ महव्वई नाणी जोव्वणत्थो एगो साहू भिक्खत्थं समागओ। जोव्वणे वि गहीयवयं संतं दंतं साहूं घरंमि आगयं दटठूणं आहारे विज्जमाणं वि तीए वियारियं——'जोव्वणे महव्वयं महादुल्लहं, कहं एएण एयंमि जोव्वणत्तणे गहीयं?'' ति परिक्खत्थं समस्साए पुट्ठं——'अहुणा समओ न संजाओ, किं पुव्वं निग्गया?' तीए हिययगयभावं नाऊण साहूणा उत्तं——''समयनाणं——कया मच्चू होस्सइ त्ति नत्थि नाणं, तेण समयं विणा निग्गओ।'' सा उत्तरं नाऊण

Jain Vishva Bharati Institute (Deemed University), Ladnun

तुट्ठा। मुणिणा वि सा पुट्ठा——'कइ वरिसा तुम्ह संजाया?' मुणिस्स पुच्छाभावं नाऊण वीसवासेसु जाएसु वि तीए 'बारसवास' त्ति उत्तं। पुणरवि 'ते सामिस्स कइ वासा जात' त्ति? पुट्ठं। तीए पियस्स पणवीसवासेसु जाएसु वि पंचवासा उत्ता, एवं सासूए 'छम्मासा' कहिया। ससुरस्स पुच्छाए सो 'अहुणा न उप्पण्णो अत्थि' ति भणिआ।

एवं बहू–साहूणं वट्टा अंतट्ठिएण ससुरेण सुआ। लद्धभिक्खे साहुंमि गए सो अईव कोहाउलो संजाओ, जओ पुत्तबहु मं उद्दिस्स 'न जाउ' त्ति कहेइ। रुट्ठो सो पुत्तस्स कहणत्थं हट्टं गच्छइ। गच्छन्तं ससुरं सा वएइ——'भोत्तूणं हे ससुर! तुं गच्छसु।' ससुरो कहेइ——'जइ हं न जाओ म्हि, तया कहं भोयणं चव्वेमि——भक्खेमि' इअ कहिऊण हट्टे गओ। पुत्तस्स सव्वं वुत्तंतं कहेइ——'तव पत्ती दुरायारा असब्भवयणा अत्थि, अओ तं गिहाओ निक्कासय।'

सो पिउण्णा सह गेहे आगओ। बहुं पुच्छइ–'किं माउपिउणो अवमाणं कयं? साहुणा सह वट्टा किं असच्चमुत्तरं दिण्णं?' तीए उत्तं——'तुम्हे मुणिं पुच्छह, सो सव्वं कहिहिइ।' ससुरो उवस्सए गंतूण सावमाणं मुणिं पुच्छइ——'हे मुणे, अज्ज मम गेहे भिक्खत्थं तुम्हे किं आगया?' मुणी कहेइ——'तुम्हाण घरं ण जाणामि, तुमं कुत्थ वससि?' सेट्ठी वियारेइ 'मुणी असच्चं कहेइ।' पुणरवि पुट्ठं——'कत्थ वि गेहे बालाए सह वट्टा कया किं?' मुणी कहेइ——'सा बाला अईव कुसला, तीए मम वि परिक्खा कया।' तीए हु वुत्तो——'समयं विणा कहं निग्गओ सि?' मए उत्तरं दिण्णं——''समयस्स–'मरणसमयस्स' नाणं नत्थि, तेण पुव्ववयम्मि निग्गओ म्हि।'' मए वि परिक्खत्थं सव्वेसिं ससुराईणं वासाइं पुट्ठाइं। तीए सम्मं कहियाइं। सेट्ठी पुच्छइ——'ससुरो न जाओ इअ तीए किं कहियं?' मुणिणा उत्तं——'सा चिय पुच्छिज्जउ, जओ विउसीए तीए जहत्थो भावो नज्जइ।'

ससुरो गेहं गच्चा पुत्तगहुं पुच्छइ–'तीए मुणिस्स पुरओ किमेवं वुत्तं——मे ससुरो जाओ वि न।' तीए उत्तं——''हे ससुर, धम्महीणमणुसस्स माणवभवो पत्तो वि अपत्तो एव, जओ सद्धम्मकिच्चेहिं सहलो भवो न कओ सो मणुसभवो निप्फलो चिय। तओ तुम्ह जीवणं पि धम्महीणं सव्वं गयं। तेण मए कहिअं——मम ससुरस्स उप्पत्ती एव न।'' एवं सच्चत्थाणे तुट्ठो धम्माभिमुहो जाओ। पुणरवि पुट्ठं——'तुमए सासूए छम्मासा कहं कहिआ?' तीए उत्तं——'सासुं पुच्छह।' सेट्ठिणा सा पुट्ठा। ताए वि कहिअं——''पुत्तवहूण वयणं सच्चं, जओ मम सव्वण्णुधम्मपत्तीए छम्मासा एव जाया, जओ इओ छम्मासाओ पुव्वं कत्थ वि मरणपसंगे अहं गया। तत्थ थीणं विविहगुणदोसवट्टा जाया।''

एगाए वुड्ढाए उत्तं——'नारीण मज्झे इमीए पुत्तवहू सेट्ठा। जोव्वणवए वि सासूभत्तिपरा धम्मकज्जम्मि स एव अपमत्ता, गिहकज्जेसु वि कुसला नन्ना एरिसा। इमीए सासू निब्भग्गा, एरिसीए भत्तिवच्छलाए पुत्तबहूए वि धम्मकज्जे पेरिज्जमाणावि धम्मं न कुणेइ, इमं सोऊण बहुगुणरंजिआ तीए मुहाओ धम्मो पत्तो। धम्मपत्तीए छम्मासाा जाया, तओ पुत्तवहूए छम्मासा कहिआ, तं जुत्तं।''

पुत्तो वि पुट्ठो, तेण वि उत्तं——''रत्तीए समयधम्मोवएसपराए भज्जाए संसारासादंसणेण भोगविलासाणं च परिणामदुहदाइत्तणेण वासाईपूरतुल्लजुव्वणत्तणेण य देहस्स खणभंगुरत्तणेण जयम्मि धम्मो एव सारु त्ति उवदिट्ठो हं सव्वण्णुधम्माराहगो जाओ, अज्ज पंचवासा जाया। तओ वहूए मं उद्दिस्स पंचवासा कहिआ, तं सच्चं।'' एवं कुडुंबस्स धम्मपत्तीए वट्टाए विउसीए य पुत्तवहूए जहत्थवयणं सोऊण लच्छीदासो वि पडिबुद्धो वुड्ढत्तणे वि धम्मं आराहिअ सग्गइं पत्तो सपरिवारो।

उवएसो——

**सीलवईअ दिट्ठंतं ससुराइविवोहगं।**
**सोच्चा धम्मेण अप्पाणं वासिअं कुण सव्वया।।**

## 3. विदुषी पुत्रवधू की कहानी

**अनुवाद**——जो काल धर्म में बीता वही सफल है, शेष सभी समय निष्फल है। बहु का यह निदर्शन जानना चाहिए।

किसी नगर में लक्ष्मीदास नाम का सेठ रहता था। वह बहुत अधिक धन–सम्पत्ति के कारण अहंकारी हो गया था। निरन्तर भोग–विलास में आसक्त रहने के कारण वह कभी धर्मकार्य नहीं करता था। उसका पुत्र भी ऐसा ही था। जब वह युवावस्था को प्राप्त हुआ, तब उसके पिता ने धर्मदास नाम के एक धार्मात्मा की शीलवती नाम की पुत्री के साथ उसका विवाह करा दिया। वह कन्या जब आठ वर्ष की थी, तभी उसने अपने पिता की प्रेरणा से एक साध्वी के पास सर्वज्ञ–धर्म का श्रवण कर विधिपूर्वक अणुव्रतों को धारण कर लिया था और इस प्रकार वह सर्वज्ञ–धर्म में बहुत ही निपुण हो गई थी।

Jain Vishva Bharati Institute (Deemed University), Ladnun

जब वह ससुराल आई तब ससुर आदि को धर्म से विमुख देखकर अतीव दुःख हुई। यहां मेरे व्रत का निर्वाह कैसे होगा? देव एवं गुरु से विमुख ससुर आदि के लिए धर्मोपदेश कैसे दिया जाए, ऐसा वह विचार करने लगी। एक बार संसार असार है, लक्ष्मी भी सारविहीन है, यह देह भी विनाशशील है, केवल एक धर्म ही है, जो मिथ्यात्व से परलोक सुधारने की इच्छा रखने वाले जीवों के लिए श्रेष्ठ आधार है, इस प्रकार का उपदेश देकर उसने अपने पति को सर्वज्ञ–धर्म से वासित कर लिया। इसी प्रकार किसी समय सास को भी प्रतिबोधित कर लिया तथा ससुर को प्रतिबोधित करने के लिए अवसर की खोज में रहने लगी।

एक बार उसके घर में श्रमण के गुणों से अलंकृत, महाव्रती और ज्ञानी यौवन में स्थित एक साधु भिक्षा के लिए आया। युवावस्था में भी व्रतों को धारण कर लेने वाले, शान्त एवं दान्त साधु को घर में आया देखकर आहार के रहने पर भी उसने विचार किया——यौवन में महाव्रत को स्वीकार करना महान् दुर्लभ है, कैसे इसने इस यौवनावस्था में ग्रहण कर लिया? परीक्षा करने के लिए समस्या के रूप में साधु से पूछा——अभी समय नहीं हुआ, फिर पहले कैसे निकल गये? उसके हृदयगत भाव को जानकर साधु ने कहा——''समय ही ज्ञान है, कब मृत्यु हो जाये ऐसा ज्ञान नहीं होता, अतः समय के बिना ही निकल गया।'' वह वधू उत्तर सुनकर संतुष्ट हो गई। मुनि ने भी उसे पूछा——तुम कितने वर्षों की हो गई? मुनि के पूछने के भाव को जानकर बीस वर्ष के होने पर भी उसने कहा——बारह वर्ष की हूं। पुनः साधु ने उससे पूछा——तुम्हारा पति कितने वर्ष का है? पति के पच्चीस वर्ष के होने पर भी पांच वर्ष का है, कहा, इसी प्रकार सास को छः महीने का बताया। ससुर के बारे में पूछने पर कहा——वह अभी उत्पन्न ही नहीं हुए हो।

इस प्रकार बहू और साधु के वार्तालाप को ससुर ने भीतर से सुन लिया। भिक्षा प्राप्त कर जब साधु चला गया तब वह (ससुर) अत्यधिक क्रोध से आकुल हो गया कि पुत्रवधू मुझे उत्पन्न नहीं हुआ ऐसा कहती है। रुष्ट होकर वह पुत्र को कहने के लिए दुकान जाने लगा। जाते हुए ससुर को वह कहती है——हे ससुर! भोजन करके जाना। ससुर कहता है——यदि मो जन्मा ही नहीं हूं तो कैसे भोजन चबाऊंगा तथा कैसे खाऊंगा, ऐसा कहकर दुकान में चला गया। जाकर पुत्र को सारी घटना कहता है——तुम्हारी पत्नी दुराचारिणी तथा असत्य वचन बोलने वाली है, अतः उसको घर से निकाल दो। वह पिता के साथ घर आ गया। बहू को पूछता है——क्यों माता–पिता का अपमान किया? साधु के साथ वार्तालाप में क्या असत्य उत्तर दिया? उसने कहा——तुम मुनि को ही पूछ लो, वह सब कुछ कह देगा। ससुर उपाश्रय में जाकर अपमान करता हुआ मुनि को पूछता है——हे मुनि! आज मेरे घर में भिक्षा लेने के लिए क्यों आए थे? मुनि कहता है——तुम्हारा घर नहीं जानता, तुम कहां रहते हो? सेठ सोचता है——मुनि असत्य कह रहा है। पुनः पूछता है——किसी घर में युवती के साथ वार्ता की थी? मुनि कहता है——वह युवती अति कुशल है, उसने मेरी भी परीक्षा की। उसने मुझसे पूछा——समय बिना कैसे निकले? मोने उत्तर दिया——समय का अर्थात् मरणकाल का ज्ञान नहीं है, अतः पूर्वदय (यौवनावस्था) में ही निकल गया हूं। मोने भी परीक्षा लेने के लिए ससुरादि के उम्र के बारे में पूछा। उसने सम्यक् उत्तर दिये। सेठ पूछता है——ससुर नहीं जन्मा है, ऐसा उत्तर उसने कैसे दिया। मुनि कहता है——उसी से ही पूछो, क्योंकि वह विदुषी है, यथार्थ के भाव को जानती है।

ससुर घर आकर पुत्रवधू से पूछता है——उस मुनि के सामने तुमने कहा कि मेरा ससुर जन्मा ही नहीं है। उसने उत्तर दिया——हे ससुर! धर्म से रहित मनुष्य, मनुष्य भव प्राप्त करके भी अप्राप्त के समान है, क्योंकि सधर्म कार्यों से भव को सफल नहीं किया, मनुष्य जन्म निष्फल ही हो गया। अतः आपका जीवन भी धर्म से रहित होकर पूर्ण चला गया इसलिए मोने कहा——मेरे ससुर का जन्म ही नहीं हुआ है। इस प्रकार सत्य अर्थ को सुनकर वह धर्माभिमुख हो गया।

पुनः पूछता है——तुमने सासु को छः महीने की ही कैसे कहा? उसने कहा——सासु से ही पूछ लीजिये। सेठ ने उससे पूछा तो सासु ने कहा कि पुत्रवधू के वचन सत्य हो, क्योंकि मुझे सर्वज्ञधर्म स्वीकार किये हुए छः महीने ही हुए हो अतः छः महीने के पूर्व के समय मेरे नष्ट हो गये।

उस नगर में जिस समय उस पुत्रवधू के विविध गुणों की चर्चा होने लगी तभी एक वृद्धा ने कहा था——नारियों में वही पुत्रवधू श्रेष्ठ है। यौवनावस्था में भी सास की भक्ति करती है और धर्मकार्यों में भी अप्रमत्त है। गृहकार्य में कुशल है। इसकी सासु भाग्यशील है, ऐसी भक्ति–वत्सल पुत्रवधू के द्वारा भी धर्मकार्य में प्रेरित किये जाने पर भी धर्म नहीं करती, यह सुनकर बहू के गुणो से प्रसन्न हो उसके समक्ष, धर्म को स्वीकार कर लिया। धर्म स्वीकार को छः महीने ही हुए हैं, अतः पुत्रवधू ने छः महीने का जो कहा वह युक्त है।



Jain Vishva Bharati Institute (Deemed University), Ladnun

पुत्र को पूछा, उसने कहा——रात्रि में सदैव धर्मोपदेश देने के क्रम में आपकी पुत्रवधू ने मुझे बताया कि यह संसार असार है। भोग–विलास का परिणाम दुःखदायी है, बरसाती नदी के समान यौवनावस्था से युक्त देह की क्षण–भंगुरता से उत्पन्न होने वाले दुःखों से ग्रस्त इस संसार में एकमात्र धर्म ही सहायक है। ऐसा उपदेश दिये जाने पर मो सर्वज्ञ–धर्म का अनुरागी हो गया। इसे स्वीकार किये मुझे पांच वर्ष हो गये अतः मेरी उम्र पांच वर्ष बताई वह सत्य है। इस प्रकार कुटुम्ब की धर्मप्राप्ति संबंधी वार्ता तथा विदुषी पुत्रवधू के यथार्थ वचनों को सुनकर लक्ष्मीदास प्रतिबुद्ध हो गया और वृद्धावस्था में भी धर्म–आराधनापूर्वक सम्पूर्ण परिवार सहित सद्गति को प्राप्त किया।

**उपदेश——**ससुरादि को प्रतिबोध देने वालो शीलवती के दृष्टान्त को सुनकर सर्वदा अपने को धर्म से भावित करो।

**कठिन शब्दों के अर्थ**

वरीवट्टइ——रहता था
गणिट्ठो——गर्विष्ठ
जहत्थनामाए——यथार्थ नामवाली
जया——जब
संतं दंतं——शान्त–दान्त
एएण——इसने
नाऊण——जानकर
मच्चू——मृत्यु
जीवाणमाहरु——जीवों का आधार
बोहेइ——समझाया
समणगुणगणालंकिओ——श्रमण–गुणसमूह से अलंकृत
होस्सइ——होगा
वट्टा——वार्ता
पुच्छिज्जउ——पूछें
गच्चा——(गत्वा) जाकर
थीणं——स्त्रियों के
परिणामदुहदाइत्तणेण——परिणाम में दुःखदायी होने से।
वियारेइ——विचार करती है।
नज्जइ——जाना जाता है।
वासाणईपूरतुल्लजुव्वणत्तणेण——बरसाती नदी की बाढ के समान युवावस्था से
जयम्मि——संसार में
जहत्थवयणं——यथार्थ वचन

**(1) वस्तुनिष्ठ प्रश्न**

(1) विदुषी पुत्रवधू के घर ..... आये।
(2) पुत्रवधू के पति की उम्र ..... था।
(3) सेठ अपने ..... के पास जाता है।
(4) यौवन में ..... महादुर्लभ है।
(5) .....का ज्ञान नहीं होता।

**(2) निबन्धात्मक प्रश्न**

(1) 'विदुषी पुत्रवधू–कथा' की नायिका का चरित्र नारी समाज के उत्थान के लिए एक अनुकरणीय आदर्श है। इस कथन की समीक्षा कीजिए।

(2) प्रस्तुत पाठ का सारांश अपनी भाषा में लिखें।

Jain Vishva Bharati Institute (Deemed University), Ladnun

## 4. कस्सेसा भज्जा

हत्थिणाउरे नयरे सूरनामा रायपुत्तो नाणागुणरयण–संजुत्तो वसइ। तस्स भारिया गंगाभिहाणा सीलाइगुणालंकिया परमसोहग्गसारा। सुमइनामा तेसिं धूया। सा कम्मपरिणामवसओ जणय–जणणी–भाया–माउलेहि पुढो पुढो वराणं दिन्ना।

चउरो वि ते वरा एगम्मि चेव दिणे परिणेउं आगया परोप्परं कलहं कुणन्ति। तओ तेसिं विसमे संगामे जायमाणे बहुजणक्खयं दटठूणं अग्गिम्मि पविट्ठा सुमइकन्ना। तीए समं निविडणेहेण एगो वरो वि पविट्ठो। एगो अट्ठीणि गंगप्पवाहे खिविउं गओ। एगो चिआरक्खं तत्थेव जलपूरे खिविऊण तद्दुक्खेणं मोहमहागह–गहिओ महीयले हिण्डइ। चउत्थो तत्थेव ठिओ तं ठाणं रक्खंतो पइदिणं एगमन्नपिंडं मुअंतो कालं गमेइ।

अह तइओ नरो महीयलं भमन्तो कत्थवि गामे रंधणघरम्मि भोअणं करावियऊण जिमिउं उवविट्ठो। तस्स घरसामिणी परिवेसइ। तया तीए लहुपुत्तो अईव रोइइ। तओ तीए रोसपरव्वसं गयाए सो बालो जलणम्मि खिविओ। सो वरो भोयणं कुणंतो उट्ठिउं लग्गो। सा भणइ——''अवच्चरूवाणि कस्स वि न अप्पियाणि होंति, जेसिं कए पिउणो। अणेगदेवयापूयादाणमंतजवाइं किं किं न कुणन्ति। तुमं सुहेण भोयणं करेहि। पच्छा वि एयं पुत्तं जीवइस्सामि।'' तओ सो वि भोयणं विहिऊण सिग्घं उट्ठिओ जाव ताव तीए नियघरमज्झाओ अमयरस–कुप्पयं आणिऊण जलणम्मि छडुक्खेवो कओ। वालो हसंतो निग्गओ। जणणीए उच्छंगे नीओ।

तओ सो वरो झायइ——''अहो अच्छरिअं! अहो अच्छरिअं! जं एवंविहजलणजलिओ वि जीविओ। जइ एसो अमरयसो मह हवइ ता अहमवि तं कन्नं जीवावेमि'' त्ति चिंतिऊण धुत्तत्तेण कूडवेसं काऊण रयणीए तत्थेव ठिओ। अवसरं लहिऊण तं अमयरसकूवयं गिण्हिऊण हत्थिणाउरे आगओ।

तेण पुण तीए जणयादिसमक्खं चिआमज्झे अमयरसो मुक्को। सा सुमइ कन्ना सालंकारा जीवंती उट्ठिया। तया तीए समं एगो वरो वि जीविओ। कम्मवसओ पुणो चउरो वि वरा एगओ मिलिआ। कन्नापाणिग्गहणत्थमन्नोन्नं विवायं कुणंता बालचंदरायमंदिरे गया। चउहिं वि कहिअं राइणो नियनियसरूवं राइणा मंतिणो भणिया जहा——''एयाणं विवायं भंजिऊण एगो वरो पमाणीकायव्वो।'' मंतिणो वि सव्वे परोप्परं वियारं कुणंति। न पुण केणावि विवाओ भज्जइ। जओ——

**आसन्ने रणरंगे मूढे मंते तहेव दुब्भिक्खे।**
**जस्स मुहं जोइज्जइ सो पुरिसो महियले विरलो।।**

तया एगेण मंतिया भणियं——''जइ मन्नह ता विवायं भज्जेमि।'' तेहिं जंपियं——''जो रायहंसव्व गुणदोसपरिक्खं काऊण पक्खवायरहिओ वायं भंजइ तस्स वयणं को न मन्नइ?'' तओ तेण भणियं——''जेण जीविया, सो जम्महेउत्तणेण पिया जाओ। जो सहजीविओ सो एगजम्मट्ठाणेण भाया। जो अट्ठीणि गंगामज्झम्मि खिविउं गओ सो पच्छापुण्णकरणेण पुत्तसमो जाओ। जेण पुण तं ठाणं रक्खियं, सो भत्ता।'' एवं मंतिण विवाए भग्गे, चउत्थेण वरेण कुरुचंदाभिहाणेण सा परिणीआ।

## 4. यह किसकी पत्नी

**अनुवाद**——हस्तिनापुर नगरी में शूर नाम का अनेक गुण–रत्नों से युक्त राजपुत्र रहता था। शील आदि गुणों से अलंकृत, श्रेष्ठ सौभाग्य की सारभूता गंगा नाम की उसकी पत्नी थी। सुमति नाम की उनकी बेटी थी। वह कर्म परिणामानुसार माता–पिता, भाई और मामा ने अलग–अलग वरों के साथ उसका सम्बन्ध कर दिया।

चारों ही वर एक ही दिन विवाह करने के लिए आ गये और परस्पर कलह करने लगे। तब उनके भयंकर संग्राम प्रारम्भ हो जाने पर बहुत लोगों की मृत्यु हो जाएगी ऐसा सोचकर वह सुमति अग्नि में प्रवेश कर जाती है। उसके साथ अति स्नेह के कारण एक वर भी अग्नि में प्रवेश कर जाता है। एक वर हड्डियों को गंगा में प्रवाहित करने के लिए चला गया। एक चिता की रक्षा करता हुआ वहीं पर जला  जलि देकर उसके दुःख से अत्यधिक मोहरूपी महाग्रह से ग्रसित होकर पृथ्वी पर घूमने लगा। चौथा वहीं पर रहकर उस स्थान की रक्षा करता हुआ प्रतिदिन एक अन्नपिण्ड देता हुआ समय व्यतीत करने लगा।

तीसरा वर पृथ्वीतल पर घूमता हुआ किसी ग्राम में, रसोईघर में भोजन करने बैठा। उस गृह की स्वामिनी भोजन परोसती

Jain Vishva Bharati Institute (Deemed University), Ladnun

है। तब उस स्त्री का छोटा पुत्र बहुत रोता है। तब वह क्रोध से पराभूत होकर उस बालक को अग्नि में फोक देती है। वह वर भोजन करता हुआ उठने लगा। वह कहती है——सन्तान किसी को भी अप्रिय नहीं होती, जिसके लिए माता–पिता अनेक देवों की पूजा, दान, मंत्र–जपादि क्या–क्या नहीं करते। तुम सुखपूर्वक भोजन करो। बाद में मो पुत्र को जीवित कर लूंगी। तब वह भोजन करके जल्दी उठ गया। वह स्त्री भी अपने घर में रखे हुए अमृत–रस की कुपी लाकर कुछ बूंदें अग्नि में डाल दी। बालक हंसता हुआ निकल गया। माता ने उसे गोद में ले लिया।

तब वह वर सोचता है——अहो आश्चर्य! जलती हुई अग्नि से भी यह कैसे जीवित निकल गया। यदि यह अमृत–रस मेरा हो जाए तो मो भी ''उस कन्या को जीवित कर लूंगा।'' ऐसा सोचकर कपटता से कपट वेश धारण कर रात में वहीं रह गया। अवसर प्राप्त कर उस अमृत–रस को लेकर हस्तिनापुर आ गया।

उसने सबके सामने अग्नि में अमृत-रस को डाला। वह सुमति कन्या अलंकारों सहित जीवित हो उठी। तब उसके साथ एक वर भी जीवित हो उठा। कर्मवश पुनः चारों ही वर मिल गये और कन्या के साथ विवाह करने के लिए लड़ाई करते हुए बालचन्द राजा के दरबार में गये। चारों ने ही राजा को अपनी-अपनी बात कही। राजा ने मंत्रियों से कहा-इनके विवाद को दूर कर एक वर को प्रमाणित कर दो। मंत्री भी परस्पर विचार करते हैं। लेकिन कोई भी विवाद दूर कर नहीं सकते, क्योंकि-

''पृथ्वीतल पर वह व्यक्ति विरल है जिसका मुंह युद्ध में, मूढ हो जाने पर मंत्रणा में तथा दुर्भिक्ष में देखा जाता है अर्थात् इन विषम परिस्थितियों में जो सही निर्णय देता है ऐसा व्यक्ति दुर्लभ है।''

तब एक मंत्री कहता है——यदि मेरी बात मानो तो मो विवाद को दूर कर दूंगा। उन्होंने कहा——जो राजहंस की भांति गुण–दोष की परीक्षा करके पक्षपात से रहित होकर बाद को समाप्त करेगा उसके बंधन को कौन नहीं मानेगा। तब उसने कहा——जिसने जीवित किया, वह जन्म के हेतु होने के कारण पिता हो गया। जो साथ में जीवित हुआ वह एक स्थान पर जन्म होने के कारण भाई हो गया। जो अस्थि को गंगा में प्रवाहित करने गया वह पश्चात् पुण्य क्रिया करने के कारण पुत्र समान हो गया। जिसने उस स्थान की रक्षा की वह पति है। इस प्रकार मंत्री ने विवाद को दूर किया। चौथा वर कुरुचन्द्र नामक राजकुमार के साथ उसका विवाह हो गया।

**कठिन शब्दों के अर्थ**

परमसोहग्गरसारा श्रेष्ठ——सौभाग्य की सारभूता
कम्मपरिणमवसओ——कर्मों के फल के कारण
पुढो——पृथक, अलग
परिणेउं——परिणय करने के लिए
निविडणेहेण——प्रगाढ़ स्नेह के कारण
दिन्ना——दे दी गई
अट्ठीणि——हड्डियों को
हिडंइ——भटकने लगा
एगमन्नपिंडं——अन्न के एक पिण्ड को
अवच्चरूवाणि——(अपत्यरूपानि) बच्चे
कए——लिए (कृते)
अमयरस–कुप्पयं——अमृतरस का घड़ा
खिविउं——डालने के लिए
चिआरक्खं——चता की राख
मुअन्तो——छोड़ता हुआ
नीआ——ले लिया
कन्नं——कन्या को

Jain Vishva Bharati Institute (Deemed University) Ladnun

धुत्तत्तेण——धूर्तता से
बालचन्दरायमन्दिरे——बालचन्द्र नामक राजा के दरबार में
पमाणीकायबो——प्रमाणित कीजिए
छडुक्खेवो——छिड़काव
उच्छंगे——गोद में
झायइ——विचार किया
एवंविहजलणजलिओ——इस प्रकार अग्नि में जला हुआ
कूडवेसं——कपटवेश
भंजिऊण——सुलझाकर
कुरुचंदाभिहाणेण——कुरुचन्द्र नामक राजकुमार के साथ
जोइज्जइ——देखा जाय
व्व (इव)——समान
पच्छापुण्णकरणेण——श्राद्ध–पुण्य करने से
भग्गे——सुलझने पर

**(1) वस्तुनिष्ठ प्रश्न**

(क) .....नगर में सूर नाम का राजा था।
(ख) सुमति कन्या का विवाह ..... वर से हुआ।
(ग) ..... वर अमृत–रस लेकर कन्या को जीवित करता है।
(घ) विषम परिस्थिति में जिसका मुख देखा जाता है वह ..... है।
(ङ) माता अपने छोटे पुत्र को ..... डाल देती है।

**(2) निबन्धात्मक प्रश्न**

(1) चारों वरों के पारस्परिक विवाद को किसने शान्त किया और कैसे, अपनी भाषा में लिखें।
(2) प्रस्तुत कथा के विकास में किस वर का योगदान महत्त्वपूर्ण है? सोदाहरण सिद्ध करें।
(3) 'कस्सेजा भज्जा' पाठ का सारांश अपनी शैली में लिखें।

## 5. ससुरगेहवासीणं चउजामायराणं कहा

कत्थ वि गामे नरिंदस्स रज्जसंतिकारगो पुरोहिओ आसि। तस्स एगो पुत्तो, पंच य कन्नगाओ संति। तेण चउरो कन्नगाओ विउसमाहण–पुत्ताणं परिणाविआओ। कयाई पंचमीकन्नगाए विवाहमहूसवो पारद्धो। विवाहे चउरो जामाउणो समागया। पुण्णे विवाहे जामायरेहिं विणा सव्वे संबंधिणो नियनियघरेसु गया। जामायरा भोयणलुद्धा गेहे गंतुं न इच्छंति। पुरोहिओ विआरेइ——'सासूए अईव पिया जामायरा, तेण अहुणा पंच छ दिणाइ एए चिट्ठंतु, पच्छा गच्छेज्जा।' ते जामायरा खज्जरसलुद्धा तओ गच्छिउं न इच्छेज्जा। परस्परं ते चिंतेइरे——'ससुर–गिहनिवासो सग्गतुल्लो नराणं' किल एसा सुत्ती सच्चा, एवं चिंतिऊणं एगाए भित्तीए एसा सुत्ती लिहिआ। एगया एयं सुत्ति ससुरेण वाइऊण चिंतिअं——''एए जामायरा खज्जरसलुद्धा कयावि न गच्छेज्जा, तओ एए बोहियव्वा'' एवं चिंतिऊण तस्स सिलोगपायस्स हिट्ठंमि पायत्तिमं लिहिअं——

**''जइ वसइ विवेगी पंच छव्वा दिणाइं।**
**दहिघयगुडलुद्धा मासमेगं वसेज्जा**
**स हवइ खरतुल्लो माणवो माणहीणो।।''**

तेहिं जामायरेंहिं पायत्तिगं वाइअं पि खज्जरसलुद्धत्तणेण तओ गंतु नेच्छंति। ससुरो वि चिंतेइ——'कहं एए



Jain Vishva Bharati Institute (Deemed University), Ladnun

नीसारिअव्वा? साउभोयणरया एए खरसमाणा माणहीणा संति, तेण जुत्तीए निक्कासणिज्जा।' पुरोहिओ नियं भज्जं पुच्छइ——'एएसिं जामाऊणं भोयणाय किं देसि?' सा कहेइ–'अइप्पियजामायराणं तिकालं दहि–घय–गुडमीसिअमन्नं पक्कन्नं च सएव देमि।' पुरोहिओ भज्जं कहेइ–'अज्जयणाओ आरब्भ तुमए जामायराणं वज्जकुडो थूलो रोट्टगो घयजुत्तो दायव्वो।'

पियस्स आणा अणइक्कमणीअ त्ति चिंतिऊण सा भोयणकाले ताणं थूलं रोट्टगं घयजुत्तं देइ। तं दट्ठूणं पढमो मणीरामो जामाया मित्ताणं कहेइ——''अहुणा एत्थ वसणं न जुत्तं, नियघरम्मि अओ साउभोयणं अत्थि, तओ इओ गमणं चिय सेयं। ससुरस्स पच्चूसे कहिऊण हं गमिस्सामि।'' ते कहिंति——''भो मित्त! विणा मुल्लं भोयणं कत्थ सिया, एयं वज्जकुडरोट्टगं साउं गणिऊण भोतव्वं जओ——'परन्नं दुल्लहं लोगे' इअ सुई तए किं न सुआ? तव इच्छा सिया तया गच्छसु, अम्हाणं ससुरो कहिही तया गमिस्सामो।'' एवं मित्ताणं वयणं सोच्चा पभाए ससुरस्स अग्गे गच्छित्ता सिक्खं आणं च मग्गेइ। ससुरो वि तं सिक्खं दाऊण 'पुणाणि आगच्छेज्जा' एवं कहिऊण किंचि अणुसरिऊण अणुण्णं देइ। एवं पढमो जामायरो 'वज्जकुडेण मणीरामो' निस्सरिओ।

पुणरवि भज्जं कहेइ——'अहुणा अज्जयणाओ जामायराणं तिलतेल्लेण जुत्तं रोट्टगं दिज्जा।' सा भोयणसमए जामायराणं तिलतेल्लजुत्त रोट्टगं देइ। तं दट्ठूण माहवो नाम जामायरो चितेइ——'घरंमि वि एयं लब्भइ, तओ इओ गमणं सुहं, मित्ताणं पि कहेइ–'हं कल्ले गमिस्सं, जओ भोयणे तेल्लं समागयं।' तया ते मित्ता कहिंति——''अम्हकेरा सासू विउसी अत्थि, तेण सीयलं तिलतेल्लं चिअ उयरग्गिदीवणेण सोहणं, न घयं, तेण तेल्लं देइ, अम्हे उ अत्थ ठास्सामो।'' तया माहवो नाम जामायरो ससुरपासे गच्चा सिक्खं अणुण्णं च मग्गेइ। तया ससुरो 'गच्छ गच्छ' त्ति अणुण्णं देइ, न सिक्खं। एवं 'तिलतेल्लेण माहवो' बीओ वि जामायरो गओ। तइअचउत्थ जामायरा न गच्छंति। 'कहं एए निक्कासणिज्जा' इअ चिंतित्ता लद्धुवाओ ससुरो भज्जं पुच्छेइ——'एए जामाउणो रत्तीए सयणाय कया आगच्छति?' तया पिया कहेइ——कयाइ रत्तीए पहरे गए आगच्छेज्जा, कया दुतिपहरे गए आगच्छंति।'

पुरोहिओ कहेइ——'अज्ज रत्तीए दारं न उग्घाडियव्वं, अहं जागरिस्सं।' ते दोण्णि जामायरा संझाए गामे विलसिउं गया, विविहकिलाओ कुणंता नट्टाइं च पासंता, मज्झरत्तीए गिहद्दारे समागया। पिहिअं दारं दट्ठूणं दारुग्घाडणाए उच्चसरेण अक्कोसंति–'दारं उग्घाडेसु' त्ति, तया दारसमीवे सयणत्थे पुरोहिओ जागरंतो कहेइ–'मज्झरत्ति जाव कत्थं तुम्हे थिआ? अहुणा न उग्घाडिस्सं, जत्थ उग्घाडिअद्दारं अत्थि, तत्थ गच्छेह' एवं कहिऊण मोणेण थिओ। तया ते दुण्णि समीवत्थियाए तुरंगसालाए गया। तत्थ आत्थरणाभावे अईवसीयबाहिया तुरंगमपिट्ठाच्छाइआवरणवत्थं गहिऊण भूमीए सुत्ता। तया विजयरामेण जामाउणा चिंतिअं–'एत्थं सावमाणं ठाउं न उइअं।' तओ सो मित्तं कहेइ–'हे मित्त! अम्हं सुहसज्जा का? इमं भूलोट्टणं च कत्थ? अओ इओ गमणं चिअ वरं।'स मित्तो बोल्लेइ–'एआरिसदुहे वि परन्नं कत्थ? अहं तु एत्थ ठाहिस्सं। तुमं गंतुमिच्छसि जइ, तया गच्छसु।' तओ सो पच्चूसे पुरोहियसमीवे गच्चा सिक्खं अणुण्णं च मग्गीअ। तया पुरोहिओ सुट्ठु त्ति कहेइ। एवं सो विजयरामो 'भूसज्जाए विजयरामो' वि निग्गओ।

अहुणा केवलं केसवो जामायरो तत्थ थिओ संतो गंतुं नेच्छइ। पुरोहिओ वि केसवजामाउणो निक्कासणतिं जुत्तिं विआरंइ। एगया नियपुत्तस्स कण्णे किंचि वि कहिऊण जया केसवजामायरो भोयणत्थं उवविट्ठिरे, पुरोहिअस्स य पुत्ते पुच्छइ–'वच्छ! एत्थ मए रुप्पगं मुत्तं, तं च केण गहिअं?' सो कहेइ–'अहं न जाणामि।' पुरोहिओ बोल्लेइ–'तुमए च्चिय गहिअं, हे असच्चवाइ! पाव! धिट्ठ! देहि ममं तं, अन्नहा तुमं मारइस्सं हं' ति कहिऊण सो उवाणहं गहिऊण मारिउं धाविओ। पुत्तो वि मुट्ठिं बंधिऊण पिउस्स सम्मुहं गओ। दोण्णि से जुज्झमाणे दट्ठूणं केसवो ताणं मज्झे गंतूण–'मा जुज्झह, मा जुज्झह' त्ति कहिऊण ठिओ। तया से पुरहिओ हे जामायर! 'अवसरसु अवसरसु' कहिऊण तं उवाणहेण पहरेइ। पुत्तो वि 'केसव! दूरीभव दूरीभव' कहिऊण मुट्ठीए तं केसवं पहरेइ। एवं पिउपुत्ता केसवं ताडिंति। तओ से तेहिं धक्कामुक्केण ताडिज्जमाणो सिग्घं भग्गो, एवं 'धक्कामुक्केण केसवो' सो अकहिऊण गओ।

तद्दिणे पुरोहिओ निवसहाए विलंबेण गओ। नंरिदो तं पुच्छइ–'किं विलंबेण तुमं आगओ सि।' सो कहेइ–''विवाहमहूसवे चउरो जामायरा समागया। ते उ भोयणरसलुद्धा चिरं ठिआवि गंतु न इच्छति। तओ जुत्तीए सव्वे निक्कासिआ ते एवं—

Jain Vishva Bharati Institute (Deemed University), Ladnun

**वज्जकुडेण मणीरामो, तिलतेल्लेण माहवो।**
**भूसेज्जाए विजयरामो, धक्कामुक्केण केसवो।।**

त्ति, सव्वो वुत्तंतों नरिंदस्स अग्गे कहिओ। नरिंदो वि तस्स बुद्धीए अईका तुट्ठो। उवएसो——

**जामायरचउक्कस्स सुणिऊण पराभवं।**
**ससुरस्स गिहावासे सम्माणं जाव संवसे।।**

## 5. ससुर के घर में रहने वाले चार दामादों की कथा

किसी गांव में राजा के राज्य में शांति करने वाला एक पुरोहित रहता था। उसके एक पुत्र तथा पांच पुत्रियां थीं। उसने चारों कन्याओं का विवाह विद्वान् ब्राह्मण–पुत्रों के साथ कर दिये। जब पांचवीं कन्या के विवाह का उत्सव प्रारम्भ हुआ, उस विवाह में चारों दामाद आये। विवाह के पूर्ण हो जाने पर चार दामादों को छोड़कर शेष सभी संबंधी अपने–अपने घर चले गये। भोजन के लोभी दामाद घर जाने की इच्छा नहीं करते। पुरोहित सोचता है——ये दामाद अपने सास के बहुत प्रिय हो, अतः अभी पांच–छह दिन और रुक सकते हो, बाद में चलें जाएंगे। किन्तु खाद्यरस के लालची वे दामाद जाना नहीं चाहते। परस्पर चिंतन करते हो'——''मनुष्यों के लिए ससुराल का निवास स्वर्ग के समान सुखदायी होता है। निश्चय ही यह सूक्ति सत्य है। ऐसा विचारकर उस सूक्ति को दीवार पर लिख दिया। अन्य किसी एक दिन उस सूक्ति को पढ़कर ससुर ने सोचा——हमारे ये दामाद मधुर खाद्यरस के लोभी हो, कभी नहीं जाएंगे अतः इन्हें बोध देना चाहिए। ऐसा चिन्तन कर उस सूक्ति (श्लोक पद) के नीचे तीन चरण और लिख दिए——

यदि विवेकी होता है तो पांच–छह दिन ही रहता है। दही, घी एवं गुड़ का लोभी व्यक्ति यदि एकाध महीना रह जाए तो वह निर्लज्ज मनुष्य गदहे के समान मानहीन हो जाता है।

चारों दामादों ने यद्यपि उन तीनों पंक्तियों को पढ़ लिया, तथापि खाने–पीने के लालची होने के कारण जाना नहीं चाहते। ससुर भी सोचता है——इन्हें कैसे निकाला जाए, क्योंकि स्वादिष्ट भोजन में रमे हुए ये गदहे के समान मानहीन हो, अतः इन्हें बुद्धिमानी से निकालना चाहिए।''

पुरोहित अपनी पत्नी से पूछता है——इन दामादों को भोजन में क्या देती हो? वह कहती है——दामाद अतिप्रिय हो, अतः तीनों समय दही–घी और गुड़ से युक्त भोजन और पकवान देती हूं। पुरोहित पत्नी से कहता है——आज से तुम दामादों को घी से युक्त बाजरे की मोटी रोटी देना।

प्रिय की आज्ञा अनुलंघनीय समझकर उसने उन्हें भोजन के समय घी से युक्त बाजरे की मोटी रोटी दी। उसे देखकर मणीराम नामक पहला दामाद मित्रों को कहता है——अब यहां रहना ठीक नहीं है, क्योंकि अपने घर में तो इससे भी स्वादिष्ट भोजन मिलता है। अतः यहां से जाना ही ठीक हैं ससुर से प्रातःकाल कहकर मो तो चला जाऊंगा। वे कहते हो——हे मित्र! बिना मूल्य के भोजन कहां मिलता है, इस बाजरे की रोटी को बहुत ही स्वादु है, ऐसा सोचकर खाना चाहिए, क्योंकि इस लोक में ''दूसरों का अन्न मिलना दुर्लभ है'', क्या इस सूक्ति को तुमने नहीं सुना है? यदि तुम्हारी इच्छा है तो जाओ, हमें तो जब ससुर कहेंगे तभी जाएंगे। इस प्रकार मित्रों के वचन को सुनकर प्रातः ससुर के आगे जाकर शिक्षा और आज्ञा मांगता है। ससुर भी उसे शिक्षा देकर पुनः आना ऐसा कहकर कुछ याद कर आज्ञा दे देता है। इस प्रकार प्रथम दामाद बाजरे की रोटी से मणीराम को निकाल दिया।

पुनः भार्या को कहता है——आज से दामादों को तिल के तेल से युक्त रोटी देना। वह भोजन के समय दामादों को तिल के तेल से युक्त रोटी देती है। उसे देखकर माधव नाम का दामाद सोचता है——घर में भी यह मिलता है, अतः यहां से जाना उचित है, मित्रों को भी कहता है——मो कल जाऊंगा, क्योंकि भोजन में तेल आ गया है। तब वे मित्र कहते हो——हमारी सास विदुषी है, शीत ऋतु में तिल का तेल ही जठराग्नि को दीप्त करने के लिए अच्छा है, न कि घी, अतः वह तेल देती है, हम तो यहां रहेंगे। तब माधव नाम का दामाद ससुर के पास जाकर शिक्षा और अनुज्ञा मांगी तो ससुर ने कहा जाओ–जाओ (जा–जा) ऐसा अनुज्ञा देता है, शिक्षा नहीं दी। इस प्रकार तिल के तेल से माधव नामक दूसरा दामाद भी चला गया। तीसरे और चौथे दामाद नहीं जाते। इन्हें कैसे निकाला जाए? इस प्रकार चिंतन कर उपाय प्राप्त कर ससुर अपनी पत्नी को पूछता है——ये

Jain Vishva Bharati Institute (Deemed University), Ladnun

दामाद रात्रि में सोने के लिए कब आते हो? तब प्रिया कहती है——कभी रात्रि के एक प्रहर बीत जाने पर और कभी दो प्रहर बीत जाने पर आते हो।

पुरोहित कहता है——आज रात्रि में द्वार नहीं खोलना, मो जागूंगा। वे दोनों दामाद संध्याकाल में गांव में विलास करने के लिए (मनोरंजन) गये, विविध प्रकार की क्रिड़ाएं करते हुए, नाटकादि देखते हुए मध्यरात्रि में घर के द्वार में आये। बन्द द्वार देखकर दरवाजा खुलवाने के लिए जोर–जोर से चिल्लाते हो——दरवाजा खोलो, तब दरवाजे के भीतर जागता हुआ पुरोहित कहता है——आधी रात के समय तुम कहां थे? अभी दरवाजा नहीं खोलूंगा, जहां का दरवाजा खुला हो, वहां जाओ। ऐसा कहकर मौन हो गया। तब वे दोनों समीप में स्थित घुड़साल में गये। वहां बिस्तर के अभाव में अति ठण्ड से पीड़ित होकर घोड़ों के पीठ पर डाले जाने वाले (टाटा) आवरण वस्त्र को ग्रहण कर (ओढ़कर) जमीन पर सो गये। तब बिजयराम दामाद सोचता है——यहां अपमान सहित रहना अच्छा नहीं है। तब वह मित्र से कहता है——हे मित्र! कहां हमारी सुखशय्या? और कहां यह भूमि में लोटना? अतः यहां से जाना ही अच्छा है। वह मित्र कहता है——इस प्रकार के दुःख में भी दूसरों का अन्न कहां? मो तो यहीं रहूंगा। यदि तुम जाना चाहते हो तो जाओ। तब वह प्रातः पुरोहित के समीप जाकर शिक्षा और आज्ञा मांगता है। तब पुरोहित अच्छा ऐसा कहता है। इस प्रकार वह बिजयराम ''भूमिशय्या से बिजयराम'' भी निकल गया।

अब केवल केशव नामक दामाद वहां स्थित होकर जाना नहीं चाहता। पुरोहित भी केशव दामाद को निकालने के लिए युक्ति का विचार करता है। एक बार अपने पुत्र के कान में कुछ कहकर केशव दामाद भोजन के लिए (उपस्थित) बैठता है, पुरोहित का पुत्र पास में बैठा था, तब पुरोहित पुत्र से पूछता है——हे वत्स! यहां मोने रुपये छोड़े थे, उसे किसने लिया? वह कहता है——मो नहीं जानता। पुरोहित कहता है——तुमने ही लिया है, हे असत्यवादी! पापी! धीठ! मुझको वह दो, अन्यथा मो तुमको मारूंगा। ऐसा कहकर वह जूता लेकर मारने दौड़ा। पुत्र भी मुट्ठी बांधकर पिता के सम्मुख गया। उन दोनों को लड़ते देखकर केशव उनके बीच में जाकर——मत लड़ो, मत लड़ो, ऐसा कहता है (ऐसा कहकर स्थित हो जाता है) तब वह पुरोहित हे दामाद! हटो–हटो कहकर उसे जूते से प्रहार करता है। पुत्र भी केशव! दूर हो जाओ, दूर हो जाओ, ऐसा कहकर मुट्ठी से उस केशव को प्रहार करता है। इस प्रकार पिता–पुत्र केशव को मारते हो। तब वह उनके धक्का–मुक्की से मार खाता हुआ शीघ्र भाग गया। इस प्रकार 'धक्का–मुक्की से केशव' बिना कहकर चला गया।

उस दिन पुरोहित राजसभा में विलम्ब से गया। राजा पूछता है——क्यों, तुम विलम्ब से आए हो? वह कहता है——विवाह के उत्सव में चारों दामाद आये थे। वे भोजन के रस के लोभी लम्बे काल तक रहने पर भी जाना नहीं चाहते थे। तब युक्ति से सबको निकाला, वे इस प्रकार है——

''बाजरे की रोटी से मनीराम, तिल के तेल से माधव।
भूमि शय्या से बिजयराम, धक्का–मुक्की से केशव।।''

इस प्रकार सभी वृतांत राजा के आगे कहता है। राजा भी उसकी बुद्धि से अति प्रसन्न हुआ।

**उपदेश——**चारों दामादों के अपमान को सुनकर ससुर के घर में जब तक सम्मान है, तभी तक रहना चाहिए।

**कठिन शब्दों के अर्थ**

कत्थ——कहीं, किसी
रज्जसंतिकारगो——राज्य में शांति करने वाला
पारद्धो——प्रारम्भ
खज्ज खाद्य
सग्गतुल्लो——स्वर्ग के तुल्य
हिट्ठमि——नीचे
पायत्तिगं——तीन पाद, चरण
वज्जकुडो——बाजरा
थूलो——मोटी
तिलतेल्लेण——तिल के तेल से
कल्ले——कल

Jain Vishva Bharati Institute (Deemed University), Ladnun

तुरगंपिट्ठच्छइ——घोड़े की पीठ पर डाला जाने वाला
दुतिपहरे——दो–तीन प्रहर
दोण्णि——दोनों
आत्थरणभावे——विस्तर के अभाव में
अम्हकेर——हमारा
उयग्गिदीवणेण——जठराग्नि के उद्दीपन से
उइअं——उचित
भूलोट्टणं——भूमि में लोटना
उवाणहेण——जूते से
अवसरसु——हट हट
संवसे——रहना चाहिए

**(1) वस्तुनिष्ठ प्रश्न**

(क) ते जामायरा ..... तओ गच्छिउं न इच्छेज्जा।
(ख) परुप्परं ते चिंतेइरे ..... नराणं।
(ग) .....मणीराम निकल गया।
(घ) भूलोट्टणेण ..... जमाया निक्कसिज्जइ।
(ङ) उस दिन ..... नृपसभा में विलम्ब से गया।

**(2) निबन्धात्मक प्रश्न**

(1) प्रस्तुत पाठ से क्या शिक्षा मिलती है।
(2) पुरोहित ने अपने दामादों के प्रति जो व्यवहार किया, आप उससे सहमत है अथवा असहमत, अपने विचार व्यक्त करें।
(3) क्या ससुराल में रहना उचित है। अपनी दृष्टि से प्रस्तुत करें।

## 6. सिप्पीपुत्तस्स कहा

**पिउणा सिक्खिओ पुत्तो पारं जाइ कलद्धिणो।**
**वण्णिओ जइ नो होज्जा जह सिप्पिअअंगओ।।**

अवंतीए पुरीए इंददत्तो नाम सिप्पिवरो अहेसि, सो सिप्पकलाहिं सव्वंमि जयंमि पसिद्धो होत्था। इमस्स सरिच्छो अन्नो को वि नत्थि। एयस्स पुत्तो सोमदत्तो नाम। सो पिउस्स सगासंमि सिप्पकलं सिक्खंतो कमेण पिउराओ वि अईव सिप्पकलाकुसलो जाओ। सोमदत्तो जाओ जाओ पडिमाओ निम्मवेइ, तासु तासु पिया कंपि भुल्लं दंसेइ, कया वि सिलाहं न कुणेइ। तओ सो सुहुमदिट्ठीए सुहुमसुहुमं सिप्पकिरियं कुणेऊण पियरं दंसेइ, पिया वि तत्थ वि कंपि खलणं दरिसेइ, 'तुमए सोहणयरं सिप्पं कयं' ति न कयाइ तं पसंसेइ। अपसंसमाणे पिउम्मि सो चिंतेइ–'मम पिआ मज्झ कलं कहं न पसंसेज्जा?' तओ एआरिसं उवायं करेमि, जेण पियरो में कलं पसंसेज्ज।

एगया तस्स पिआ कज्जप्पसंगेण गामंतरे गओ, तया सो सोमदत्तो सिरिगणेसस्स सुंदरयमं पडिमं काऊण, पडिमाए हिट्ठंमि गूढं नियनामंकियचिन्हं करिऊण, तं मुत्तिं नियमित्तद्दारेण भूमीए अंतो निक्खेव कारेइ। कालंतरे गामंतराओ पिया समागओ। एगया तस्स मित्तो जणाणमग्गओ एवं कहेइ–'अज्ज मम सुमिणो समागओ, तेण अमुगाए भूमीए गणेसस्स पहावसालिणी पडिमा अत्थि।' तथा लोगेहिं सा पुढवी खणिआ, तीए पुहवीए गणेसस्स सुंदरयमा अणुवमा मुत्ती निग्गया। तद्दंसणत्थं बहवे लोगा समागया, तीए सिप्पकलं अईव पसंसिरे।

Jain Vishva Bharati Institute (Deemed University), Ladnun

तया सो इंददत्तो वि सपुत्तो तत्थ समागओ। तं गणेसपडिमं दट्ठूणं पुत्तं कहेइ–''हे पुत्त! एसच्चिअ सिप्पकला कहिज्जइ। केरिसी पडिमा निम्मविआ, इमाए निम्मावगो खलु धण्णयमो सलाहणिज्जो य अत्थि। पासेसु, कत्थ वि भुल्लं खुण्णं च अत्थि? जइ तुमं एआरिसी पडिमं निम्मवेज्ज, तया ते सिप्पकलं पसंसेमि, नन्नहा।''

पुत्तो वि कहेइ–''हे पियर! एसा गणेसपडिमा मम कया। इमाए हिट्ठंमि गुत्तं मए नामंपि लिहिअमत्थि।'' पिआवि लिहिअनामं वाइऊण खिज्जहियओ पुत्तं कहेइ–''हे पुत्त! अज्जयणाओ तुं एरिसं सिप्पकलाजुत्तं सुंदरयमं पडिमं कया वि न करिस्ससि, जओ हं तव सिप्पकलासु भुल्लं दंसतो, तया तुमं पि सोहणयरकज्जकरणतल्लिच्छो सण्हं सण्हं सिप्पं कुणंतो आसि, तेण तव सिप्पकलावि वड्ढती हुवीअ। अहुणा 'मम सारिच्छो नन्नो' इह मंदूसाहेण तुम्ह एआरसी सिप्पकला न संभविहिइ।'' एवं सो सरहस्सं पिउवयणं सोच्चा पाएसु पडिऊण पिउत्तो पसंसारकरावणरूवनिआवराहं खामेइ, परंतु सो सोमदत्तो तओ आरब्भ तारिसिं सिप्पकलं काउं असमत्थो जाओ।

उवएसो——

**दिट्ठंतं सिप्पिपुत्तस्स नच्चा गुणगणप्पयं।**
**पुज्जाणं वयणं सोच्चा पडिऊलं न चिंतह।।**

## 6. शिल्पी–पुत्र की कथा

**अनुवाद**——पिता के द्वारा सिखाया जाता हुआ कला की सम्पदा से युक्त पुत्र पार पा जाता, यदि आत्मश्लाघा नहीं करता, जैसे शिल्पी का पुत्र।

अवन्ती नगरी में इन्द्रदत्त नाम का श्रेष्ठ शिल्पी था (रहता था)। वह शिल्पकलाओं से सम्पूर्ण जगत् में प्रसिद्ध था। इसके समान दूसरा कोई भी नहीं था। इसका सोमदत्त नाम का पुत्र (था)। वह पिता के पास शिल्पकला सिखता हुआ क्रमशः पिता से भी शिल्पकला में अधिक कुशल हो गया। सोमदत्त जिन–जिन प्रतिमाओं को बनाता है, उनमें पिता कुछ भी (कोई–न–कोई) भूल दिखाता था, कभी भी प्रशंसा नहीं करता। तब वह सूक्ष्म दृष्टि से (बारीक–बारीक) शिल्पक्रिया करके पिता को दिखाता, पिता भी वहां पर कुछ स्खलना दिखा देता, 'तुमने सुन्दरतर शिल्प किया' ऐसा कभी भी उसकी प्रशंसा नहीं करता था। पिता के द्वारा प्रशंसा नहीं किये जाने पर वह सोचता है——मेरा पिता मेरी कला की प्रशंसा क्यों नहीं करता? अतः ऐसा उपाय करूं, जिससे पिता मेरी कला की प्रशंसा करे।

एक बार उसका पिता कार्य के प्रसंग से अन्य ग्राम में गया, तब वह सोमदत्त श्रीगणेश का सुन्दरतम प्रतिमा बनाकर, प्रतिमा के नीचे गुप्त रूप से अपने नाम को अंकित कर उस मूर्ति को अपने मित्र के द्वारा भूमि के भीतर गड़वा दिया। कालान्तर में ग्रामान्तर से पिता आ गया। एक बार उसका मित्र लोगों के आगे ऐसा कहता है——आज मुझे स्वप्न आया, जैसाकि अमुक भूमि में गणेश की प्रभावशाली प्रतिमा है। तब लोगों ने उस जमीन को खोदा, उस जमीन में गणेश के सुन्दरतम और अनुपम मूर्ति निकली। उसके दर्शन के लिए बहुत सारे लोग आये। उसके (उस प्रतिमा के) शिल्पकला की अति प्रशंसा की।

तब वह इन्द्रदत्त भी पुत्र के साथ गया। उस गणेश–मूर्ति को देखकर पुत्र को कहता है——हे पुत्र! इसे ही शिल्पकला कहते हो। कैसी प्रतिमा बनायी गयी है, इसका निर्माता निश्चय ही धन्यतम और श्लाघनीय है। देखो, कहीं पर भी भूल (अथवा) और कमी है? यदि तुम ऐसी प्रतिमा का निर्माण करोगे तो तुम्हारी शिल्पकला की प्रशंसा करूंगा, अन्यथा नहीं।

पुत्र भी कहता है——हे पिता! यह गणेश–प्रतिमा मेरे द्वारा ही बनाई गई है। इसके नीचे गुप्त रूप से मेरा नाम भी लिखा हुआ है। पिता भी लिखित नाम को पढ़कर खिन्न हृदय से पुत्र को कहता है——हे पुत्र! आज से तुम ऐसी शिल्पकला से युक्त सुन्दरतम प्रतिमा को कभी भी नहीं कर सकोगे, क्योंकि मो तुम्हारी शिल्पकलाओं में भूल दिखाता था, तब तुम भी सुन्दरतम कार्य करने में लीन होकर अत्यंत सूक्ष्म शिल्प को करते थे, जिससे तुम्हारी शिल्पकला भी बढ़ रही थी। अब 'मेरे समान अन्य नहीं है' इस प्रकार मंद उत्साह से तुम ऐसी शिल्पकला नहीं कर सकोगे। इस प्रकार वह रहस्ययुक्त पिता के वचन को सुनकर पैरों में गिरकर इस अपराध के लिए क्षमा–याचना करता है, किंतु वह सोमदत्त तन से लेकर उस प्रकार की शिल्पकला को करने में असमर्थ हो गया।

**उपदेश**——विविध गुण–पद से युक्त शिल्पी पुत्र के दृष्टान्त को जानकर और पूज्यों के वचन को सुनकर प्रतिकूल चिन्तन नहीं करना चाहिए।

Jain Vishva Bharati Institute (Deemed University), Ladnun

**कठिन शब्दों के प्रयोग**

सगासंमि——समीप में
अहेसि——था, रहता था
होत्था——था
सिलाहं——प्रशंसा, श्लाघा
गूढं——गुप्त
मियनामंकियचिन्हं——अपना नाम लिखकर
अमुगाए——अमुक
वाइऊण——पढ़कर, बांचकर
अज्जयणआ——आज से
खणिआ——(खनिता) खोदी गई
खुण्णं——कमी, गलती
सोहणयरकज्जकरणतच्छिल्लो——सुन्दरतर कार्य करने में तल्लीन।
नन्नो——(न अन्य) दूसरा नहीं
पसंसाकरावणरूवनिआवराहं——प्रशंसा कराने के अपने अपराध को

**(1) वस्तुनिष्ठ प्रश्न**

(क) .....पुरी में श्रेष्ठ शिल्पी रहता था।
(ख) शिल्पी का नाम.....था।
(ग) शिल्पी के पुत्र का नाम.....था।
(घ) शिल्पीपुत्र ने.....की प्रतिमा बनाई।

**(2) निबन्धात्मक प्रश्न**

(1) शिल्पी–पुत्र की कथा से मिलने वाली शिक्षाओं को लिखें।

(2) प्रस्तुत पाठ के आधार पर बताएं कि पिता की विचारधारा अपने पुत्र के प्रति उपयुक्त थी अथवा अनुपयुक्त।

## 7. अमंगलियपुरिसस्स कहा

**अमंगलमुहो लोगो नेव कोवीह भूयले।**
**वहाइट्ठेण भूमीसो अमंगलमुहो कओ।।**

एगंमि नयरे एगो अमंगलिओ मुद्धो पुरिसो आसि। सो एरिसो अत्थि, जो को वि पभायंमि तस्स मुहं पासेइ, सो भोयणं पि न लहेज्जा। पउरा वि पच्चूसे कया वि तस्स मुहं न पिक्खंति। नरवइणा वि अमंगलयपुरिसस्स वट्टा सुणिआ। परिक्खत्थं नरिंदेण एगया पभायकाले सो आहूओ, तस्स मुहं दिट्ठं। जया राया भोयणत्थमुवविसइ, कवलं च मुहे पक्खिवइ, तया अहिलंमि नयरे अकम्हा परचक्कभएण हलबोलो जाओ। तया नरवइ वि भोयणं चिच्चा सहसा उत्थाय ससेण्णो नयराओ बाहिं निग्गओ।

भयकारणमदट्ठूण पुणो पच्छा आगओ समाणो नरिंदो चिंतेइ——'अस्स अमंगलियस्स सरूवं मए पच्चक्खं दिट्ठं, तओ एसो हंतव्वो' एवं चिंतिऊण अमंगलियं बोल्लाविऊण वहत्थं चंडालस्स अप्पेइ। जया एसो रुयंतो, सकम्मे निंदंतो चंडालेण सह गच्छंतो अत्थि, तया एगो कारुणिओ बुद्धिनिहाणो वहाइं नेइज्जंतमाणं तं दट्ठूणं कारणं णच्चा तस्स रक्खणाय कण्णे किंपि कहिऊण उवायं दंसेइ। हरिसंतो जया वहत्थंभे ठविओ, तया चंडालो तं पुच्छइ–'जीवणं विणा तव कावि इच्छा सिया, तया मग्गियव्वं।'' सो कहेइ——'मज्झ नरिंदमुहदंसणेच्छा अत्थि' तया सो नरिंदसमीवमाणीओ। नरिंदो तं पुच्छइ——'किमेत्थ आगमणपओयणं?''

सो कहेइ——''हे नरिंद, पच्चूसे मम मुहस्स दंसणेण भोयणं न लब्भइ, परंतु तुम्हाणं मुहपेक्खणेण मम वहो भविस्सइ, तया पउरा किं कहिस्संति? तुम्हाणं मुहं कहं पासिहिरे।'' एवं तस्स वयणजुत्तीए संतुट्ठो नरिंदो वहाएसं निसेहिऊणं पारितोसिअं च दच्चा तं अमंगलियं संतोसीअ।



Jain Vishva Bharati Institute (Deemed University), Ladnun

उवएसो——

**अमंगलमुहस्सेवं रक्खणं धीमया कयं।**
**सोच्चा तुम्हे त हा होह मईए कज्जसाहगा।।**

## 7. अमांगलिक पुरुष की कथा

**अनुवाद**——''इस पृथ्वी पर अमंगल मुखवाला व्यक्ति कोई नहीं है। वध का आदेश देने से स्वयं राजा अमंगल मुखवाला हो गया।''

एक नगर में एक अमांगलिक मूर्ख व्यक्ति था। वह ऐसा था, जो कोई भी प्रातःकाल उसका मुख देख लेता, भोजन भी नहीं प्राप्त कर सकता था। नगर के लोग भी प्रभात में कभी भी उसका मुख नहीं देखते थे। राजा ने भी अमांगलिक पुरुष की बात सुनी। परीक्षा करने के लिए राजा ने एक बार प्रातःकाल उसे बुलाया, उसका मुंह देखा, जब राजा भोजन के लिए बैठता है और कौर मुंह में डालता है, तभी समस्त नगरी में अकस्मात् शत्रु की सेना के भय से कोलाहल हो गया। तब राजा भी भोजन छोड़कर सहसा उठकर सेना सहित नगर से बाहर निकल गया।

भय के कारण को न देखकर पुनः वापस आया हुआ राजा सोचता है——इस अमांगलिक के स्वरूप को मोने प्रत्यक्ष देख लिया, अतः इसे मार देना चाहिए। ऐसा सोचकर अमांगलिक व्यक्ति को बुलाकर बध के लिए चण्डाल को साोप देता है। जब वह रोता हुआ, अपने कर्म की निन्दा करता हुआ चण्डाल के साथ जा रहा था, तब एक करुणावान् और बुद्धि का निधान पुरुष वध के लिए ले जाते हुए उस व्यक्ति को देखकर और कारण जानकर उसकी रक्षा के लिए कान में कुछ कहकर उपाय सुझाता है। हर्षित होता हुआ जब वध के खम्भे पर खड़ा किया गया तब चण्डाल उसे पूछता है——जीवन को छोड़कर यदि तुम्हारी कोई इच्छा है तो मांग सकते हो। वह कहता है——मेरी राजा के मुख देखने की इच्छा है। तब उसको राजा के समीप लाया गया। राजा उससे पूछता है——आने का क्या प्रयोजन है?

वह कहता है——हे नरेन्द्र! प्रातः मेरे मुख दर्शन से भोजन नहीं मिला, परन्तु तुम्हारा मुख देखने से मेरा वध होगा, तब ग्रामवासी क्या कहेंगे? मेरे मुख दर्शन की अपेक्षा श्रीमान् के मुख दर्शन का कैसा फल मिला, नगरजन भी प्रातः तुम्हारा मुख कैसे देखेंगे? इस प्रकार उसके वचन की युक्ति (तर्कसंगत बात) से संतुष्ट राजा वधादेश का निषेघ कर और पारितोषिक देकर उस अमांगलिक पुरुष को संतुष्ट किया।

**उपदेश**——बुद्धिमान् व्यक्ति ने अमांगलिक पुरुष की रक्षा की, इसे सुनकर तुम्हें भी उसी प्रकार बुद्धि से कार्य में सहायक होना चाहिए।

### कठिन शब्दों के अर्थ

मुद्धो——मुग्ध, मूर्ख लहेज्जा——प्राप्त करता है
पिक्खंति——देखते हो
कवलं——ग्रास, कौर
परचक्कभएण——शत्रु के आक्रमण के भय से
अकम्हा——अकस्मात्
हलबोलो——शोरगुल, कोलाहल
चिच्चा——(त्यक्त्वा) छोड़कर
कारुणिओ——दयालु
वहत्थंभे——फांसी के तख्ते पर
संजाओ——डूबा
निसेहिऊण——निषेध करके
दच्चा——(दत्वा) देकर

Jain Vishva Bharati Institute (Deemed University) Ladnun

**(1) वस्तुनिष्ठ प्रश्न**

(क) एगंमि नयरे एगो ..... पुरिसो आसि।

(ख) अकम्हा शद्न का अर्थ ..... ।

(ग) राजा ने सोचा इसे ..... चाहिए।

(घ) धीमान को ..... रक्षा करनी चाहिए।

**(2) निबन्धात्मक प्रश्न**

(1) प्रस्तुत पाठ की कथावस्तु को अपनी भाषा–शैली में प्रस्तुत कीजिए।

(2) अमांगलिक व्यक्ति की कारुणिक व्यक्ति ने किस प्रकार सहायता की?

(3) क्या राजा न्याय न्यायसंगत था, स्वविचार लिखें।

## 8. गेहेसूरो

एगंमि गामे एगो सुवण्णयारो वसइ। तस्स रायपहस्स मज्झभाए हट्टिगा विज्जइ। सया मज्झरत्तीए सो सुवण्णभरियं मंजूसं गहिऊणं नियघरंमि आगच्छइ। एगया तस्स भज्जाए चिंतिअं——''एसो मम भत्ता सव्वया मंजूसं गहिऊण मज्झरत्तीए गेहे आगच्छइ, तं न वरं, जओ कयावि मग्गे चोरा मिलेज्जा तया किं होज्जा?'' तओ तीए नियभत्तारो वुत्तो——''हे पिअ! मज्झरत्तीए तुज्झ गिहे आगमणं न सोहणं ति, मज्झभाए कयावि को वि मिलेज्जा तया किं होज्जा?'' सो कहेइ–''तुं मम बलं न जाणासि, तेण एवं बोल्लेसि। मम पुरओ नरसयं पि आगच्छेज्ज, ते किं कुणेज्जा? ममग्गओ ते किमवि काउं न समत्था। तुमए भयं न कायव्वं।'' एवं सुणिऊण तीए चिंतीअं——'गेहेसूरो मम पिओ अत्थि, समए तस्स परिक्खं काहिमि।'

एगया सा नियघरसमीववासिणीए खत्तियाणीए घरे गंतूण कहेइ——''हे पियसहि! तुं तव भत्तुणो सव्वं वत्थभूसं मज्झ अप्पेहिं, मम किं पओयण अत्थि।'' तीए खत्तियाणीए अप्पणो पिअस्स असिसहिअ–सिरवेढण– कडिपट्टाइ–सुहडवेसं सव्वं समप्पिअं। सा गहिऊण गेहे गया।

जया रत्तीए एगो जामो गओ, तया सा तं सव्वं सुहडवेसं परिहाय, असिं गहिऊण निस्संचारे रायपहंमि निग्गया। पिअस्स हट्टाओ नाइदूरे रुक्खस्स पच्छा अप्पणं आवरिअ ठिआ। कियंतकाले सो सोण्णारो हट्टं संवरिय, मंजूसं च हत्थेण गहिऊण सो भयभंतो इओ तओ पासंतो सिग्घं गच्छंतो जाव तस्स रुक्खस्स समीवं आगओ, तया पुरिसवेसधारिणी सा सहसा नीसरिऊण मउणेण तं निब्भच्छेइ–'हुं हुं, सव्वं मुंचेहि, अन्नहा मारइस्सं।' सो अकम्हा रुंधितो भएण थरथरंतो 'मं न मारेसु, मं न मारेसु' इअ कहिऊण मंजूसा अप्पिआ। तओ सा सव्वपरिहिअवत्थग्गहणाय करवालग्गं तस्स वच्छमि ठविऊण सन्नाए वसणाइं पि कड्ढावेइ। तया सो परिहिअकडिपट्टयमेत्तो जाओ। तओ सा कडिपट्टयं पि मरणभयं दंसिऊण कड्ढावेइ। सो अहुणा जाओ इव नग्गो जाओ। सा सव्वं गहिऊण घरंमि गया, घरदारं पिहिऊण अंतो थिआ।

सो सुवण्णयारो भएण कंपमाणो इओ तओ अवलोएंतो मग्गे आवणवीहीए गच्छंतो कमेण जया सागवावारिणो हट्टसमीवमागओ, तया केण जणेण पक्कचिब्भडं बाहिरं पक्खित्तं, तं तु तस्स सुवण्णयारस्स पिट्टभागे लग्गिअं। तेण नायं केणवि अहं पहरिओ। पिट्ठदेसे हत्थेण फासेइ, तत्थ चिब्भडस्स रसं बीआइं च फासिऊणं विआरियं——''अहो हं गाढयरं पहरिओ म्हि, तेण घाएण सह सोणिअं पि निग्गयं, तम्मज्झे कीडगावि समुप्पन्ना, एवं अच्चतभयाउलो तुरिअं गच्छंतो घरद्दारे समागओ।

पिहिअं घरद्दारं पासिऊण नियभज्जाए आहवणत्थं उच्चसरेण कहेइ——'हे मयणस्स मायरे, दारं उग्घाडेहि, दारं उग्घाडेहि, दारं उग्घाडेहि।' सा अब्भंतरत्थिआ सुणंती वि असुणंतीव किंचि कालं थिआ। अइक्कोसणं सा आगच्च दारं उग्घाडिअ एवं पुच्छइ–किं बहुं अक्कोससि?' सो भयभंतो गिहंमि पविसिअ भज्जं कहेइ——'दारं सिग्घं पिहाहि, तालगं पि देसु।' तीए सव्वं काऊण पुट्ठं——'किं एवं नग्नो जाओ?' तेण वुत्तं——'अब्भंतरे अववरए चल, पच्छा मं पुच्छ।' गिहस्स अंते अववरए गच्चा निच्चितो जाओ। तीए पुणो वि पुट्ठं——'किं एवं नग्नो आगओ?' तेण कहियं——'चोरेहिं लुंठिओ, सव्वं अवहरिअ नग्नो कओ।' सा कहेइ——''पुव्वं मए कहियं, हे सामि! तए एव मज्झरत्तीए मंजूसं गहिऊण न आगंतव्वं, तुमए न मन्निअं तेण एवं जायं।'' सो कहेइ——'अहं महाबलिट्ठो वि किं करोमि? जइ पंच छ वा चोरा आगया होज्जा, तया ते सव्वे अहं जेउं समत्थो,

Jain Vishva Bharati Institute (Deemed University), Ladnun

एए उ सयसो थेणा आगया, तेणाहं तेहिं सह जुज्झमाणो पराजिओ, सव्वं लुंठिऊण नग्नो कओ, पिट्ठदेसे य असिणाहं पहरिओ। पासेसु पिट्ठदेसं, घाएण सह कीडगावि उप्पन्ना।''

तीए तस्स पिट्ठदेसं पासित्ता णायं——चिब्भडस्स रसं बीयाइं च इमाइं संति। भत्तुस्स वि कहिअं–''सामि! भयभंतेण तए एवं जाणियं, केण वि अहं पहरिओ एवं तओ सोणिअं निग्गयं, तत्थ य कीडगा वि समुप्पन्ना, तं न सच्चं। तुं चिब्भडेण पहरिओ सि, तस्स रसं बीयाइ च पिट्ठदेसे लग्गाइं'' ति। तओ तस्स देहपक्खालणाय सा जलं गहिऊण आगया, नियपइस्स देहसुद्धिं करेऊण परिहाणवत्थप्पणे ताइं चेव वत्थाइं अप्पेइ। सो ताइं वत्थाइं पासिऊणं धिट्ठत्तणेणं कहेइ——''हुं–हुं, मए तयच्चिय तुमं नाया, मए चिंतिअं——मम भज्जा किं करेइ? तेणाहं भयभंतो इव तत्थ थिओ, सव्वावहरणभुंवेक्खिअं, अन्नहा मम पुरओ इत्थीए का सत्ती? सा कहेइ–''हे भत्तार! तव बलं मए तया चेव नायं, गेहेसूरो तुमं असि, अओ अज्जयणाओ तुमए मज्झरत्तीए मंजूसं गहिऊण कयावि न आगंतव्वं'' ति भज्जाए वयणं सो अंगीकरेइ।

## 8. गृहशूर

**अनुवाद**——एक गांव में एक सुनार रहता था। राजपथ के मध्य भाग में उसकी दूकान थी। हमेशा मध्यरात्रि में वह सोने से भरे हुए पेटी लेकर अपने घर आता था। एक बार उसकी पत्नी ने सोचा——यह मेरा पति हमेशा मंजूषा लेकर मध्यरात्रि में घर आता है, यह ठीक नहीं है। जब कभी भी मार्ग में चोर मिल जायेंगे तो क्या होगा? तब उसने अपने पति से कहा——हे प्रिय! मध्यरात्रि में तुम्हारा घर आना ठीक नहीं है, मध्यभाग (रास्ते में) कभी भी कोई भी मिल जाए तब क्या होगा? वह कहता है——तुम मेरे बल को नहीं जानती। इसलिए ऐसा कहती हो। मेरे आगे सौ मनुष्य भी आ जायें, तो वे क्या कर लेंगे? मेरे आगे वे कुछ भी करने के लिए समर्थ नहीं हो सकेंगे। तुम्हें भय नहीं करना चाहिए। ऐसा सुनकर उसने सोचा——गृहशूर मेरा पति है, समय पर उसकी परीक्षा करूंगी।

एक बार अपने घर के पास रहने वाली क्षत्रियाणी के घर जाकर कहती है——हे प्रियसखी! तु तुम्हारे पति के सभी वस्त्राभूषण मुझे दे दो, मेरा कुछ प्रयोजन है। उस क्षत्रियाणी ने अपने पति के तलवार सहित शिरोवेष्टन (पगड़ी) कटिवस्त्रादि सभी योद्धाओं के वेशभूषा दे देती है। वह लेकर घर में आ गई।

जब रात्रि का एक प्रहर बीता, तब वह उस सम्पूर्ण योद्धाओं के वेश को धारण कर, तलवार को लेकर सुनसान राजपथ पर निकली। पति की दुकान से न अति दूर वृक्ष के पीछे स्वयं को छिपाकर स्थित हो गई। कुछ समय बाद वह सुनार दुकान बन्द कर, मंजूषा को हाथ में लेकर वह भयभ्रान्त इधर– उधर देखता हुआ शीघ्रता आता हुआ जब उस वृक्ष के समीप आता है तब पुरुष वेश धारण करने वाली वह अचानक निकल कर मौनपूर्वक उसकी भर्त्सना करती है——हुं–हुं, सब कुछ छोड़ दो। अन्यथा मार दूंगा। वह अकस्मात् रोके जाने के कारण भय से कांपता हुआ——मुझे मत मारो, मुझे मत मारो, ऐसा कहकर मंजूषा दे देता है। तब वह पहने हुए सारे वस्त्रों को लेने के लिए तलवार को उसके वृक्ष में रखकर संकेत से वस्त्रों को निकलवा लेती है। तब वह केवल कटिवस्त्र धारण करने वाला हो गया। तब वह कटिवस्त्र को मृत्यु का भय दिखाकर निकलवा लेती है। वह अभी उत्पन्न हुए के समान नग्न हो गया। वह सबकुछ लेकर घर चली गई। घर का दरवाजा बन्द कर भीतर में स्थित हो गई अर्थात् भीतर चली गई।

वह सुनार भय से कांपता हुआ, इधर–उधर देखता हुआ मार्ग में बाजार की गलियों से जाता हुआ क्रमशः जब सब्जी व्यापारियों के दुकान के निकट आया, तब किसी व्यक्ति ने पके हुए खीरे को बाहर फेंका और वह (खीरा) उस स्वर्णकार के पृष्ठभाग में लग गया। उसने जाना कि किसी के द्वारा मैं मारा गया हूं। पृष्टभाग में हाथ को छुआता है तो वहां खीरे के रस और बीजों को स्पर्श कर सोचता है——अहो! मैं गाढ़ रूप से प्रहार किया गया हूं, जिससे घाव के साथ रक्त भी निकल गया है और उसके बीच में कीड़े भी उत्पन्न हो गये हो। इस प्रकार अत्यधिक भय से व्याकुल होकर अतिशीघ्र जाता हुआ घर के द्वार में पहुंचता है।

घर के दरवाजे बन्द देखकर अपनी भार्या को उच्च स्वर से कहता है——हे मदन की मां! दरवाजा खोलो, दरवाजा खोलो। वह भीतर ही बैठी हुई सुनती हुई भी नहीं सुनती हुई के समान कुछ समय बैठी रही। बहुत चिल्लाने पर वह आकर दरवाजा खोलती है और पूछती है——इतना क्यों चिल्लाते हो? भयभ्रान्त वह घर में प्रवेश कर पत्नी को कहता है——दरवाजा

Jain Vishva Bharati Institute (Deemed University), Ladnun

शीघ्र बन्द कर दो, ताला भी लगा दो। उसने सबकुछ करके पूछा——नंगे क्यों हो गये? उसने कहा——भीतर के कमरे में चलो, फिर बाद में पूछो। घर के भीतर के कमरे में जाकर निश्चित हो गया। उसने पुनः पूछा——इस प्रकार नग्न होकर कैसे आए? उसने कहा——चोरों के द्वारा लुटा गया, सब कुछ लेकर नग्न कर दिया। वह कहती है——पहले मैंने कहा था। हे स्वामी! तुम्हे मध्यरात्रि में मंजूषा लेकर नहीं आना चाहिए, तुमने नहीं माना, अतः ऐसा हुआ। वह कहती है——मैं महान् बलशाली होने पर भी क्या कर सकता था। जब पांच–छह चोर आये होते तो उन सबको मो जीत सकता था, किंतु जब एक साथ सैकड़ों चोर आ जाये तो मैं उनके साथ लड़ता हुआ मो पराजित हो गया और सबकुछ लूटकर नग्न कर दिया गया। पृष्ठभाग में तलवार से प्रहार किया। देखो, पीठ में घाव के साथ कीड़े भी उत्पन्न हो गये हो। वह उसके पृष्ठभाग को देखकर जान लिया कि ये खीरे के रस तथा बीज हो। पति को भी कहती है——स्वामी! भयभ्रान्त होने के कारण तुमने ऐसा जाना कि किसी के द्वारा मुझे प्रहार किया गया, जिससे खून निकल गया और वहां कीड़े भी उत्पन्न हो गये, वह सत्य नहीं है। तुम खीरे से प्रहार किये गये हो, उसके रस और बीज पीठ पर लगे हुए हो। तब वह उसके शरीर को धोने के लिए पानी लेकर आयी और अपने पति के शरीर शुद्धि करके पहनने के वही वस्त्र देती है। वह उन वस्त्रों को देखकर धृष्टता से कहता है——हुं–हुं! मो तुमको उसी समय ही जान लिया था, मोने सोचा, मेरी पत्नी क्या करती है? अतः मो भय से भ्रान्त हुए के समान वहां खड़ा हो गया, सर्वस्व अपहरण की उपेक्षा कर दिया, अन्यथा मेरे आगे स्त्री की क्या शक्ति? वह कहती है——हे स्वामी! तुम्हारे बल को मोने तभी जान लिया था, गृहशूर हो तुम। अतः आज से तुम मंजूषा रात्रि में लेकर मत जाया करो। ऐसा कहकर पत्नी के वचन को स्वीकार कर लिया।

**कठिन शब्दों के अर्थ**

गेहेसूरा——घर में ही शूरता दिखाने वाला
हट्टिगा——बाजार, दूकान
कुणेज्जा——करें
काहिमि——करूंगा
सिखेढण——शिरोवेष्टन
निब्भच्छेइ——भर्त्सना करती है
कडिपट्टाइसुहडवेसं——कटिपट्ट आदि योद्धा की वेशभूषा को
नाइदूरे——समीप
हुं हुं——अरे–अरे
पक्कचिब्भडं——पके हुए खीरे को
अववरगे——कमरे में
परिहिअकडिपट्टयमेत्तो——छोड़ा हुआ कटिपट्टमात्र
आवण्णवीहीए——बाजार–मार्ग में
मिह——हूं
अइवक्कोसणे——बहुत चिल्लाने पर
जुज्झमाणो——जूझता हुआ
भवस्स——पति का
अन्नहा——अन्यथा
नायं——(ज्ञातं) जान लिया
अंगीकरेइ——स्वीकार किया

**(1) वस्तुनिष्ठ प्रश्न**

(क) गेहेसूरो ..... था।
(ख) वह प्रतिदिन ..... लेकर घर जाता था।
(ग) गेहेसूरो की पत्नी अपनी ..... के घर गई।
(घ) हुं हुं सत्वं मुंचेहि ..... मारइस्सं।

**(2) निबन्धात्मक प्रश्न**

(1) 'गेहेसूरो' पाठ के आधार पर नारी के चरित्र को उद्घाटित कीजिए।
(2) प्रस्तुत पाठ की कथावस्तु को संक्षेप में अपनी भाषा–शैली में प्रस्तुत करें।

## 9. गामिल्लओ सागडिओ

अत्थि कोइ कम्हिइ गामेल्लओ गहवइ परिवसइ। सो य अण्णया कयाइं सगडं धण्णभरियं काऊणं, सगडे य तित्तिरि पंजरगयं बंधेत्ता पट्ठिओ नयरं। नयरगओ य गंधियपुत्तेहिं दीसइ। सो य तेहिं पुच्छिओ–'किं एयं ते पंजरए?' त्ति।।

तेण लवियं——'तित्तिर' त्ति।

तओ तेहिं लवियं–'किं इमा सगडतित्तिरी विक्कायइ?' तेण लवियं–'आमं, विक्कायइ।' तेहि भणिओ–'किं लब्भइ?' सागडिएण भणियं——'काहावणेणं' त्ति।

Jain Vishva Bharati Institute (Deemed University), Ladnun

तओ तेहिं काहावणो दिण्णो, सगडं तित्तिरं च घेत्तुं पयत्ता। तओ तेणं सागडिएणं भण्णइ–'कीस एयं सगडं नेहि?' त्ति।

तेहिं भणियं——'मोल्लेणं लइयय' त्ति।

तओ ताणं ववहारो जाओ जितो सो सागडिओ, हिओ य सो सगडो तित्तिरीए समं।

सो सागडिओ हियसगडोवगरणो जोग–खेम–निमित्तं आणएल्लियं बइल्लं घेत्तूणं विक्कोसमाणो गंतूं पयत्तो, अण्णेण य कुलपुत्तएणं दीसइ, पुच्छिओ य——'कीस विक्कोससि?'

तेण लवियं——'सामि! एवं च एवं च अइसंधिओ हं।'

तओ तेण साणुकंपेण भणिओ——'वच्च ताणं चेव गेह एवं च एवं च भणाहि' त्ति।

तओ सो तं वयणं सोऊण गओ, गंतूण य तेण भणिआ–'सामि! तुब्भेहिं मम भंडभरिओ सगडो हिओ ता इमं पि बइल्लं गेण्हइ। मम पुण सत्तुयादुपालियं देह, जं घेत्तूण वच्चामि त्ति। न य अहं जस्स व कस्स व हत्थेणं गेण्हामि, जा तुज्झ घरिणी पाणेहि वि पिययरी सव्वालंकारभूसिया तीए दायव्वा, तओ मे परा तुट्ठी भविस्सइ। जीवलोगब्भंतरं व अप्पाणं मन्निस्सामि।'

ततो तेहिं सक्खी आहूया, भणियं च——'एवं होउ' त्ति। तओ ताणं पुत्तमाया सत्तुयादुपालियं घेत्तूण निग्गया, तेण सा हत्थे गहिया, घेत्तूण य तं पट्ठिओ।

तेहि वि भणिओ–'किमेयं करेसि?'

तेण भणियं——'सत्तुयादुपालियं नेमि।'

ततो ताणं सद्देण महाजणो संगहिओ, पुच्छिया——'किमेयं?' ति। ततो तेहिं जहावत्तं सव्वं परिकहियं। समागयजणेण य मज्झत्थेणं होऊण ववहारनिच्छओ सुओ, पराजिया य ते गंधियपुत्ता। सो य किलेसेण तं महिलियं मोयाविओ, सगडो अत्थेण सुबहुएण सह परिदिण्णो।

## 9. ग्रामीण गाड़ीवाला

**अनुवाद**——किसी गांव में कोई कहीं पर ग्रामीण गृहपति रहता था। एक बार (अन्य किसी दिन) वह गाड़ी को धान्य से भरकर और गाड़ी में पिंजड़े में बन्द एक तीतर को बांधकर नगर की ओर प्रस्थान किया। नगर में जाने पर उसे गन्धिक–पुत्रों ने देखा। और वे उसे पूछते हो——तेरे इस पिंजड़े में क्या है?

उसने कहा——तीतर।

तब उन्होंने कहा——क्या इस सकट तीतर को बेचोगे?

उसने कहा——हां, मो बेचूंगा।

उन्होंने कहा——क्या लोगे?

गाड़ीवान् ने कहा——कार्षापण।

तब उन लोगों ने एक कार्षापण दे दिया और गाड़ी सहित तीतर को लेकर चल दिये। तब उस गाड़ी वाले ने कहा——गाड़ी कैसे ले जा रहे हो?

उन्होंने कहा–मूल्य से ले जा रहे हो। तब उन लोगों के लिए पंचायत बैठी और गाड़ीवान् को जीत लिया। वह गाड़ीवान् गाड़ी और गाड़ी में समान हरण कर लिये जाने पर कुशलक्षेम के निमित्त लाये हुए बैलों को लेकर रोता–कलपता हुआ जाने लगा, तब अन्य किसी कुलपुत्र ने उसे देखा और पूछा–क्यों क्रन्दन करते हो?

उसने कहा–स्वामी! ऐसा हुआ, ऐसा हुआ, मो ठग लिया गया। तब वह अनुकम्पा सहित कहता है–जाओ उन्हीं के घर में और ऐसा कहना। तब वह उसके वचन को सुनकर चला गया और जाकर उसने कहा–स्वामी! तुम लोगों ने मेरी सामग्री से भरी गाड़ी को छीन लिया तो इस बैल को भी ले लो। किंतु मुझे दो पाली (माप विशेष) सत्तु दे दो, जिसे लेकर मो जाऊंगा। किन्तु मो जिस किसी के हाथ से नहीं लूंगा, यदि प्राणों से भी प्यारी तुम्हारी पत्नी सभी अलंकारों से विभूषित होकर देगी तो मुझे अधिक प्रसन्नता होगी और संसारमें अपने को मानूंगा।

तब उन लोगों ने गवाहों को बुलाया और कहा–ऐसा होगा। तब उनके पुत्र की माता दो पाली सत्तु लेकर निकली, उसने उसके हाथ पकड़ लिये और चल दिया।

Jain Vishva Bharati Institute (Deemed University), Ladnun

उन्होंने कहा–इसे कैसे ले जा रहे हो?

उसने कहा–दो पाली सत्तु ले जा रहा हूं।

तब उन लोगों ने चिल्लाकर महाजनों को एकत्रित कर लिया। उन्होंने पूछा–यह क्या?

तब उन लोगों ने यथावार्ता सब–कुछ कह दिया। समागत लोगों ने मध्यस्थ होकर न्याय किया और वे गंधिक पुरुष पराजित हो गये। और वह क्लेश से उस महिला को छुड़ाया और बहुत धन सहित गाड़ी को दे दिया।

**कठिन शब्दों के अर्थ**

गामेल्लओ——ग्रामीण
कम्हिइ——कहीं
लवियं——कहा
काहावणेणं——कार्षावण, रुपये से
बइल्लं——बैल को
गहवइ——गृहपति
धण्णयरियं——धान्य से भरा
विक्कायइ——बिकेगा
लइयं——लिया
आनिएल्लियं——लाये गये
सत्तुयादुपालियं——दो पाली सत्तु
आहूया——बुलाया
संगहिओ——इकट्ठा किया
ववहारनिच्छओ——न्याय का निश्चय
महिलियं——महिला को
परिदिण्णो——दिया

**(1) वस्तुनिष्ठ प्रश्न**

(क) किसी गांव.....रहता था।
(ख) ग्रामीण गाड़ी में.....को ले जा रहा था।
(ग) रास्ते में उसे.....मिले।
(घ) ग्रामीण को.....ने रास्ता बताया।

**(2) निबन्धात्मक प्रश्न**

(1) प्रस्तुत पाठ के आधार पर ग्रामीण एवं शहरी संस्कृति पर प्रकाश डालें।

(2) प्रस्तुत पाठ का सारांश अपने शब्दों में लिखें।

(3) प्रस्तुत पाठ से मिलने वाली शिक्षाओं को सतर्क प्रस्तुत करें।

## 10. पुत्तेहिं पराभविअस्स पिउस्स कहा

**जाव दव्वं विइण्णं न पुत्ता ताव वसंवया।**
**पत्ते दव्वे य सच्छंदा हवंति दुक्खदायगा।।**

कंमि नयरे एगवुड्ढस्स चत्तारि पुत्ता संति। सो थविरो सव्वे पुत्ते परिणाविऊण नियवित्तस्स चउब्भागं किच्चा पुत्ताणं अप्पियं। सो धम्माराहणतप्परो निच्चिंतो कालं गमेइ। कालंतरे ते पुत्ता इत्थीणं वेमणस्सभावेण भिन्नघरा संजाआ। वुड्ढस्स पइदिणं पइघरं भोयणाय वारगो निबद्धो। पढमदिणंमि जेट्ठस्स पुत्तस्स गेहे भोयणाय गओ। बीयदिणे बीयपुत्तस्स घरे जाव चउत्थदिणे कणिट्ठस्स पुत्तस्स घरे गओ। एवं तस्स सुहेण कालो गच्छइ। कालंतरे थेराओ धणस्स अपत्तीए पुत्तवहूहिं सो थेरो अवमाणिज्जइ। पुत्तवहूओ कहिंति–"हे ससुर! अहिलं दिणं घरंमि किं चिट्ठसु? अम्हाणं मुहाइं पासिउं किं ठिओ सि? थीणं समीवे वसणं पुरिसाणं न जुत्तं, तव लज्जावि न आगच्छेज्जा, पुत्ताणं हट्टे गच्छज्सु।" एवं पुत्तवहूहिं अवमाणिओ सो पुत्ताणं हट्टे गच्छइ।

तया पुत्तावि कहिंति–"हे वुड्ढ! किमत्थं एत्थ आगओ? वुड्ढत्तणे घरे वसणमेव सेयं, तुम्ह दंता वि पडिआ, अक्खितेयं पि गयं, सरीरं वि कंपिरमत्थि, अत्थ ते किंपि पओयणं नत्थि, तम्हा घरे गच्छाहि।" एवं पुत्तेहिं तिरक्करिओ सो घरं गच्छेइ तत्थ पुत्तवहूओ वि तं तिरक्करंति। पुत्तपुत्ता वि तस्स थेरस्स कच्छुट्टियं निक्कासेइरे; कयावि मंसुं दाढियं च करिसिन्ति। एवं सव्वे विविहप्पगारेहिं तं वुड्ढं अवहसिंति। पुत्तवहूओ भोयणे वि रुक्खं अपक्कं च रोट्टगं दिंति। एवं पराभविज्जमाणो वुड्ढो चिंतेइकृ''किं करेमि, कहं जीवणं निव्वहिस्सं?' एवं दुहमणुभवंतो सो नियमित्तसुवण्णगारस्स समीवे गओ। अप्पणो पराभवदुहं तस्स कहेइ, नित्थरणुवायं च पुच्छइ।

सुवण्णगारो बोल्लेइ–"भो मित्त! पुत्ताणे वीसासं करिऊण सव्वं धणमप्पिअं, तेण दुहिंओ जाओ तत्थ किं चोज्जं? सहत्थेण कम्मं कयं, तं अप्पणा भोत्तव्वं चिअ।" तह मित्तत्तेण सो एवं उवायं दंसेइ–"तुमए पुत्ताणं एवं कहिअव्वं–'मम मित्तसुवण्णगारस्स गेहे रुप्पयदीणारभूसणेहिं भरिया एगा मंजूसा मए मुक्का अत्थि, अज्ज जाव तुम्हाणं न कहिअं, अहूणा

Jain Vishva Bharati Institute (Deemed University), Ladnun

जराजिण्णो हं, तेण सद्धम्मकम्मणा सत्तक्खेत्ताईसु लच्छीए विणिओगं काऊण परलोगपाहेयं गिण्हिस्सं।' एवं कहिऊण पुत्तेहिं एसा मंजूसा गेहे आणावियव्वा। मंजूसाए मज्झं तं रुप्पगसयं मोइस्सं तं तु मज्झरत्तीए पुणो पुणो तुमए सयं च सहस्सं च रणरयारपुव्वं गणेयव्वं, जेण पुत्ता मन्निस्संति-'अज्जावि बहुधणं पिउणो समीवे अत्थि।' तओ धणसाए ते पुव्वमिव भत्तिं करिस्संते। पुत्तवहूओ वि तहेव सक्कारं काहिंति। तुमए सव्वेसिं कहियव्वं-'इमीए मंजूसाए बहुधणमत्थि। पुत्तपुत्तवहूणं लिहिऊण ठवियमत्थि। तं तु मम मरणंते तुम्हेहिं नियनियनामवारेण गहिअव्वं।' धम्मकरणत्थं पुत्तेहिंतो धणं गिण्हिऊण सद्धम्मकम्मकरणे वावरियव्वं। मम रुप्पगसयं पि तुमए न विस्सारियव्वं, एयं अवसरे दायव्वं।"

सो थेरो मित्तस्स बुद्धीए तुट्ठो गेहे गच्चा रत्तीए पुत्तेहिं मंजूसं आणाविऊण रत्तीए तं रुप्पगसयं सय–सहस्स–दससहस्साइगुणणेण तं चिय गणिंति। पुत्ता वि विआरिंतिकृपिउस्स पासे बहुधणमत्थि, ते वहूणं पि कहिंति। सव्वे ते थेरं बहुं सक्कारिंति सम्माणिंति य अईबनिब्बंधेण तं पुत्तवहूआ वि अहमहमिगयाए भोयणाय निंति, साउं सरसं भोयणं दिंति, तस्स वत्थाइं पि सएव पक्खालिंति, परिहाणाय वत्थाइं अप्पिंति। एवं वुड्ढस्स सुहेण कालो गच्छइ।

एगया आसन्नमरणो सो पुत्ताणं कहेइ-"मज्झ धम्मकरणेच्छा वट्टइ, तेण सत्तखेत्तेसु किंचि वि धणं दाउमिच्छामि।" पुत्तावि मंजूसा–गयधणासाए अप्पिंति। सो वुड्ढो जिण्णमंदिरुवस्सयसुपत्ताईसुं जहसत्तीए देइ। अप्पणो परममित्तसुवण्णगारस्स वि नियहत्थेण रुप्पयसयं पच्चप्पेइ, एवं सद्धम्मकम्मंमि धणव्वयं किंच्चा, मरणकालंमि पुत्ताणं पुत्तवहूणं च बोल्लाविऊण कहिअं-"इमीए मंजूसाए सव्वेसिं नामग्गहणपुव्वयं धणं मुत्तमत्थि। तं तु मम मरणकिच्चं काऊण पच्छा जहनामं तुम्हेहिं गहिअव्वं" ति कहिऊण समाहिणा सो वुड्ढो कालं पत्तो। पुत्ता वि तस्स मच्चुकिच्चं किच्चा नाइजणं पि जेमाविऊण बहुधणासाइ जया सव्वे मिलिऊण मंजूसं उग्घाडिंति तया अहो वुड्ढेण अम्हे वंचिआ बंचिअ त्ति, किल अम्हाणं पिउभत्तिपरंमुहाणं अविणयस्स फलं संपत्तं। एवं सव्वे ते दुहिणो जाआ।

उवएसो–

**पुत्तेहिं पत्तवित्तेहिं पिंअरस्स पराभवं।**
**सोच्चा तहा पयट्टेज्जा सुहं वुड्ढत्तणे वसे।।**

## 10. पुत्रों द्वारा अपमानित पिता की कथा

**"जब तक द्रव्य–सम्पत्ति बांटी नहीं गई तब तक पुत्र वश में रहे।**
**द्रव्य–सम्पत्ति के प्राप्त होने पर स्वच्छन्द होकर वे दुखदायक हो गये।।"**

किसी नगर में एक वृद्ध के चार पुत्र थे। वह वृद्ध सभी पुत्रों का विवाह कर अपनी संपत्ति के चार भाग करके पुत्रों को दे दिया। धर्माराधना में तत्पर वह निश्चिन्तता से समय व्यतीत करने लगा कुछ समय के बाद स्त्रियों के वैमनस्य के कारण वे पुत्र अलग–अलग हो गये। वृद्ध के लिए प्रतिदिन प्रत्येक के घर भोजन के लिए वारी बांध दी गई। प्रथम दिन बड़े पुत्र के घर भोजन के लिए गया। दूसरे दिन दूसरे पुत्र के घर, चौथे दिन छोटे पुत्र के घर गया। इस प्रकार सुख से उसका समय व्यतीत होने लगा। कुछ समय बाद वृद्ध के द्वारा धन दे दिये जाने पर पुत्रवधुएं उस वृद्ध का अपमान करने लगे। पुत्र वधू कहती हैं–हे ससुर! पूरे दिन घर में क्यों स्थित रहते हो? हमारे मुखों को देखने के लिए क्यों स्थित हो? स्त्रियों के पास पुरुषों का रहना ठीक नहीं है, तुम्हें लज्जा भी नहीं आती, पुत्रवधुओं के द्वारा अपमानित वह पुत्रों के दुकान पर जाता है।

तब पुत्र भी कहते हैं–हे वृद्ध! यहां किसलिए आये हो? वृद्धावस्था में घर में रहना ही श्रेय है, तुम्हारे दांत भी गिर गये हैं, नेत्रज्योति भी चले गये हैं, शरीर भी कांप रहा है, यहां तुम्हारा कुछ भी प्रयोजन नहीं है, तुम घर जाओ। इस प्रकार पुत्रों के द्वारा तिरस्कार किये जाने पर वह घर जाता है, वहां पुत्रवधुएं भी उसका तिरस्कार करते हैं। पोते भी उस वृद्ध के कछौटी खोल देते और कभी दाढ़ी–मूंछ नोचने लगते। इस प्रकार सभी लोग अनेक प्रकार से उस वृद्ध की हंसी उड़ाने लगे। पुत्रवधुएं भोजन में भी रुखी–सूखी कच्ची रोटी देने लगीं। इस प्रकार अपमानित होता हुआ वृद्ध सोचता है–क्या करूं, जीवन का निर्वाह कैसे करूं? इस प्रकार दुःख का अनुभव करता हुआ वह अपने सुनार मित्र के पास गया। अपने अपमान के दुःख उसे कहता है और उससे निस्तार पाने का उपाय पूछता है।

स्वर्णकार कहता है–'हे मित्र! पुत्रों पर विश्वास करके सम्पूर्ण धन दे दिया, इसलिए दुःखी हो गये, वहां क्या आश्चर्य? अपने हाथ से काम किया, उसे स्वयं को ही भोगना पडेगा। फिर भी मित्रता के कारण वह इस प्रकार उपाय दिखाता है–तुम

Jain Vishva Bharati Institute (Deemed University), Ladnun

पुत्रों को ऐसा कहना–मेरे स्वर्णकार के घर में रूपये दीनार और आभूषणों से भरी एक पेटी रखी हुई थी, आज तक तुमको नहीं कहा था, अब मैं बुढ़ापे से जीर्ण हो गया हूं, अतः सद्धर्मरूपी कर्म से सात क्षेत्रों में धन का विनियोग करके परलोक के पाथेय को ग्रहण करूंगा। ऐसा कहकर पुत्रों से इस पेटी को रात्रि में मंगवा लेना। पेटी में मैंने सौ रूपये रख दिये हैं, उन्हें तुम मध्यरात्रि में बार–बार सैंकड़ों और हजारों बार बजा– बजाकर गिनते रहना, जिससे पुत्र मानने लगेंगे कि अभी भी पिता के पास बहुत धन है। अतः धन की आशा से पहले की तरह भक्ति करने लगेंगे। पुत्रवधुएं भी वैसा ही सत्कार करेगीं। तुम सबसे कहते रहना–इस पेटी में बहुत धन है। पुत्र और पुत्रवधुओं के नाम लिखकर रखे हुए हैं। उन्हें तुम मेरे मरने के बाद अपने–अपने नामानुसार ले लेना। धर्मकार्य करने के लिए पुत्रों से धन लेकर धार्मिक–कार्यों में खर्च करते रहना। मेरे सौ रूपयों को भी तुम भूल मत जाना, अवसर आने पर दे देना।

वह वृद्ध मित्र की बुद्धि से संतुष्ट होकर घर जाकर रात्रि में पुत्रों से पेटी मंगवाकर रात में उस सौ रूपये को सैकड़ों हजारों बार बजा बजाकर गिनने लगा। पुत्र भी सोचते है–पिता के पास बहुत धन है, वे पत्नियों से भी कहते हैं । वे सभी वृद्ध का बहुत सत्कार सम्मान करने लगे और अतिस्नेह से उसको पुत्रवधुएं भी पहले मैं पहले मैं इस आग्रह से भोजन के लिए लाने लगीं और स्वादिष्ट सरस भोजन देने लगीं, उसके वस्त्र भी स्वयं ही धोने लगीं तथा पहनने के लिए धोए हुए वस्त्र देतीं। इस प्रकार वृद्ध का समय सुखपूर्वक बीतने लगा।

एक बार जब मृत्यु का समय निकट आने लगा तब वह पुत्रों से कहता है–मेरी धर्म करने की इच्छा है अतः सप्तक्षेत्र में कुछ धन देना चाहता हूं। पुत्र भी पेटी में रहे हुए धन की आशा से दे देते हैं। उस वृद्ध ने भी मंदिरों के जीर्णोद्धार के लिए एवं अनेक सत्पात्रों में अपने शक्ति के अनुसार दे देता है। अपने परममित्र स्वर्णकार को भी अपने हाथ से सौ रूपये लौटा देता है तथा धार्मिक कार्यों में धन का व्यय कर, मरण काल में पुत्र एवं पुत्रवधुओं को बुलाकर कहता है–इस पेटी में सभी के नामानुसार धन रखे गये हैं। उन्हें मेरी मरणक्रिया करने के बाद यथानाम ले लेना। ऐसा कहकर समाधिपूर्वक वह वृद्ध मृत्यु को प्राप्त हो जाता है। पुत्र भी उसकी मृत्युक्रिया करके ज्ञातिजनों को भी भोजन कराकर बहुत धन की आशा से जब सभी मिलकर पेटी को खोलते हैं, तब उस के मध्य में अपने–अपने नाम से युक्त पत्रों से बांधे हुए पत्थर के खण्ड में उस सौ रूपये को देखकर अहो! वृद्ध के द्वारा हम ठगे गये, निश्चित ही पितृभक्ति से पराङ्मुख हम लोगों ने अविनय का फल पा लिया। इस प्रकार सभी दुःखी हो गये।

**उपदेश**

धनप्राप्त पुत्रों से पिता के पराभव को सुनकर वैसा कार्य करना चाहिए, जिससे वृद्धावस्था में सुखपूर्वक रहा जा सके।

**कठिन शब्दों के अर्थ**

वसंवया——वश में रहे
थविरो——बुड्ढा
वेमणस्सभावेण——वैमनस्यता के कारण
संजाआ——हो गये
वारगो——वारी
अहिलं——(अखिल) सम्पूर्ण
हट्टे——दुकान में
अक्खितेयं——आंखों की रोशनी
तम्हा——(तस्मात्) इसलिए
पुत्तपुत्ता——पोते
निक्कासेइरे——निकाल दिया
कच्छुट्टियं——कछौटी को
करिसन्ति——खींचते हैं
पगारेहिं——प्रकारों से
रोट्टगं——बड़ी रोटी
नित्थरणुवायं——निस्तार का उपाय
चोच्चं——आश्चर्य
रणरणयारपुव्वं——झनझनाहट के साथ
गिण्हिस्सं——ले लेना
निब्बंधेण——स्नेह से
साउं——स्वादिष्ट
नाइजणं——ज्ञाति जनों को
उग्घाडिंति——खोलते हैं
वावरियव्वं——खर्च करना
विस्सारियव्वं——भूला देना
गच्चा——जाकर
सुपत्ताईसु——सत्पात्रों में
पच्चप्पेइ——वापस करता है
मच्चुकिच्चं——मश्त्युकर्म
धुविआइं——धुले हुए
परंमुहाण——पराङ्मुख, विपरीत

Jain Vishva Bharati Institute (Deemed University) Ladnun

**1. वस्तुनिष्ठ प्रश्न**

(क) जब तक पिता ने ..... नहीं दिया तब तक पुत्र वश में रहे।

(ख) वुड्ढस्स पइदिणं पइधरं ..... वारगो निबद्धो।

(ग) वृद्ध का मित्र एक ..... था।

(घ) पुत्रों से वृद्ध ने ..... मंगवाई।

(ङ) वह वृद्ध यथाशक्ति ..... करवाया।

**2. निबन्धात्मक प्रश्न**

1. क्या व्यक्ति के लिए धन ही सर्वश्रेष्ठ है–अपना मंतव्य प्रस्तुत कीजिए।
2. मित्र की मित्रता को उजागर कीजिए।
3. प्रस्तुत पाठ के आधार पर वश्द्ध पिता एवं उसके पुत्रों तथा पुत्रवधुओं के व्यवहार की समीक्षा कीजिए।

## 11. भारियासीलपरिक्खा

अत्थि अवंती नाम जणवओ। तत्थ उज्जेणी नाम नयरी रिद्धित्थिमियसमिद्धा। तत्थ राया जितसत्तू नाम। तस्स रन्नो धारिणी नाम देवी। तत्थ य उज्जेणीए दसदिसिपयासो इब्भो सागरचंदो नाम। भज्जा य से चंदसिरी। तस्स पुत्तो चंदसिरीए अत्तओ समुद्दत्तो नाम सुरूवो। सो य सागरचंदो परमभागवउदिक्खासंपत्तो भगवयगीयासु सुत्तओ अत्थओ य विदित परमत्थो। सो य तं समुद्दत्तं दारगं गिहे परिव्वायगस्स कलागहणत्थे ठवइ "अण्णसालासु सिक्खंतो अण्णपासंडियदिट्ठी हवेज्जा।"

तओ सो समुद्दत्तो दारगो तस्स परिव्वायगस्स समीवे कलागहण करमाणो अण्णया 'कयाइ फलगं' ठवेमि त्ति गिहं अणुप्पविट्ठो। नवरिं च पासइ नियगजणणी तेण परिवायगेण सद्धिं असब्भं आयरमाणीं। ततो सो निग्गओ इत्थीसु वीरागसमावण्णो 'न एयाओ कुलं सीलं वा रक्खंति' त्ति चिंतिऊण हियएण निब्बंधं करेइ, जहाकृ'न मे वीवाहेयव्वं' ति। तओ से समत्तकलस्स जोव्वणत्थस्स पिया सरिसकुल–रूव–विहवाओ दारियाओ वरेइ। सो य ता पडिसेहेइ। एवं तस्स कालो वच्चइ।

अण्णया तस्स सम्मएण सुरट्ठदेसं आगओ ववहारेणं। गिरिनयरे धणसत्थवाहस्स धूयं धणसिरिं पडिरूवेण सुंकेणं समुद्दत्तस्स वरेइ। तस्स य अन्नायं एव तिंहिगहणं नियनगरं आगओ। तओ तेण भणिओ समुद्दत्तो–"पुत्त! मम गिरिनयरे भंडं अच्छइ, तत्थ तुमं सवयंसो वच्च। तओ तस्स भंडस्स विणिओगं काहामो" त्ति वोत्तूण वयंसाण य से दारियासंबंधं संविदितं कयं।

तओ ते सविभवाणुरूवेणं निग्गया, कहाविसेसेण य पत्ता गिरिनयरं वाहिरओ य ठाइऊणं धणस्स सत्थवाहस्स मणुस्सो पेसिओ, जहा–'ते आगओ वरो' त्ति। तओ तेण सविभावणुरूवा आवासा कया, तत्थ य आवासिया। रत्तीए आगया भोयणववएसेणं धणसत्थवाहगिहे धणसिरीए पाणिग्गहणं कारिओ। तओ सो धणसिरीए वासगिहं पविट्ठो। तओ तेण पइरिक्कं जाणिऊण तीसे धणसिरीए चम्महिं दाऊण निग्गओ वयंसाण च मज्झे सुत्तो। ततो पभायाए रयणीए सरीरावस्सकहेउं सवयंसो चेव निग्गओ बहिया गिरिनयरस्स। तेसिं वयंसाणं अदिट्ठओ चेव नट्ठो। तओ से वयंसहिं आगंतूणं (सागरचंदस्स) धणसत्थवाहस्स य परिकहियं 'गओ सो'। तेहिं समंततो मग्गिओ, न दिट्ठो। तओ ते दीणवयणा कइवयाणि दिवसाणि अच्छिऊण धणसत्थवाहं आपुच्छिऊण गया नियगनयरं।

इयरो वि समुद्दत्तो देसंतराणि हिंडिऊण केणइ कालेण आगओ गिरिनयरं कप्पडियवेसछण्णो परूढनह–केस–मंसु–रोमो। दिट्ठो णेण धणसत्थवाहो आरामगओ। तओ तेणं पणमिऊण भणिओकृ"अहं तुब्भं आरामकम्मकरो होमि।" तेण य भणिओ–"भणसु, का ते भत्ती दिज्जउं" त्ति? तओ तेण भणियं– "न मे भइए कज्जं। अहं तुज्झ पसादाभिकंखी। मम तुट्ठीदाणं देज्जह" त्ति। एवं पडिस्सुए आरामे कम्मं आरद्धो काउं।

तओ सो रुक्खाउव्वेयकुसलो तं आरामं कइवएहिं दिवसेहिं सव्वोउय–पुप्फ–फल–समिद्धं करेइ। तओ सो धणसत्थवाहो तं आरामसिरिं पासिऊणं परं हरिसमुवगओ। चिंतियं च णेणंकृ"किमेएणं गुणाइसयभूएण पुरिसेण आरामे अच्छंतेण? वर मे आवारीए अच्छउ" त्ति। तओ ण्हवियपसाहिओ दिण्णवत्थजुयलो ठवियो आवणे। तओ तेण आय–वयकुसलेणं गंधजुत्तिनिउणत्तणेण पुरजणो उम्मत्तिं गाहिओ। तओ पुच्छिओ जणेणं–'किं ते नामधेयं?' पभणइ य–'विणीयओ त्ति मे

Jain Vishva Bharati Institute (Deemed University), Ladnun

नामधेयं।' एवं सो विणीयओ विणयसंपन्नो सव्वनयरस्स वीससणिज्जो जाओ। तओ तेण सत्थवाहेण चिंतियं–"न खेमं मे एस आवणे य अच्छंतो। मा एस रायसंविदितो हवेज्ज, ततो राएण हीरइ त्ति। वरमेस गिहे भंडारसालाए, अच्छंतो।" तओ तेण सगिहं नेऊण परियणं च सद्दावेऊण भणियं–"एस वो विणीयओ जं देइ तं भे पडिच्छियव्वं, न य से आणा कोवेयव्व" त्ति। तओ सो विणीयओ घरे अच्छइ, विसेसओ य धणसिरीए जं चेडीकम्मं तं सयमेव करेइ। तओ धणसिरीए विणीयओ सव्ववीसंभट्ठाणिओ जाओ। तत्थ य नगरे रायसेवी एक्को डिंडी परिवसइ। इओ य सा धणसिरी पुव्वावरण्हसमए सत्ततले पासाए अट्टालगवरगया सह विणीयगेणं तंबोलं सांमणयंती अच्छइ। सो य डिंडी ण्हाय–समालद्धो तस्स भवणस्स आसण्णेणं गच्छइ। धणसिरीए तंबोलं निच्छूढं पडियं डिंडिस्सुवरि। डिंडिणा निज्झाइया य, दिट्ठा य णेणं देवयभूया। तओ सो अणंगवाणसोसियसरीरो तीए समागमुस्सुओ संवुत्तो। चिंतियं च णेणं–"एस विणीयओ एएसिं सव्वप्पवेसी, एयं उवतप्पामि। एयस्स पसाए एईए सह समागमो भविस्सइ" त्ति। तओ अण्णया तेण विणीयओ नियगभवणं नीओ। पूया–सक्कारं च काउं पायपडिएण विण्णविओ–'तहा चेट्ठसु, जेण मे धणसिरीए सह संजोगं करेसि' त्ति। तओ सो 'एवं होउ' त्ति। वोत्तूण धणसिरीए सह सगासं गओ। पत्थावं च जाणिऊण भणिया णेणं धणसिरी डिंडिवयणं। तओ तीए रोसवसगयाए भणिओ– "केवल तुमे चेव एयं संलत्तं, अण्णो ममं ण जीवंतो" त्ति। तओ सो विइयदिवसे निग्गओ, दिट्ठो य डिंडिणा। भणिओ णेणं–"किं भो वयंस! कयं कज्जं?" त्ति। तओ पुणरवि तेण दाणमाणेणं संगहियं करेत्ता विसज्जिओ। तओ सो आगंतूण धणसिरीए पुरओ विमणा तुण्हिक्को ठिओ अच्छइ। तओ तीए ध णसिरीए तस्स मणोगयं जाणिऊण भणिओ–"किं ते पुणो डिंडी किंचि भणइ?" तेण भणियं–'आमं' त्ति। तीए निवारिओ– "न ते पुणा तस्स दरिसणं दायव्वं।" पुणो य पुच्छिज्जमाणो तहेव तुण्हिक्को अच्छइ। तओ तीए तस्स चित्तरक्खं करेंतीए भणिओ–"वच्च, देहि से संदेसं जहाकृअसोगवणियाए तुमे अज्ज पओसे आगंतव्वं" त्ति। तेण तहा कयं। तओ सा असोगवणियाए सेज्जं पत्थरेऊण जोगमज्जं च गिण्हिऊण विणीयगसहिया अच्छइ। सो आगओ। तओ तीए सोवयार मज्जं से दिण्णं। सो य तं पाऊण अचेयणसरीरो जाओ। ताए तस्सेव य संतियं असिं कड्ढिऊण सीसं छिण्णं। पच्छा विणीयओ भणिओकृ 'तुमे अणत्थं कारिया तुज्झ वि सीसं छिंदामि' त्ति। तेण पायवडिएण मरिसाविया। विणीयगेण धणसिरिसंदिट्ठेणं कूवं खणित्त निहिओ।

तओ अन्नया सुहासणवरगया धणसिरी विणीयगेण पुच्छियाकृ"सुंदरि। तुमं कस्स दिन्ना?" तीए भणियंकृ"उज्जेणिगस्स समुद्दत्तस्स दिण्णा।" तेण भणियं–'वच्चामि, अहं तं गवेसित्ता आणेमिं' त्ति भणिउं निग्गओ। संपत्तो य नियगभवणं पविट्ठो, दिट्ठो य अम्मापिऊहिं, तेहिं य कयंसुपाएहिं उवगूहिओ। तओ तेहिं धणसत्थवाहस्स लेहो पेसिओ 'आगओ से जमाउओ' त्ति। तओ सो वयंसपरिगहियो मायापिईहिं य सद्धिं ससुरकुलं गओ। तत्थ य पुणरवि वीवाहो कओ।

तओ सो अप्पाणं गूहेतो धणसिरीए विणीयगवेसेणं अप्पाणं दरिसेइ। परं तु तीए तस्स रूवदंसणणिमित्तं पच्छण्णदीवं ठवेऊण तस्स रूवोवलद्धी कया। दिट्ठो य णाए विणीयओ। तओ तेण सव्वं संवादितं।

## 11. भार्या के शील की परीक्षा

अवन्ती नाम का जनपद था। वहां उज्जयिनी नाम की ऋद्धि और समृद्धि से सम्पन्न नगरी थी। वहां जितशत्रु नामका राजा था। उस राजा की धारिणी नामकी पत्नी (देवी) थी। उस उज्जयिनी नगरी में दसों दिशाओं का प्रकाशकर सागरचन्द्र नामका सेठ था। उसकी चंदश्री नामकी पत्नी थी। उसका (उस सेठ का) पुत्र चन्द्रश्री का आत्मज समुद्रदत्त जो सुन्दर था। सागरचन्द्र ने परमभागवत दीक्षा प्राप्त कर भगवत गीता में सूत्र और अर्थ के अनुसार परमार्थ को जान लिया (तत्व को जान लिया।) वह समुद्रदत्त पुत्र को कला ग्रहण करवाने के लिए घर में एक परिव्राजक को रख लेता है क्योंकि "अन्य शालाओं में (विद्यालय) पढ़ने से अन्य धर्मों की पाखण्डपूर्ण दृष्टिवाल हो जायेगा।" तब से वह समुद्रदत्त पुत्र उस परिव्राजक के पास कलाग्रहण करता हुआ अन्य किसी दिन फलक (स्लेट) रखने के लिए घर में प्रवेश किया और वह अपनी माता को उस परिव्राजक के साथ असभ्य आचरण करती हुई देखता है। तब वह स्त्रियों के प्रति विराम को प्राप्त निकल जाता हैं–ये स्त्रियां कुल और शील की रक्षा नहीं करतीं, ऐसा सोचकर हृदय में निश्चय करता है–मैं विवाह नहीं करूंगा। उसके बाद उसका पिता समस्त कला और युवावस्था को प्राप्त उसके समानकुल, रूप और वैभव सम्पन्न कन्याओं को उसके लिए वरण करता है। किन्तु वह निषेध कर देता है। इस प्रकार उसका समय बीतने लगा।

Jain Vishva Bharati Institute (Deemed University), Ladnun

अन्य किसी दिन उसकी सम्मति से पिता सौराष्ट्र देश में व्यापार के लिए आया। गिरीनगर में धनसार्थवाह की पुत्री धनश्री को उचित शुल्क (कन्यानिरीक्षण–शुल्क) के साथ समुद्रदत्त के लिए वरण करता है और वह अज्ञात रूप से तिथि निश्चित करके अपने नगर आ गया। तब उसने समुद्रदत्त से कहा–पुत्र! गिरिनगर में मेरा धन (माल) है, वहां तुम अपने मित्रों के साथ जाओ। वहां उस माल का विनिमय (लेन देन) करेंगे ऐसा कहकर उसके मित्रों को कन्या के साथ किये गये संबंध को बता दिया।

तब वे वैभव के अनुरूप निकले, विशेष प्रकार के कथा कहते हुए वे गिरिनगर को पहुंच गये और बाहर ठहरकर धन सार्थवाह के पास आदमी को भेजा, यथा–तुम्हारा वर आ गया है। तब उसने वैभव के अनुरूप आवास बनाया और उन्हें ठहराया। रात में भोजन के बहाने धन सार्थवाह के घर में आये, धनश्री के साथ पाणि–ग्रहण करवा दिया। तब वह धनश्री के निवास स्थान पर जाता है। तब वह एकान्त स्थान जानकर उस धनश्री को चकमा देकर निकल जाता है और मित्रों के बीच सो जाता है। उसके बाद रात बीतने पर और सुबह होने पर शरीर के आवश्यक काम के लिए मित्रों के साथ ही गिरिनगर के बाहर निकला। उन मित्रों से नजर बचाकर गायब हो गया। तब वे मित्र आकर और धनसार्थवाह से कहा–वह चला गया। वे चारों ओर खोजते हैं किन्तु दिखाई नहीं देता। तब वे दीनमुख वाले कुछ दिन ठहरकर धनसार्थवाह को पूछकर अपने नगर चले गये।

इधर समुद्रदत्त भी दूसरे देशों में घूमता हुआ किसी समय भिखमंगे का प्रच्छन्न वेश धारण करने वाला, बढ़े हुए नख–केश–दाढ़ी–मूंछ वाला गिरिनगर में आया। बगीचे में गये हुए धनसार्थवाह को उसने देखातब उसे प्रणाम कर कहता है–मैं तुम्हारे बगीचे का नौकर बनना चाहता हूं और उसने कहा–कहो, तुम्हें वेतन क्या दिया जाये? तब उसने कहा–मुझे वेतन से कोई प्रयोजन नहीं। मैं तो तुम्हारे प्रसाद का अभिकांक्षी हूं। मुझे तुष्टिदान दीजिए। ठीक है ऐसा स्वीकृति देने पर बगीचे में कार्य करना प्रारम्भ कर दिया। तब वह वृक्ष–आयुर्वेद में कुशल, उस बगीचे को कुछ ही दिनों में सभी ऋतुओं के पुष्प–फल से समृद्ध कर दिया। तब वह धनसार्थवाह उस बगीचे की शोभा को देखकर परम हर्ष को प्राप्त हुआ और उसने सोचा–सैकड़ों गुणों से युक्त इस व्यक्ति को बगीचे में रखने से क्या? 'अच्छा हो मेरे दुकान में रहे।' तब स्नानादि कराके दो जोड़ी कपड़ा देकर दुकान में रख लिया।

आय–व्यय में कुशल इत्र तैयार करने की कला में कुशल उसको नगर के लोगों ने पूछा – तुम्हारा नाम क्या है? वह कहता है विनीतक मेरा नाम है। इस प्रकार वह विनीतक विनय से सम्पन्न सम्पूर्ण नगर में विश्वसनीय हो गया। तब उस सार्थवाह ने सोचा–इसका दुकान में रहना मेरे लिए कल्याणकारी नहीं है। राजा अगर इसको जान लेगा तो इसे हरण कर लेगा। अच्छा है कि इसे घर के भंडारशाला में रखा जाये। तब उसे अपने घर ले जाकर और परिजनों को बुलाकर कहा–यह विनीतक जो कुछ देगा उसे तुम स्वीकार करना, उसकी आज्ञा पर क्रोध मत करना। तब से वह विनीतक घर में रहने लगा विशेष रूप से धनश्री के जो दासकर्म थे उन्हें वह स्वयं करता है। तब विनीतक धनश्री का सर्वविश्वास का स्थान हो गया।

उस नगरी में एक डिंडी नामक राज्यपदाधिकारी रहता था और इधर धनश्री दोपहर के समय सात तल्लों वाले प्रासाद के अट्टालिका में विनीतक के साथ पान चबा रही थी। उसी समय वह डिंडी स्नान करके और अलंकृत होकर उस भवन के समीप से गुजरता है। धनश्री ने पान थूंका वह डिंडी के ऊपर गिर पड़ा। डिंडी देखता है, तब उसने अप्सरा के समान उसको देखा। तब वह कामदेव के बाण से शोषित शरीर वाला उसके साथ समागम के लिए उत्सुक हो गया और वह सोचता है–यह विनीतक इसके सर्वत्र प्रवेशवाला है, इसके पास जाता हूं (इसे सन्तुष्ट करता हूं) इसकी प्रसन्नता से इसके साथ समागम हो जायेगा।

तब अन्य किसी दिन वह विनीतक को अपने भवन ले गया। पूजा और सत्कार करके पैरों पर गिरकर विनती की–वैसी चेष्टा (प्रयत्न) करो जिससे धनश्री के साथ संयोग करा दो। तब उसने 'ठीक है' ऐसा कहकर धनश्री के पास गया। प्रस्ताव को जानकर उसने धनश्री को डिंडी के वचन कहे। तब वह क्रोध के वशीभूत होकर कहती है–सिर्फ तुम ऐसा कह सकते हो, मेरे जीवित रहते और कोई नहीं कह सकता है।

तब वह दूसरे दिन निकलता है और डिंडी को देखता है। उसने कहा–हे मित्र! क्या काम कर दिया? तब उसने उसके वचन को छुपाता हुआ कहता है–उपाय ढूंढ रहा हूं। तब पुनः भी उसे दानादि से सम्मान करके भेज देता है।

तब वह आकर धनश्री के सामने विमन होकर तथा चुपचाप खड़ा हो गया। तब धनश्री उसके मनोगत को जानकर कहती है–क्या पुनः उस डिंडी ने तुम्हें कुछ कहा? उसने कहा–हां। उसने निवारण किया कि पुनः उससे मत मिलना। बारबार

Jain Vishva Bharati Institute (Deemed University), Ladnun

पूछे जाने पर वह वैसा ही चुपचाप खड़ा रहा। तब वह उसकी मन की रक्षा करती हुई कहती है–जाओ, उसे संदेश दो कि–अशोक वाटिका में आज शाम को आना।

उसने वैसा किया। तब वह अशोकवन में शय्या बिछाकर योगमद्य (नशीली चीजों को मिलाकर बनाई गई शराब) लेकर विनीतक के साथ स्थित हो गई। वह आता है। तब वह उपचारपूर्वक उसको शराब देती है। और वह उसे पीकर अचेत शरीरवाला हो गया। उस धनश्री ने उसके ही तलवार को निकालकर सिर काट दिया। बाद में विनीतक से कहती है–तुमने अनर्थ किया तुम्हारे शिर को भी काटूंगी। वह पैरों पर गिरकर क्षमा मांगता है। विनीतक धनश्री के आदेश से कूप खोदकर उसे गाड़ देता है।

तब अन्य किसी दिन सुखासन पर बैठी हुई धनश्री से विनीतक पूछता है–हे सुन्दरी! तुम किसे दिये गये हो? उसने कहा–उज्जयिनी के समुद्रदत्त को दी गई हूं। उसने कहा–जाता हूं, मैं उसे खोजकर लाऊंगा ऐसा कहकर चला जाता है और अपने घर में प्रवेश करता है, माता–पिता ने उसे देखा और वे रोते हुए उसे आलिङ्गत कर लेते हैं। तब वे धनसार्थवाह के पास पत्र भेजते हैं–तुम्हारा दामाद आ गया है और वह मित्रों को लेकर माता–पिता के साथ ससुरालय जाता है और वहां पुनः विवाह किया।

तब वह अपने को छुपाता हुआ धनश्री को विनीतक के वेश में स्वयं को दिखाता है। किन्तु वह उसके रूप देखने के लिए प्रच्छन्न रूप से दीपक रखकर उसके रूप को देख लेती है और विनीतक को देखा। तब उसने सब कुछ कह दिया।

**कठिन शब्दों के अर्थ**

रिद्धित्थिमियसमिद्धा——ऋद्धि और समृद्धि से सम्पन्न
दसदिसिपयासो——दसों दिशाओं में प्रसिद्ध
अत्तओ ——आत्मज
ठवइ——रखा
फलगं——स्लेट, लेखनपट्टिका
ववहारेण——व्यापार के निमित्त
पडिरूवेण सुंकेणं——उचित शुल्क के साथ
अन्नायं——अज्ञात
भंडं——माल
सवयंसो——मित्रों सहित
विणिओगं——लेन–देन
पेसिओ——भेजा
आवासिया——ठहराया
ववएसेणं——बहाने से
पदरिक्कं——(प्रतिरिक्त) एकान्त
चम्मद्दिं——चकमा
अदिट्ठओ नट्ठो——नज़र बचाकर गायब हो गया
मग्गिओ——खोजा
कप्पडियवेशछण्णो——भिखमंगे का प्रच्छन्न वेश धारण करने वाला, कपट–वेशधारी
भत्तिं——वेतन
देज्जह——दें
आरद्धो——आरम्भ
सव्वोउय——सर्वऋतु
अच्छंतेण——रहते हुए
आवारीए——दुकान में
गंधजुत्ति——इत्र तैयार करने की कला
डिंडी——आरक्षी–पदाधिकारी
पुव्वावरण्हसमए——दिन के अन्तिम प्रहर में
अट्टालवरगया——ऊंची अटारी पर बैठी हुई
समाणयंती——चबाती हुई
समालद्धो——अलंकृत
निच्छूढं——फेंकना, थूकना
संलत्तं——कहा
उवतप्पामि——पास जाता हूं, सन्तुष्ट करता हूं
धत्तीहिं——उपाय ढूंढ रहा हूं
चित्तरक्खं——मनोभाव की रक्षा
मरिसाविया——क्षमा मांगी
निहिओ——गाड़ दिया डाल दिया
कयंसुपाएहिं——अश्रुपात करके
उवगूहिओ——आलिंगन किया
विज्झवेऊण——बुझाकर

**1. वस्तुनिष्ठ प्रश्न**

(क) ..... नाम जणवओ अत्थि।
(ख) समुद्रदत्त का अपर नाम ..... था।
(ग) समुद्रदत्त ने ..... के शील की परीक्षा की।
(घ) उसका पिता व्यापार के लिए ..... गया।

**2. निबन्धात्मक प्रश्न**

1. धनश्री का चरित्र–चित्रण करें।
2. प्रस्तुत पाठ के आधार पर नारी के स्वभाव का वर्णन करें।
3. कथा का सार अपने शब्दों में लिखें।

Jain Vishva Bharati Institute (Deemed University), Ladnun

## 12. छक्खंडागम–लेहण–कहा

तेण महावीरेण केवलणाणिणा कहिदत्थो तम्हि चेव काले तत्थेव खेत्ते खयोवसम–जणिद–चउरमल–बुद्धि–संपण्णेण बम्हणेण गोदम–गोत्तेण सयलदुस्सुदिपारएण जीवाजीव–विसय–संदेह–विणासणट्ठमुवगय–वड्ढमाण–पादमूलेण इंदभूदिणावहारिदो। उत्तं च–

**गोत्तेण गोदमो विप्पो, चाउव्वेय–सडंगवि।**
**णामेव इंदभूदि त्ति सीलवं बम्हणुत्तमो।।**

पुणो तेणिदंभूदिणा भाव–सुद–पज्जय–परिणदेण बारहंगाणं चोद्दस–पुव्वाणं च गंथाणमेक्केण चेव मुहुत्तेण कमेण रयणा कदा। तदा भाव–सुदस्स अत्थ–पदाणं च तित्थयरो कत्ता। तित्थयरादो सुद–पज्जाएण गोदमो परिणदो त्ति दव्व–सुदस्स गोदमो कत्ता। तत्तो गंथरयणा जादेत्ति। तेण वि गोदमेण दुविहमवि सुदणाणं लोहज्जस्स संचारिदं। तेण वि जंबूसामिस्स संचारिदं। परिवाडिमस्सिदूण एदे तिण्णि वि सयल–सुद–धारया भणिया। अपरिवाडिए पुण सयल–सुद–पारगा संखेज्ज–सहस्सा। गोदमथेरो लोहज्जाइरियो जंबूसामी य एदे तिण्णि वि सत्त–विह–लद्धि–संपण्णा सयल–सुय–सायर–पारया होऊण केवलणाण–मुप्पाइय णिव्वुइं पत्ता। तदो विण्हू णंदिमित्तो अवराइदो गोवद्धणो भद्दबाहु त्ति एदे पुरिसोली–कमेण पंच वि चोद्दस–पुव्वहरा। तदो विसाहाइरियो पोट्ठिलो खत्तियो जयाइरियो णागाइरियो सिद्धत्थथेरो धिदिसेणो विजयाइरियो बुद्धिल्लो गंगदेवो धम्मसेणो त्ति एदे पुरिसोलीकमेण एक्कारस वि आइरिया एक्कारसण्हमंगाणं उप्पायपुव्वादि–दसण्हं पुव्वाणं च पारया जादा, सेसुवरिम–चदुण्हं पुव्वाणमेगदेसधरा य। तदो णक्खत्ताइरियो जयपालो पांडुसामी धुवसेणो कंसाइरियो त्ति एदे पुरिसोलीकमेण पंच वि आइरिया एक्कारसंगधारया जादा, चोद्दसण्हं पुव्वाणमेगदेसधरा य। तदो सुभद्दो जसभद्दो जसबाहू लोहज्जो त्ति एदे चत्तारि वि आइरिया आयारंग–धरा सेसंग–पुव्वाणमेगदेसधरा य। तदो सव्वेसिमंग–पुव्वाणमेगदेसो आइरियपरंपराए आगच्छमाणो धरसेणाइरियं संपत्तो।

तेण वि सोरट्ठ–विसय–गिरि–णयर–पट्टण–चंदगुहा–ठिएण अट्ठंगमहा–णिमित्तपारएण गंथ–वोच्छेदो होहिदि त्ति जादभएण पवयण–वच्छलेण दक्खिणावहाइरियाणे महिमाए मिलियाणं लेहो पेसिदो। लेहट्ठिय–धरसेणाइरिय–वयणमवधारिय तेहि वि आइरिएहि बे साहू गहण–धारण–समत्था धवलामल– बहुविह–विणय–विहूसियंगा सील–माला–हरा गुरु पेसणासण–तित्ता देस–कुलजाइसुद्धा सयल–कला– पारया तिक्खुत्ताबुच्छियाइरिया अंधविसय–वेण्णायडादो पेसिदा। तेसु आगच्छमाणेसु रयणीए पच्छिमभाए कुंदेंदु–संखवण्णा सव्वलक्खण–संपुण्णा अप्पणो कय–तिप्पदाहिणा पाएसु णिसुढिय–पदियंगा वे वसहा सुमिणतरेणं धरसेणभडारएण दिट्ठा। एवंविहसुमिणं दट्ठूण तुट्ठेण धरसेणाइरिएण 'जयउ सुय–देवदा' त्ति संलवियं। तद्दिवसे चेय ते दो वि जणा संपत्ता धरसेणाइरियं। तदो धरसेण–भयवदो किदियम्मं काऊण दोण्णि दिवसे बोलाविय तदियदिवसे विणएण धरसेणभडारओ तेहिं विण्णत्तोकृ'अणेण कज्जेणम्हा दो वि जणा तुम्हं पादमूलमुगवया' त्ति। 'सुट्ठु भद्द' त्ति भणिऊण धरसेण– भडारएण दो वि आसासिदा। तदो चिंतिदं भयवदाकृ

**सेलघण–भग्गघड–अहि–चालणि–महिसाऽवि–जाहय–सुएहिं।**
**मट्टिय–मसय–समाणं वक्खाणइ जो सुदं मोहा।।**
**दढ–गारव–पडिबद्धो विसयामिस–विस–वसेण घुम्मंतो।**
**सो भट्ट–बोहि–लाहो भमइ चिरं भव–वणे मूढो।।**

इदि वयणादो जहाछंदाईणं विज्जा–दाणं संसार–भय–वद्धणमिदि चिंतेऊण सुहसुमिणदंसणेणेव अवगय–पुरिसंतरेण धरसेणभयवदा पुणरवि ताणं परिक्खा काउमाढत्ता 'सुपरिक्खा हियय–णिव्वुइकरेति।' तदो ताणं तेण दो विज्जाओ दिण्णाओ। तत्थ एगा अहियक्खरा, अवरा विहीणक्खरा। एदाओ छट्ठोववासेण सहेहु त्ति। तदो ते सिद्धविज्जा विज्जा–देवदाओ पेच्छति, एया उद्दंतुरिया अवरेया काणिया। एसो देवदाणं सहावो ण होदि त्ति चिंतेऊण मंतव्वायरण–सत्थ–कुसलेहिं हीणाहियक्खराणं छुहणावणयण–विहाणं काऊण पढंतेहिं दो वि देवदाओ सहाव–रूवट्ठियाओ दिट्ठाओ। पुणो तेहिं धरसेणभयवंतस्स जहावित्तेण विणएण णिवेदिदे सुट्ठु तुट्ठेण धरसेणभडारएण सोम्मतिहि–णक्खत्तचारे गंथो पारद्धो। पुणो कमेण वक्खाणंतेण तेण

Jain Vishva Bharati Institute (Deemed University) Ladnun

आसाढ–मास–सुक्क–पक्ख–एक्कारसीए पुव्वण्हे गंथो समाणिदो। विणएण गंथो समाणिदो त्ति तुट्ठेहिं भूदेहिं तत्थेयस्स महदी पूजा पुप्फ–गलि–संख–तूर–रव–संकुला कदा। तं दट्ठूण तस्स 'भूदबलि' त्ति भडारएण णामं कयं। अवरस्स वि भूदेहि पूजिदस्स अत्थ–वियत्थ–ट्ठिय–दंत–पंतिमोसारिय भूदेहि समीकय–दंतस्सय 'पुप्फयंतो' णामं कयं।

पुणो ते तद्दिवसे चेव पेसिदा संता 'गुरु–वयणमलंघणिज्जं' इदि चिंतिऊणागदेहि अंकुलेसरे बरिसा–कालो कओ। जोगं समाणीय जिणबालियं दट्ठूणं पुप्फयंताइरियो वणवासि–विसयं गदो। भूदबलिभडारओ वि दमिल–विसयं गदो। तदो पुप्फयंताइरिएण जिणबालिदस्स दिक्खं दाऊण विंसदि–सुत्ताणि करिय पढाविय पुणो सो भूदबलिभयवंतस्स पासं पेसिदो। भूदबलिभयवदा जिणबालिदपासे दिट्ठ–विंसदि–सुत्तेण अप्पाउओ त्ति अवगय–जिणबालिदेण महाकम्म–पयडि–पाहुडस्स वोच्छेदो त्ति समुप्पण्ण–बुद्धिणा पुणो दव्व–पमाणाणुगममादिं काऊण गंथ–रयणा कदा। तयो एयं खंड–सिद्धंतं पडुच्च भूदबलि–पुप्फयंताइरिया वि कत्तारो उच्चंति।

## 12. षट्खंडागम लेखन कथा

उस केवलज्ञानी महावीर के द्वारा कहे हुए अर्थ को उसी काल में और उसी क्षेत्र में ही क्षयोपशम से उत्पन्न चार प्रकार के निर्मल बुद्धि से सम्पन्न, सम्पूर्ण वेद–वेदांग में पारंगत, जीव– अजीव के विषय में हुए सन्देह के विनाश के लिए वर्द्धमान के पादमूल में आये हुए गोतमगोत्री इन्द्रभूति नामक ब्राह्मण ने धारण कर लिया। कहा भी है–

गौतमगोत्री, विप्रवर्णी चारों वेद और षडंगविद्या का पारगामी, शीलवान और ब्राह्मणों में श्रेष्ठ इन्द्रभूति नामक प्रथम गणधर थे।

इसके पश्चात् भावश्रुतरूप पर्याय से परिणत उस इन्द्रभूमि ने बारह अंग और चौदह पूर्वरूप ग्रंथों की एक ही मुहुर्त्त में क्रम से रचना की। अतः भावश्रुत और अर्थ–पदों के तीर्थकर कर्ता हैं। तथा तीर्थकर के निमित्त से श्रुतपर्याय से परिणत हुए अतः द्रव्यश्रुत के कर्त्ता गौतम गणधर हैं। इस तरह ग्रंथ–रचना हुई। उन गौतम गणधर ने भी दोनों प्रकार का श्रुतज्ञान लोहार्य को दिया। उन्होंने भी जम्बूस्वामी को दिया। परिपाटी क्रम से ये तीनों ही सकलश्रुत के धारक कहलाये। और यदि अपरिपाटी क्रम से संख्यात हजार सकल श्रुत के धारी हुए।

गौतमस्थविर, लोहाचार्य और जंबूस्वामी–ये तीनों ही सात प्रकार की ऋद्धियों से युक्त और सकल–श्रुतरूपी सागर के पारगामी होकर केवलज्ञान को उत्पन्न कर निर्वाण को प्राप्त हुए। इसके बाद विष्णु, नन्दिमित्र, अपराजित, गोवर्धन और भद्रबाहु–ये पांचों ही आचार्य परिपाटी–क्रम से चौदह पूर्वके धारी हुए।

उसके बाद विशाखाचार्य, प्रोष्ठिल, क्षत्रिय, जयाचार्य, नागाचार्य, सिद्धार्थस्थविर, धृतिसेन, विजयाचार्य, बुद्धिल्ल, गंगदेव और धर्मसेन–ये ग्यारह अंग और उत्पादपूर्व आदि दश पूर्वों के धारक तथा शेष उपरिम चार पूर्वों के एकदेश के धारक हुए। तदनन्तर नक्षत्राचार्य, जयाचार्य, पाण्डुस्वामी, धरसेन, कंसाचार्य ये पांचों ही आचार्य परिपाटी–क्रम से सम्पूर्ण ग्यारह अंगों के और चौदह पूर्वों के एकदेश के धारक हुए। उसके बाद सुभद्र, यशोभद्र, यशोबाहु और लोहार्य ये चारों ही आचार्य सम्पूर्ण आचारांग के धारक और शेष अंग तथा पूर्वों के एकदेश के धारक हुए। इसके बाद सभी अंग और पूर्वों का एकदेश आचार्य परम्परा से आता हुआ धरसेन आचार्य को प्राप्त हुआ।

सौराष्ट्र (गुजरात–काठियावाड़) देश के गिरिनगर नामके नगर की चन्द्रगुफा में रहने वाले, अष्टांग महानिमित्त के पारगामी, प्रवचन–वत्सल और आगे अंग–श्रुत का विच्छेद हो जायेगा इस कारण उत्पन्न हो गया है भय जिनको ऐसे उस धरसेनाचार्य ने महामहिमा अर्थात् पंचवर्षीय साधु–सम्मेलन में सम्मिलित हुए दक्षिणापथ के आचार्यों के पास एक लेख भेजा। लेख में लिखे गये धरसेनाचार्य के वचनों को भलीभांति समझकर उन आचार्यों ने शास्त्र के अर्थ को ग्रहण और धारण करने में समर्थ, नाना प्रकार की उज्ज्वल और निर्मल विनय से विभूषित अंगवाले, शीलरूपी माला के धारक, गुरुओं द्वारा भेजे हुए भोजन से तृप्त हुए, देश, कुल और जाति से शुद्ध, (अर्थात् उत्तम जाति, उत्तम देश और उत्तम कुल में उत्पन्न) समस्त कलाओं में पारंगत और तीन बार पूछा है आचार्यों से जिन्होंने (अर्थात् आचार्यों से तीन बार आज्ञा लेकर) ऐसे दो साधुओं को आन्ध्र देश में बहनेवाली वेणानन्दी के तट से भेजा।

मार्च में उन दोनों साधुओं के आते समय, जो कुन्द के पुष्प, चन्द्रमा और शंख के समान सफेद वर्णवाले हैं, जो समस्त लक्षणों से परिपूर्ण है, जिन्होंने आचार्य (धरसेन) की तीन प्रदक्षिणा दी हैं और जिनके अंग नम्रित होकर आचार्य के चरणों में पड़

Jain Vishva Bharati Institute (Deemed University), Ladnun

गये हैं, ऐसे दो बैलों को धरसेन भट्टारक ने रात्रि के पिछले भाग में स्वप्न में देखा। इस प्रकार के स्वप्न को देखकर संतुष्ट हुए धरसेनाचार्य ने 'श्रुतदेवता जयवन्त हो' ऐसा उच्चारण किया। उसी दिन ही वे दोनों धरसेनाचार्य के पास पहुंचे। उसके बाद धरसेनाचार्य की पादवन्दना आदि कृतिकर्म करके और दो दिन बिताकर तीसरे दिन उन दोनों ने धरसेनाचार्य से निवेदन किया–इस कार्य से हम दोनों आपके पादमूल को प्राप्त हुए हैं। 'अच्छा है, कल्याण हो' इस प्रकार धरसेन भट्टारक ने उन दोनों को आश्वासन दिया। इसके बाद भगवान धरसेन ने विचार किया कि–"शैलघन, भग्नघट, अहि (सर्प), चालनी, महिष, मेंढा, जोंक, शुक, माटी और मशक के समान श्रोताओं को जो मोह से श्रुत का आख्यान करता है, वह मूढ दृढ रूप से ऋद्धि आदि तीनों प्रकार के गौरवों के आधीन होकर विषयों की लोलुपतारूपी विष के वश में मूर्च्छित हो, बोधि अर्थात् रत्नत्रयी की प्राप्ति से भ्रष्ट होकर भव–वन में चिरकाल तक परिभ्रमण करता है।"

इस वचन के अनुसार स्वच्छन्दतापूर्वक आचरण करने वाले श्रोताओं को विद्या देना संसार और भय को ही बढ़ाने वाला है, ऐसा विचारकर शुभ स्वप्न के देखने मात्र से ही यद्यपि धरसेन भट्टारक ने उन आये हुए दोनों साधुओं के अन्तर अर्थात् विशेषता को जान लिया था, फिर भी उनकी परीक्षा लेने का निश्चय किया, क्योंकि उत्तम प्रकार से ली गई परीक्षा हृदय में सन्तोष को उत्पन्न करती है। इसके बाद उन दोनों को धरसेन ने दो विद्याएं दीं। उनमें से एक अधिक अक्षरवाली थी और दूसरी हीन अक्षरवाली थी। विद्या देकर कहा–इनको षष्ठभक्त उपवास अर्थात् दो दिन के उपवास से सिद्ध करो। इसके बाद जब उनको विद्याएं सिद्ध हुईं, तो उन्होंने विद्या की अधिष्ठात्री देवियों को देखा, एक बाहर निकले हुए दांत वाली थी और दूसरी कानी। 'विकृतांग होना देवताओं का स्वभाव नहीं होता' इस प्रकार उन दोनों ने विचारकर मंत्र–संबंधी व्याकरण शास्त्र में कुशल उन दोनों ने हीन अक्षरवाली विद्या में अधिक अक्षर मिलाकर और अधिक अक्षरवाली विद्या में से अक्षर निकालकर मंत्र को पढ़ना प्रारम्भ किया, जिससे वे दोनें विद्यादेवी अपने स्वभाव और अपने सुन्दर रूप में स्थित दिखलाई पडीं। तदनन्तर भगवान घरसेन के समक्ष योग्य विनय सहित उन दोनों के समस्त वृत्तान्त के निवेदन करने पर 'बहुत अच्छा' इस प्रकार संतुष्ट हुए धरसेन भट्टारक ने शुभ तिथि, शुभनक्षत्र और शुभ वार में ग्रंथ का पढ़ाना प्रारम्भ किया। इस तरह क्रम से व्याख्यान करते हुए धरसेन भगवान से आषाढ़ मास के शुक्लपक्ष की एकादशी के पूर्वाह्नकाल में ग्रंथ समाप्त किया। विनयपूर्वक ग्रंथ समाप्त किया, इसलिए संतुष्ट हुए भूत जाति के व्यन्तर देवों ने उन दोनों में से एक की, पुष्प, बलि तथा शंख और तूर्य जाति के वाद्यविशेष के नाद से व्याप्त बड़ी भारी पूजा की। उसे देखकर धरसेन भट्टारक ने उसका 'भूतबलि' यह नाम रखा। तथा जिनकी भूतों ने पूजा की और अस्त–व्यस्त दंतपंक्ति को दूर करके भूतों ने जिनके दांत समान कर दिये हैं ऐसे दूसरे का भी ध रसेन भट्टारक ने 'पुष्पदंत' नाम रखा।

तदनन्तर उसी दिन वहां से भेजे गये उन दोनों ने 'गुरु के वचन अलंघनीय होता है' ऐसा विचारकर आते हुए अकंलेश्वर (गुजरात) में वर्षाकाल बिताया। वर्षायोग को समाप्त कर और जिनपालित को देखकर पुष्पदंत आचार्य तो वनवासि देश को चले गये और भूतबलि भट्टारक तमिल देश को चले गये। तत्पश्चात् पुष्पदंत आचार्य ने जिनपालित को दीक्षा देकर बीस प्ररूपणा गर्भित सत्प्ररूपणा के सूत्र बनाकर और जिनपालित को पढ़ाकर अनन्तर उन्हें भूतबलि आचार्य के पास भेजा। तदनन्तर जिन्होंने जिनपालित के पास बीस प्ररूपणान्तर्गत सत्परूपणा के सूत्र देखें हैं और पुष्पदन्त आचार्य अल्पायु हैं, इस प्रकार जिन्होंने जिनपालित से जान लिया है, अतएव महाकर्मप्रकृति प्राभृत का विच्छेद हो जायेगा इस प्रकार उत्पन्न हुई है बुद्धि जिनको ऐसे भगवान् भूतबलि ने द्रव्यप्रमाणानुक्रम को आदि लेकर ग्रंथ रचना की। इसलिये खण्डसिद्धान्त की अपेक्षा भूतबलि और पुष्पदन्त आचार्य भी श्रुत के कर्ता कहे जाते हैं।

**कठिन शब्दों के अर्थ**

विप्पो——ब्राह्मण
रयणा——रचना
कदा——किया
तत्तो——उससे
संचारिदं——संचारित किया, दिया
तिण्णि——तीन
होहिदि——हो जायेगा
जादभएण——उत्पन्न भय से
लेहो——लेख
पेसिदो——भेजा
अवधारिय——धारणकर
दिट्ठा——देखा
संलवियं——कहा



Jain Vishva Bharati Institute (Deemed University) Ladnun

निव्वुइकरेति——शांति करता है
अवरा——दूसरी
भूदेहि——भूतों द्वारा
इदि——इति, इस प्रकार
दाऊण——देकर
पडुच्च (प्रतीत्य)——अपेक्षा करके

**1. वस्तुनिष्ठ प्रश्न**

(क) इन्द्रभूति ..... गोत्र के थे।
(ख) द्रव्यश्रुत के कर्त्ता ..... थे।
(ग) धरसेनाचार्य के पास ..... साधु आये।
(घ) दोनों साधु परम ..... थे।
(ङ) भूतों द्वारा पूजित मुनि का नाम ..... था।

**2. निबन्धात्मक प्रश्न**

1. शिष्य को कैसा होना चाहिए, अपना मन्तव्य प्रस्तुत कीजिए।
2. धरसेनाचार्य ने दोनों शिष्यों का परीक्षण कैसे की।
3. श्रुत–परम्परा का क्रम किस तरह चलता गया प्रस्तुत पाठ के आधार पर बतायें।

## 13. उज्जममेव फलदाणे पमाणेइ

एगया भोयनरिंदस्स सहाए दुण्णि विउसा समागया, तेसु एगो नियइवाई–'जं भावी तं नन्नहा होइ', अओ सो उज्जमं विणा भावि चिय मन्नेइ। अन्नो पंडिओ 'उज्जममेव फलदाणे पमाणेइ' जओ अलसा कं पि फलं न, लहंति, जओ वुत्तं–

**"उज्जमेण हि सिज्झंति कज्जाइं न पमाइणो।**
**न हि सुत्तस्स सिंहस्स पविसंति मिगा मुहे।।"**

एवं बीओ उज्जमेण फलवाई अत्थि। भोयनरिंदेण ते दोवि आगमणपयोयणं पुट्ठा। ते कहिंति–'विवायनिण्णयत्थं तुम्हाणमंतिए अम्हे आगया।' रण्णा वुत्तं–'तुम्हाणं जो विवाओ अत्थि तं कहेइ।' तया ते दुण्णि वि नियं नियं मयं जुत्तिपुरस्सरं निवइणो पुरओ ठवेइ। राया विआरेइ–'एत्थ किं परमत्थओ सच्चं? तं च कहं जाणिज्जइ।' तया निण्णेउमसमत्थो कालियासं पंडिअं पुच्छइ–'एएसिं नाओ कहं किज्जइ? किं वा उत्तरं दिज्जइ?' कालियासो कहेइ–"हे नरिंद! जह दक्खाए रसो चक्खिज्जमाणो महुरो खट्टो वा नज्जइ, तह य एयाण विवाओ कसिज्जइ, तेण सच्चो असच्चो वा जाणिज्जइ।" राया कहेइ–"कसण–कियाए अत्थि को वि उवाओ? जइ सिया, तया कसिज्जउ।"

कालियासो तया ते दुण्णि विउसे बोल्लाविऊण तेसिं नेत्ताइं पडेण बंधित्ता, दुवे य हत्थे पिट्ठस्स पच्छा बंधिअ, पाए गाढयरं निअंतिअ अंधयारमए अववरगे ते दुण्णि विउसा ठविआ कहियं च–"जो दइव्ववाई, सो दइव्वेण छुट्टउ, जो उज्जमवाई, सो उज्जमेण छुट्टेज्जा।" एवं कहिऊण कालियासो पच्छा नियत्तो।

तओ सो नियइवाई 'जं भावि तं होहिइ' त्ति मन्नमाणो निचिंतो समाणो सुहेण तत्थ सुत्तो। उज्जमवाई जो, सो छुट्टणाय बहुं उज्जमं कुणेई, हत्थे पाए य भूमीए उवरि जओ तओ घंसेइ, परंतु गाढयरबंधत्तणेण जया सो न छुट्टिओ, तया तं निइयवाई विउसो कहेइ–किं मुहा उज्जमेण कएण, एसो निविडो बंधो कया वि न छुट्टिहिइ? निप्फलेण बलहाणिकारणायासेण किं? खुहापिवासापीलिआणं पि अम्हाणं नियईए सरणं चिअ वरं।

एवं सोच्चा उज्जमवाइपंडिओ छुट्टणपयासं न चएइ। छुट्टणाय अईव पयासं कुणेइ। एवं तेसिं दुवे दिणा अइक्कंता। भोयणभावेण शरीरं पि ताणमईव खीणं संजायं, कज्जकरणे वि असमत्थं जायं, तह वि उज्जमवाई पयासहीणाववरगे इओ तओ भममाणो बंधणाओ मोअणाय जत्तं न मुंचेइ। नियइवाई तं वएइ–'अहुणा परमेसरस्स नामं गिण्हसु, किमायासकरणेण फलरहिएण?' तया सो उज्जमवाई कहेइ–'समावन्ने वि मरणे उज्जमो कया वि न मोत्तव्वो, सया वि उज्जमसीलेण जणेण होयव्वं।' नियइवाई बोल्लेइ–'जइ एवं ता अंधारिए एयंमि अववरगे पास हत्थे य घंसमाणा भमंता चिट्ठेइ, किं उज्जमो फलं दाही?'

तह वि सो उज्जमवाई पंडिओ खीणसरीरबलो तइअदिणंमि भित्तिदिसाए भमंतो हत्थे पाए य घंसमाणो पडंतो पुणरवि घसंतो भमंतो दइववसाओ अववरगस्स कोणगे तत्थ पडिओ जत्थ उंदुरस्स बिलं वट्टइ। तस्स हत्था बिलोवरिं समागया। तत्थ रंधमज्झट्ठिओ मूसओ बाहिरं निग्गंतुमचयंतो दंतेहि तस्स हत्थबंधणं छिंदेइ, तया सो छुट्टिओ समाणो नेत्तपडं पायबंधणं च अवसारेइ, सो तया अववरगे गाढयरतमेण किमवि न पासेइ। अस्स अववरगस्स दारं कत्थ अत्थि त्ति भित्तिफासणेण

Jain Vishva Bharati Institute (Deemed University), Ladnun

निरिक्खंतेण तेण कमेण दारं लद्धं। बाहिरओ पिणद्धं तं पासिऊण कट्ठेण तं दारं मूलाओ उत्तारिय बाहिरं सो निग्गओ। पच्छा देव्ववाइं पंडिअं पि बंधणाओ ओमोएइ।

पच्छण्णट्ठाणे ठिओ कालियासो सव्वं निरूवेइ। जया ते दुवे वाहिरनिग्गए पासेइ, पासित्ता ते घेत्तूण नियघरंमि गओ। सम्मं अन्नपाणेहि सक्कारित्ता सम्माणित्ता य निवसहाए ते विउसे गहिऊण समागओ। भोयनरिंदं कहेइकृ'उज्जमेण जिअं, भग्गेण पराइअं' ति, जओ उज्जमवाई पंडिओ उज्जमेण छुट्टिओ, अवरो उज्जमाभावाओ न छुट्टिओ। जो दइव्वमेव पहाणं मन्नेइ सो पमाई कहिज्जइ। जत्थ पमाओ आलस्सं तत्थ खुहा–पिवासा–दुक्खं–मरणं च अवस्सं संभवेइ। जो उज्जमं कुणइ, सो कयाइ दुक्खाओ मुच्चइ, किं पि य फलं पावेइ। दइव्ववाई उज्जमेण विणा फलं न लहेज्जा। तओ उज्जमो पहाणो णायव्वो। तओ भोयनरिंदो उज्जमवाइपंडिअं दव्ववत्थाहूसणेहिं सम्माणेइ। नीइसत्थे वि–'उज्जमे णत्थि दालिद्दं।' अओ उज्जमो कयावि न मोत्तव्वो।

उवएसो–

**उज्जमस्स फलं नच्चा विउसदुगनायगे।**
**जावज्जीवं न छुड्डेज्जा उज्जमं फलदायगं।।**

## 13. उद्यम ही फल देने में प्रमाण है

एक बार भोजराजा के सभा में दो विद्वान् आये, उनमें एक नियतिवादी था, 'जो होना है उससे अन्यथा नहीं होता' अतः वह उद्यम के बिना सिर्फ नियति को ही मानता था। दूसरा पंडित 'उद्यम ही फल देने में प्रमाण है' इसलिए आलसी कुछ भी फल प्राप्त नहीं करते, कहा भी गया है–

**उद्यम (पराक्रम) से ही कार्य सिद्ध होते हैं प्रमाद से नहीं।**
**सोये हुए सिंह के मुख में मृग (हरिण) प्रवेश नहीं करते।।**

इस प्रकार दूसरा उद्यम से ही फलवादी था। भोजराजा ने उन दोनों को ही आने का प्रयोजन पूछा। वे कहते हैं–विवाद का निर्णय करने के लिए तुम्हारे पास आये हैं। राजा ने कहा– तुम्हारे जो विवाद है उसे कहो। तब उन दोनों ने ही स्व–स्वमत युक्तिपूर्वक राजा के पास रख दिया। राजा सोचता है यहां वास्तविक सत्य क्या है? और उसे कौन जानता है? तब निर्णय करने में असमर्थ वह कालिदास पंडित से पूछता है–इनका न्याय कैसे किया जाये? क्या उत्तर दिया जाये? कालिदास कहता है–हे नरेन्द्र! जैसे द्राक्षा (अंगूर) के रस को चखने पर पता चलता है कि मीठा है अथवा खट्टा, वैसे ही इनके विवाद का निर्णय होना चाहिए। जिससे सत्य अथवा असत्य जाना जायेगा। राजा कहता है–परीक्षा करने का कोई उपाय है? यदि है, तो परीक्षा करनी चाहिए।

तब कालिदास उन दोनों विद्वानों को बुलाकर उनके आंखों को कपड़े से बाधंकर और दोनों हाथों को पीठ के पीछे बाधंकर पैर में सघन बेड़ी डालकर अंधकारमय कमरे में उन दोनों विद्वानों को रख दिया और कहा–जो भाग्यवादी है, वह भाग्य से छूटे और जो उद्यमवादी है, वह उद्यम से छूटे। ऐसा कहकर कालिदास वापस लौट गया। तब वह नियतिवादी "जो नियति में है वही होगा" ऐसा मानता हुआ निश्चित होकर सुखपूर्वक वहां सो गया और जो उद्यमवादी था वह छुटने के लिए बहुत प्रयत्न करता है, हाथ और पैर को पृथ्वी के ऊपर जहां तहां घिसता है, किन्तु सघन बंधन के कारण जब वह नहीं छुटता तब वह नियतिवादी विद्वान् कहता है–व्यर्थ पराक्रम करने से क्या? सघन बंधन कभी भी नहीं खुलेगा? निष्फल बल के हानि करने से क्या? भूख और प्यास से पीड़ित भी हम लोगों का नियति के शरण लेना ही ठीक है।

ऐसा सुनकर उद्यमवादी पंडित छूटने के प्रयास को नहीं छोड़ता। छूटने के अधिक प्रयास करता है। इस प्रकार उनके दो दिन बीत गये। भोजन के अभाव में उनके शरीर भी अतिक्षीण हो गये, कार्य करने में भी असमर्थ हो गये, फिर भी उद्यमवादी प्रकाशहीन कमरे में इधर–उधर घूमता हुआ बंधन से मुक्ति के लिए यत्न नहीं छोड़ता। नियतिवादी उसे कहता है–अब परमेश्वर के नाम का स्मरण करो, फलरहित प्रयत्न करने से क्या? तब वह उद्यमवादी कहता है–मरण के आ जाने पर भी उद्यम कभी भी नहीं छोड़ना चाहिए, मनुष्य को सदा प्रयत्नशील होना चाहिए। नियतिवादी कहता है–यदि ऐसा है तो अंधेरे में इस कमरे में हाथ–पैर घिसते हुए, घूमते रहो, क्या उद्यम फल देगा?

Jain Vishva Bharati Institute (Deemed University), Ladnun

फिर भी वह उद्यमवादी पंडित शरीरबल से क्षीण तीसरे दिन, दिवाल की दिशा में घूमता हुआ हाथ और पैर को घिसता हुआ गिरता हुआ पुनः घिसते हुए, घूमता हुआ भाग्यवश कमरे के कोने में वहां गिरा जहां चूहे का बिल था। उसके हाथ बिल के ऊपर आ गये। वहां बिल के मध्य में स्थित चूहा बाहर निकलने में असमर्थ होता हुआ दांतों से उसके हाथो के बंधन को काट दिया। तब वह छूटकर आंखों की पट्टी और पैरों के बंधन को दूर कर देता है, तब वह कमरे में सघन अंधेरे के कारण कुछ भी नहीं देख पाता। इस कमरे का द्वार कहां पर है, इस प्रकार दिवाले के स्पर्श करते हुए निरीक्षण करते हुए उसने क्रमशः द्वार को प्राप्त कर लिया। बाहर से बन्द द्वार को देखकर लकड़ी से उस दरवाजे को मूल से ही निकालकर वह बाहर निकल गया। बाद में दैववादी पंडित को भी बंधन से मुक्त कर दिया।

गुप्तस्थान पर स्थित कालिदास सब कुछ देख रहा था। जब उन दोनों को बाहर निकलते हुए देखता है, देखकर उन्हें अपने घर लेकर गया। अच्छे भोजन–पानी से सत्कार सम्मान का राजा की सभा में उन विद्वानों को लेकर गया। भोजराजा कहता है–उद्यम जीत गया। भाग्य पराजित हो गया, क्योंकि उद्यमवादी पंडित उद्यम से (प्रयत्न से) छूट गया, दूसरा उद्यम के अभाव से नहीं छूटा। जो भाग्य को ही प्रधान मानता है वह प्रमादी कहलाता है। जहां प्रमाद और आलस हैं वहां भूख– प्यास, दुःख और मरण अवश्य होता है। जो पराक्रम करता है, वह कभी भी दुःख से मुक्त हो जाता है और कुछ भी फल अवश्य प्राप्त कर लेता है। भाग्यवादी उद्यम के बिना फल प्राप्त नहीं कर सकता। अतः उद्यम को ही प्रधान जानना चाहिए। तब राजाभोज उद्यमवादी पंडित को द्रव्य (दान) वस्त्र–आभूषणादि से सम्मान करता है। नीतिशास्त्र में भी (कहा गया है) 'उद्यम में दरिद्रता नहीं है।' अतः पराक्रम कभी नहीं छोड़ना चाहिए।

उपदेश–दो श्रेष्ठ विद्वानों के उद्यम के फल को जानकर फलदायक उद्यम को यावज्जीवन नहीं छोड़ना चाहिए।

**कठिन शब्दों के अर्थ**

दुण्णि——दो
जुत्तिपुरस्सरं——युक्तिपूर्वक
नाओ——न्याय
दक्खाए——अंगुर के
चक्खिज्जमाणो——चखे जाने पर
खट्टो——खट्टा
कसण——क्रियाएं
बोल्लाविऊण——बुलाकर
छुट्टउ——छूटे
निअंतिअ——बेड़ी
घंसेइ——घर्षण करता है।
उंदुरस्स——चूहे के
पिणद्धं——बन्द
उत्तारिय——उतार दिया
ओमेएइ——छुड़ा लेता है
नच्चा——जानकर
छुड्डेज्जा——नहीं छोड़ना चाहिए

**1. वस्तुनिष्ठ प्रश्न**

(क) कार्य ..... से ही सिद्ध होते हैं।
(ख) कालिदास दोनों के आखों में ..... बांध दिया।
(ग) दोनों विद्वानों को ..... कमरे में बन्द कर दिया।
(घ) ..... ने उसके हाथों के बंधन काट दिये।
(ङ) ..... यावज्जीवन नहीं छोड़ना चाहिए।

**2. निबन्धात्मक प्रश्न**

1. इस पाठ के आधार पर कालिदास के निर्णय करने की क्षमता को प्रस्तुत कीजिए?
2. पाठ की समीक्षा अपनी भाषा–शैली में करें।
3. पुरुषार्थवादी किस प्रकार बन्धन से छूटता है सविचवार लिखिए।
4. क्या भाग्य भरोसे बैठना चाहिए अपना मन्तव्य प्रस्तुत करें।

## 14. कुमारमंत्तिस्स दंडविहि

**जारिसो माणवो होइ सिक्खणं तत्थ तारिसं।**
**समावराहचोरेसुं कुमारस्सेह नायग।।**

पाडलिउत्तनयरे जियसत्तुनरिंदस्स कुमारो नाम चउबुद्धिनिहाणो पहाणो मंती आसि। सो जारिसा अवराहिणो आगच्छंति ताणं परिक्खिअ, तारिसं दंडं देइ। एगया कोट्टवालेण चउरो चोरा कुमारमंतिणो पुरओ ठविआ। कुमारमंती तेसिं

Jain Vishva Bharati Institute (Deemed University) Ladnun

बुद्धीए परिक्खं करिऊण दण्डं दाहीअ, जहा पढमचोरस्स उत्तं– "तुं भद्दओ वि होऊण, एरिसं अकज्जं काउं तुमं किं जुत्तं? किं तब एयं सोहेइ? गच्छसु तुं, मा कयावि एवं कुणेज्जा" इअ वोत्तूण सो विसज्जिओ।

बीअं चोरं आहूय मंतिणा सावमाण परुसक्खर–पुरस्सरं वुत्तं–"हे मुरक्खसेहर सुकुलुप्पन्नेणावि तुमए एरिसं कज्जं कयं, किं ते लज्जा वि नागया? गच्छसु, मुहं मसीए लिंपसु, मा मुहं पुणो दंसेसु" त्ति सो वि विसज्जिओ।

तइअं चोरं बोल्लाविऊण, लत्ताए पेहरि

अ, 'तुम्हाओ पाहाणो वि सोहणो' इअ सतिरक्कारं अद्धचंदेण निक्कासिओ। चउत्थं तु पच्छामुहं किच्चा गद्दभारोहिऊण सव्वनयरंमि भमाडिउमाइट्ठो। अवराहस्स एगत्ते भिन्नभिन्नदंडो एएसिं कहं दिन्नो कुमारमंतिण त्ति अच्छरिअसंजुआ सव्वे सहाजणा जाया। तेसिं हिययगयभावं नाऊण 'चउण्हं चोराणं किं जायं' ति निरूवणत्थं रण्णा चरपुरिसो पेसिओ।

एगपहरंमि गए सो चरपुरिसो समागओ समाणो नरिंदं कहेइ–'महाराया! पढमो कोमलेण वयणेण उवालंभिओ संतो गेहे गंतूण, अप्पं पि उवलंभं असहंतो जीहं दंतेहिं पिसिऊण मच्चुं पत्तो। बीओ परुसक्खरेहिं तिरक्करिओ सो 'अहं कयावि मुहं न दंसिस्सं' ति कहिऊण विएसं गओ।

तइओ जो सहामच्झे ताडिओ, सो गिहाओ बाहिरं गंतुं न इच्छेज्जा। चउत्थो उ जो गद्दहमारोहिऊण नयरभमणमाइट्ठो सो उ गद्दहोवरिं परंमुहमुववेसिअ नयरं भमाडिज्जमाणो, विविहावमाणवयणेहिं च पउरेहिं हिलिज्जमाणो निल्लज्जो नियघरसमीवं समागओ संतो तक्कोउहल्ल दंसणत्थागयनिअभज्जं कहेइकृ'अहुणाहं अवसिट्ठदुण्णिरच्छाओ भमिउं सिग्घं आगमिस्सं, तओ तुमं जलं सिग्घं उण्हं कुणेसु'–इअ चरपुरिंसकहिअवुत्तंतं सुणिऊण सव्वे कुमारमंतिस्स बुद्धिं पसंसन्ति।

## 14. कुमार मंत्री की दंडविधि

### जैसा मनुष्य होता है उसकी शिक्षा भी वैसी होती है। (जैसे) समान अपराध करने वाले चोरों में कुमार की बुद्धिमत्ता।।

पाटलिपुत्र नगर में जितशत्रु राजा के कुमार नामका चार प्रकार के बुद्धि का निधान प्रधान मंत्री था। वह जैसे अपराधी आते उनकी परीक्षा कर वैसा ही दंड देता था। एकबार कोतवाल चार चोरों को कुमार मंत्री के पास लाया। कुमार मंत्री उनकी बुद्धि की परीक्षा करके दंड देता है, जैसे–प्रथम चोर को कहा–तुम भद्र (सज्जन) होकर भी ऐसे अकरणीय को करना क्या तुम्हारे लिए युक्त है? क्या तुम्हें यह शोभा देती है? तुम जाओ, कभी भी ऐसा मत करना ऐसा कहकर उसे छोड़ दिया।

दूसरे चोर को बुलाकर मंत्री अपमान सहित कठोर और रुक्ष पूर्वक कहता है–हे मूर्खरेखर! अच्छे कुल में उत्पन्न होकर भी तुमने ऐसा कार्य किया, क्या तुम्हें शर्म भी नहीं आई? जाओ, मुंह को स्याही से पोत लो, पुनः मुख मत दिखाना ऐसा कहकर उसे भी छोड़ दिया।

तीसरे चोर को बुलाकर लात से प्रहार कर कहा–'तुमसे तो पत्थर भी अच्छा है।' इस प्रकार तिरस्कार पूर्वक गला पकड़कर निकाल दिया। चौथे को तो पीछे मुख करके गदहे में बिठाकर सम्पूर्ण नगरी में घुमाने का आदेश दिया। एक ही प्रकार के अपराध का अलग–अलग दण्ड कुमार मंत्री ने इन्हें कैसे दिया, इस प्रकार सभी सभासद आश्चर्य से युक्त हो गये। उनके हृदयगत भावों को जानकर 'चारों चोरों का क्या हुआ' इस बात का ज्ञात कराने के लिए राजा ने गुप्तचर को भेजा।

गया हुआ वह गुप्तचर एक प्रहर में आकर राजा से कहता है–महाराज, पहले चोर को कोमल शब्दों से उपालम्भ दिये जाने पर घर जाकर थोड़े से भी उपालम्भ को नहीं सहता हुआ जीभ को दांतों से पीसकर मृत्यु को प्राप्त कर लिया। कठोर शब्दों से तिरस्कृत दूसरा चोर "मैं कभी भी मुंह नहीं दिखाऊंगा" ऐसा कहकर विदेश चला गया।

जो तीसरा चोर सभा के मध्य में मारा गया, वह घर से निकलना नहीं चाहता और चौथा चोर जो गदहे पर चढ़ाकर और नगर भ्रमण के लिए आदिष्ट था वह तो गदहे के ऊपर पीछे मुंह करके बैठा हुआ नगर में घुमाया जाता हुआ अनेक प्रकार के अपमान युक्त नगर के लोगों से निन्दित होता हुआ, निर्लज्ज अपने घर के समीप आने पर उस कोलाहल को देखने के लिए आई हुई अपनी पत्नी को कहता है–अब मैं शेष बचे हुए दो मार्ग (गली) में घूमकर शीघ्र आ रहा हूं, अतः तुम पानी शीघ्र गरम करो–इस प्रकार गुप्तचर द्वारा कहे गए वृत्तान्त को सुनकर सभी कुमार मंत्री के बुद्धि की प्रशंसा करते हैं।

Jain Vishva Bharati Institute (Deemed University), Ladnun

**कठिन शब्दों के अर्थ**

जारिसो——जैसा
नायग——जानने वाले
कोट्टवालेण——कोतवाल के द्वारा
पुरओ——आगे
दाहीअ——दिया
भद्दओ——भद्र, सज्जन
वोत्तूण——बोलकर
आहूय——बुलाया गया
परुस——कठोर
मसीए——स्याही
लिंपसु——लीप लो
लत्ताए——लात से
पाहाणो——पत्थर
अद्धचंदेण——गल–हस्त, गला पकड़कर बाहर करना
निक्कासिओ——निकाल दिया
भमाडिउं——घुमाने के लिए
आइट्ठो——आदेश दिया
अच्छरिअ——आश्चर्य
चरपुरिसो——गुप्तचर
पेसिओ——भेजा
मच्चुं——मश्त्यु
हिलिज्जमाणो——निन्दित होता हुआ तक्कोउहल्लदंसण–त्थागयनिअभज्जं उस कोतुहल को देखने के लिए आई हुई पत्नी को।
रच्छा——मुहल्ला
सिग्घं——शीघ्र
आगमिस्सं——आऊंगा
उण्हं——गरम
पसंसन्ति——प्रशंसा करते हैं।

**1. वस्तुनिष्ठ प्रश्न**

(क) जैसा मनुष्य होता है उसकी ..... वैसी होती है।
(ख) पाटलिपुत्र नगर में ..... राजा था।
(ग) कुमार मंत्री ..... का निधान था।
(घ) कोतवाल ने ..... को उपस्थित किया।
(ङ) चौथा चोर ..... था।

**2. निबन्धात्मक प्रश्न**

1. प्रस्तुत पाठ के आधार पर चारों चोरों के मनः स्थिति का वर्णन कीजिए।
2. कुमार मंत्री की निपुणता पर अपना विचार लिखिए।
3. पाठ का सार सुन्दर ढंग से प्रस्तुत करें।

## 15. चोरिक्कविसए दुण्हं विउसाणं कहा

**कुडुंबपरिपोसत्थं चोरकम्मोज्जया बुहा।**
**परदुक्खं पि छिंदति बुहजुम्मं नियंसणं।।**

भोयनरिंदस्स अवंतिनयरीए देवसम्मो विण्हुसम्मो य नाम माहणा दुण्णि भायरा विउसवरा छद्दंसणणिउणो वेयवेयंगपारंगया संति। लच्छी–सरस्सईणं एगत्थठाणाभावाओ ते विउसा अईव निद्धणा संति। ताणं भज्जाओ वि पइभत्तिपरा सुसीलाओ आसि।

एगया भोयणाभावेण दुहिया ते भज्जाओ निय नियप्पियं कहेइरेकृ"चउसट्ठिकलासु तुम्हे चोरियकलं जाणेह न वा, अओ चोरिक्कं काऊणं पि कओ धणं आणएह।"

एवं सोच्चा ते धणपत्तीए अन्नुवायं अलहमाणा किंपि चिंतिऊण भोयनरिंदमंदिरे रत्तीए चोरियं काउं गया। रायपासाए पच्छण्णं पवेसिआ।

तत्थ सुवण्ण–रयय–मणि–माणिक्क–पवालरासिं पासित्ता 'एयाणं हरणमईव पावं' ति सत्थे कहियं, एवं वियारं किच्चा धन्नागारेसु गच्चा सालीणं दुपोट्टलिगं बंधिऊण मत्थाएसु ठविऊण जया निग्गया, तया भोयनरिंदो महारिहसयणेसु सुत्तो अत्थि। पल्लंगसमीवंमि एगो मक्कडो हत्थे असिं घेत्तूण सावहाणो नरिंदं रक्खइ। ताहे पल्लंगुवरिं एगो सप्पो मंदं मंदं संचरमाणो निग्गओ। तस्स छाया नरिंदोवरिं पडिया, तं दट्ठूण पवंगमो सप्पबुद्धीए नरिंदं जया पहरिउं लग्गो, तया ते विउसा तारिसं असंजमसं दट्ठूण सिग्घयरं मक्कडं निग्गहिउं लग्गा। मक्कडो वि असिं घेत्तूण तेहिं सह जोद्धुं पउत्तो।

एवं हलबोले जाए जग्गिओ नरिंदो माहणं पुच्छइ–'के तुम्हें? कत्तो आगमणं?' ते सच्चं कहिंति–"अम्हे चोरिक्कत्थं एत्थ समागया, तुण्हं गच्छंतो अम्हे एणं कविं सप्पभमेण असिणा तुमम्मि पहरमाणं पासिऊण रक्खणत्थं अणेण सह जुद्धं किच्चा तुम्हे रक्खिओ।"

Jain Vishva Bharati Institute (Deemed University), Ladnun

निवेण पुच्छिय–'किं अवहरियं?' तेहिं वुत्तं–सालीणं पोट्टलगा भरिया, जओकृ'सुवण्णाइदव्वहरणे महापावं' अत्थि, तओ भोयणत्थं सालिधण्णं चिय अवहरियं।

तओ नरिंदो चिंतेइ–"मुरुक्खो मक्कडो अत्थि, अणेण अप्पणो रक्खा किल अप्पवहाइ होइ। जइ चोरिक्कत्थं एए पंडिआ मम मंदिरे न आगच्छंता, तया हं एएण कविणा अवस्सं हओ होंतो। अओ एए विउसा सक्कारारिहा चेव।" तओ विउसे कहेइ–'तुम्हाणं जं इट्ठं, तं मग्गेह।' एवं कहित्ता बहुधणं ताणं दाविऊण विसज्जिआ। पच्छा नरिंदेण मक्कडाओ अप्परक्खणं चत्तं ति। एवं विउसा चोरिक्कं कुणंता वि परवाहं चयंति।

उवएसो–

**सोच्चा विउससिट्ठाण चरियं जणबोहगं।**
**सया हिए पयट्टेज्जा संतोसं माणसे धरे।।**

## 15. चोरी के विषय में दो विद्वानों की कथा

परिवार के पोषण के लिए चोर कर्म में उद्यत विद्वान दूसरों के दुःख को भी दूर करते हैं, इस प्रकार दो विद्वानों का दृष्टान्त है।

भोजराजा के अवन्ती नगरी में देवशर्मा और विष्णुशर्मा नाम के दो श्रेष्ठ विद्वान् ब्राह्मण भाई छः दर्शन में निपुण और वेद और वेदांग में पारंगत थे। लक्ष्मी और सरस्वती का एक स्थान पर अभाव होने के कारण वे विद्वान् अति निर्धन थे। उनकी पत्नियां भी पतिभक्ति में तत्पर और सुशील थीं।

एकबार भोजन के अभाव के कारण दुःखी उनकी पत्नियां अपने–अपने पतियों से कहती हैं–चौसठ कलाओं में कुशल तुम चोरी की कला जानते हो अथवा नहीं, इसलिए चोरी करके भी कहीं से धन लाओ।

ऐसा सुनकर वे धनप्राप्ति के उपाय को न मिलने पर कुछ सोचकर भोजराजा के भवन में रात्रि में चोरी करने के लिए गये। राजप्रासाद में गुप्तरूप से प्रवेश किया।

वहां सोने–चांदी–रत्न–मणि, माणिक्य, प्रवाल समूह को देखकर–इनका (इन चीजों) हरण करना अधिक पाप है ऐसा शास्त्र में कहा गया है, ऐसा विचार कर धान्यागार में जाकर चावलों के दो पोटली बांधकर माथे पर रखकर जब निकले, तब भोजराजा बहुमूल्य बिछोने पर सोया हुआ था। पलंग के निकट एक बन्दर हाथ में तलवार लेकर सावधानीपूर्वक राजा की रक्षा कर रहा था। तब पलंग के ऊपर एक सर्प धीरे–धीरे चलता हुआ निकला। उसकी छाया राजा के ऊपर पडी, उसे देखकर बन्दर सर्पबुद्धि से राजा को जब प्रहार करने लगा, तब वे विद्वान् उस प्रकार के असमंजस देखकर शीघ्र ही बन्दर का निग्रह करने लगे। बन्दर भी तलवार लेकर उनके साथ युद्ध करने लगा।

इस प्रकार कोलाहल होने पर राजा जाग गया और ब्राह्मण से पूछा–तुम कौन हो? कहां से आये हो? वे सत्य कहते हैं–हम चोरी के लिए यहां आये थे, चुप होकर जाते हुए हम इस बन्दर को सर्प के भ्रम से तलवार से तुम्हारे ऊपर प्रहार करते हुए देखकर रक्षा के लिए इसके साथ युद्ध करके तुम्हारी रक्षा की।

राजा ने पूछा–क्या चुराया? उन्होंने कहा–चावलों की पोटलियां भरी, क्योंकि सुवर्णादि द्रव्यों के हरण में महापाप है, अतः भोजन के लिए धान (चावल) ही चुराये हैं।

तब राजा सोचता है–बन्दर मूर्ख है, इसके द्वारा अपनी रक्षा करवाना निश्चित ही स्वयं के वध के लिए है। यदि चोरी के लिए ये पंडित मेरे भवन में नहीं आते तो मैं इस बन्दर के द्वारा अवश्य मार दिया गया होता। अतः ये विद्वान् सत्कार के योग्य हैं। तब विद्वानों से कहता है–तुम्हारे लिए जो इष्ट हो वह मांगो। ऐसा कहकर उन्हें बहुत धन देकर विदा किया। बाद में राजा ने आत्मरक्षा के लिए रखे बन्दर को छोड़ दिया। विद्वान् चोरी करते हुए भी दूसरों की बाधा को दूर करते हैं।

उपदेश–

जनबोधक विद्वानों के श्रेष्ठ चरित्र को सुनकर, सदा हित में प्रवृत्त होकर, मन में सन्तोष को धारण करो।

Jain Vishva Bharati Institute (Deemed University), Ladnun

**कठिन शब्दों के अर्थ**

दुण्हं——दो
जुम्मं——युग्म, दो, जोड़ा
नियंसणं——निदर्शन, दश्ष्टान्त
छद्दंसणणिउणो——छान्दस् में निपुण
वेयवेयंगपारंगया——वेद–वेदांग में पारंगत
निद्धणा——निर्धन
धणपत्तीए——धन–प्राप्ति के
अलहमाणा——प्राप्त नहीं करते हुए
पच्छण्णं——गुप्त
दुपोट्टलिगं——दो पोटली
मक्कडो——बन्दर
पवंगमो——बन्दर
हलबोले——कोलाहल होने पर
जग्गिओ——जाग गया
अवस्सं——अवश्य
हओ——हत
सक्कारारिहा——सत्कार के योग्य हैं
चत्तं——छोड़ दिया
पयट्टेज्जा——प्रवश्त्त होओ
माणसे——मन में
धरे——धारण कीजिए।

**1. वस्तुनिष्ठ प्रश्न**

(क) बुधजन दूसरों के ..... को काटते हैं।
(ख) दोनों विद्वान् ..... निपुण थे।
(ग) ब्रह्मणों की पत्नियां ..... थीं।
(घ) राजा की रक्षा ..... कर रहा था।
(ङ) दोनों ब्राह्मण राजा के घर ..... के लिए गये थे।

**2. निबन्धात्मक प्रश्न**

1. विद्वानों को कैसा होना चाहिए अपना मन्तव्य प्रस्तुत कीजिए।
2. प्रस्तुत पाठ के आधार पर राजा का चरित्र–चित्रण कीजिए।
3. पाठ का सारांश अपनी भाषा–शैली में प्रस्तुत करें।

## 16. वसुदेवस्स गिहच्चाओ

अहमवि जोव्वणस्स उदये नवनवेहिं तुरग–झय–णेवत्थेहिं विसामि निज्जामि उज्जाणसिरिमणुभविऊण नागरजणेण विम्हयवियसियणयणेण पसंसिज्जमाणो रूवमोहियजुवइयण– दिट्ठिपहकराणुबज्झमाणो।

अण्णत्ता य मं जेट्ठो गुरु सद्दावेऊण भणइकुमा कुमार! दिवसं भमाहि बाहिरओ, धूसरमुहच्छायो दीससि, अच्छसु गिहे। मा ते कलाओ अहुणा गहियाओ सिढिलियाओ होहिंति। ततो मया एवं करिस्स ति पडिस्सुयं।

कयाइं च रण्णो धाईए य भगिणी खुज्जा गंधाहिगारणिउत्ता वण्णगं पीसंती मया पुच्छिया–'कस्स इमं विलेवणं

Jain Vishva Bharati Institute (Deemed University), Ladnun

सज्जिज्जइ?' त्ति। सा भणइकृ'रण्णो।' मया भणियं–'अम्हं किं न होइ?' त्ति। सा भणइ–'कयावराहस्स राया तुब्भं ण देइ विसिट्ठं पि वत्थमाभरणं विलेवणं व' त्ति। गहिओ से बला वण्णओ वारंतीए। सा रुट्ठा भणइ–'एएहिं चेव आयारेहिं रुद्धो, तहावि न विरमसि अविणयाओ।' मया पुच्छिया–'साह, केण अवराहेण रुद्धो मि?' सा न साहइ 'रण्णो बीहेमि' त्ति। अंगुलियगदाणेण' अब्भत्थियाणुगमिया साहइ–"रायाविरहे णेगमेहिं विण्णविओकृदेव! सुणह, कुमारो सारयचंदो विव जणणयणसुहओ सुद्धचारित्तो जाए जाए दिसाए निज्जाइ ततो ततो तरुणिवग्गो तेण समं तक्कम्मो भमति। जा य तरुणीओ ताओ वायायण–गवक्ख–जालंतर–दुवारदेसेसु 'नियत्तमाणं पस्सिस्सामो' त्ति पोत्थकम्मजक्खीओ विव दिवसं गमेंति, सिमिणायंतीओ वि भणंति–'एस वसुदेवो, इमो वि वसुदेवो' त्ति। जातो पत्त–साग–फलानि–गेण्हंति ताओ भणंति 'कइ वसुदेवो देसि?' त्ति। दारगरूवाणि कंदमाणाणि वि कुमारदिण्णदिट्ठीओ विवज्जत्थं गेण्हंति–'वुट्टे वच्छो' त्ति दामेहिं बंधंति। एवं देव! उम्मत्तओ जणो जातो घरकज्जमुक्कवावारो देवातिहिपूयासु मंदायरो, तं कुणह पसायं, मा अभिक्ख णीउ उज्जाणाणि त्ति। रण्णा भणिया–'वच्चह वीसत्था, णिवारेमि णं ति।' भणियो य जो तत्थासि परियणो, जहा–'कोइ कुमारस्स न कहेइ एयं परमत्थं। तं निहुओ होहि' त्ति, ततो रण्णो उवालंभो न भविस्सइ। मया भणिया–'एवं करिस्सं त्ति।'

चिंतिय च मे पुणो–'अहं जइ पमाएण णिग्गंतो होंतो तो मि बंधं पावेंतो, अहवा एस बंधो चेव, तण्णं मे सेयं इहमच्छिउं' ति संपहारेऊण सरवण्णभेयगुलियाओ काऊण वल्लहेण दारगेण सह निग्गतो संझाकाले नयरबाहिं सुसाणासण्णं च अणाहमयगं दट्ठूण भणिओ मया वल्लहओ–'गेण्हसु दारुगाणि, सरीरपरिच्चायं करिस्सं।' तेण आणावियाणि कट्ठाणि, रइया चिया, भणिओ य वल्लहओ–'वच्च सिग्घं, रयणकरंडगं मम सयणिज्जाओ आणेहि, दाणं दाऊण अग्गिं पविसिस्सं।' सो भणइ–'जइ एस निच्छओ भे तो देव! अहं पि अणुपविसिस्सं।' मया भणिओ–'जं ते रोयइ तं करिस्ससि, मा य रहस्सं भिदसु, सिग्घं च एहि' त्ति। सो गतो 'जहा आणवेह' त्ति वोत्तूण।

मया वि अणाहमयगं पक्खिविऊण आदीविया चियगा, सुसाणोज्झियमलत्तगं गहेऊण खमावणलेहो लिहिओ गुरूणं देवीणं य –'सुद्धसहावो होऊण णागरेहिं मइलिओ' त्ति निवेदणं काऊण 'वसुदेवो अग्गिं अइगतो।' मसाणखंभे पत्तं बंधिऊण दुयमवक्कंतो, उम्मग्गेण य दूरं गंतूण मग्गमोइण्णो।

जाणेण य एगा तरुणजुवई ससुरकुलाओ कुलघरं निज्जइ, सा ममं दट्ठूण वुड्ढं बितिज्जियं भणइकृ'अम्मो! एस माहणदारगो परमसुकुमारो परिस्संतो आरुभउ जाणं। अम्हं गिहे वीसत्थो अज्ज सुहं जाहिइ त्ति।' भणिओ य मि वुड्ढाए–'आरुहह सामि! जाणं, परिस्संतत्थ।' मया चिंतियं–'जाणट्ठितो पच्छण्णं गमिस्सं' ति–आरूढो मि। पत्ता सुगामं सूरत्थमणवेलाए। तत्थ मज्जिय–जिमिओ अच्छामि।

तस्स य गिहस्स नाइदूरे जक्खाययणं, तत्थ लोगो संठिओ। आगया य नयराओ पुरिसा। ते कहंति–"सुणह जमज्ज वत्तं नयरे–वसुदेवो कुमारो अग्गिं पविट्ठो। तस्स वल्लभगो नाम चेडो वल्लभगो। सो किर चित्तं जलंतिं दट्ठूण अक्कंदमाणो पुच्छिओ जणेण भणइ–वसुदेवो कुमारो अग्गिमइगओ जणवायभीओ, तस्स य वयणं सुणमाणो सतंतओ जणो कंदिउमारद्धो। तं च रुण्णसद्दं सोऊण रायाणो णव वि भायरो निग्गया। दिट्ठं च णेहि कुमारस्स हत्थलिहियं खमावणपत्तं। तं च वाएऊणं रुवंता घय–महुणा परिसिंचित्ता चितं, चंदणागुरु–देवदारुकट्ठेहिं छाएऊणं पुणो पज्जालिउ कयपेयकज्जा सगिहमणुपविट्ठ त्ति।" तं च मे सोऊण चिंता समुप्पण्णाकृगूढो संधी, निव्वसंका मे गुरवो 'मओ त्ति परिमग्गणायरं न काहिंति। ततो सच्छंदं निव्विग्घं जायं वियरियव्वं ति। रत्तिमतिवाहयित्ता अवरेण पट्ठिओ, कमेण पत्तो विजयखेडं नयरं। नातिदूरे य नयरस्स समासण्णे एगम्मि पायवे दुवे पुरिसा चिट्ठंति, ते मं भणंतिकृ'सामि! वीसमह त्ति।' अहं संठिओ। ते पुच्छंतिकृ'के तुब्भे? कओ वा एह?' मया भणिया–'अहं माहणो गोयमो कुसग्गपुराओ विज्जागमं काउं निग्गओ।

## 16. वसुदेव का गृहत्याग

मैं भी यौवन के उदित होने पर घोड़े, ध्वज से युक्त होकर तथा नए–नए कपड़ों को पहनकर उद्यान की शोभा का अनुभव करके नगरजनों के विस्मित से विकसित नयनों से प्रशंसित होता हुआ, रूप से मोहित युवतिजनों की दृष्टिपथ रूपी किरणों से अनुबंधित हुआ निकलता हूं।

Jain Vishva Bharati Institute (Deemed University), Ladnun

एक बार मेरा बड़ा भाई बुलाकर कहता है–कुमार! दिनभर बाहर मत घूमो, मुख की छाया धूसर दिखाई दे रही है। घर पर रहो। तुम्हारी अभी सीखी हुई कलाएं शिथिल न हो जाएं। तब मैंने "ऐसा ही करूंगा" इस प्रकार स्वीकार किया।

एक बार राजा की धातृ (धाईमाता) और बहन कुबड़ी जो कि गंधाधिकार में नियुक्त थीं। लेप को पीसती हुई मेरे द्वारा पूछी गई–किसके लिए यह विलेपन बना रही हो? वह कहती है–राजा के लिए। मैंने पूछा मेरे लिये क्यूं नहीं है? वह कहती है अपराध किए हुए हो (इसलिए) राजा तुम्हें विशिष्ट वस्त्र आभरण और विलेपन नहीं देंगे। उसने जबरदस्ती मना करते हुए भी लेप ले लिए। वह रुष्ट होकर बोली इन आचारणों से ही रोका था फिर भी अविनय नहीं छोड़ते हो।

मैंने पूछा–कहो किस अपराध से रोका गया हूं? वह नहीं कहती है "राजा से डरती हूं" इस प्रकार। अंगूठी देने से प्रसन्न होकर वह कहती है राजा के एकांत में व्यापारियों ने निवेदन किया–देव! सुनो कुमार सागरचन्द्र की तरह जन नयनों को सुख देने वाला, शुद्ध चारित्र वाला जिस जिस दिशा में जाता है, वहां वहां युवतियों के झुण्ड उसके साथ उसी क्रम से चल पड़ती है और जो युवति उसके वातायन गवाक्ष, जाली के अंदर से या द्वार पर लौटते हुए को देखेंगे इस प्रकार चित्रित की हुई सी दिन बिताती है। स्वप्न में भी कहती है–"यह वसुदेव है यह भी वसुदेव है" इस प्रकार। जिससे पत्र–शाक–फल ग्रहण करती है उनसे कहती है कितने वसुदेव दोगे?

रोते हुए बच्चों को भी कुमार पर दशष्टि देने के कारण ग्रहण करती है और छोड़कर "यह बछड़ा है" इस प्रकार खंभे से बांध देती है। इस प्रकार हे देव! लोग उन्मत्त हो गए हैं और घर के कार्य से मुक्त व्यापार वाले हो गए है देव, अतिथि, पूजा में मंद पड़ गए है। आप कृपा करें अब से उद्यान में न जाएं। राजा बोलेकृविश्वस्त होकर जाओ मैं उसको रोकूंगा और वहां जो परिजन थे उनको कहा–कोई कुमार को यह बात नहीं कहेगा तुम शांत रहना। इसलिए राजा का उपालंभ न हो। मैंने कहा–ऐसा ही करूंगा (किसी को नहीं बताऊंगा कि तुमने बताया)

उसने सोचा–यदि प्रमाद से गया होता तो में बंधित हो जाता अथवा यह भी बंधन ही है इसलिए मेरा यहां रहना श्रेयस्कर नहीं है" इस प्रकार सोचकर स्वर, वर्ण बदलने वाली गुटिका लेकर सेवक वल्लभ के साथ संध्याकाल में नगर बाहिर निकल गया। श्मशान में रहे हुए अनाथ मृतक को देखकर वल्लभ को मैंने कहा–लकड़ियां लाओ, शरीर का परित्याग करूंगा। उसने काठ लाए चिता रची और वल्लभ को कहा शीघ्र जाओ और मेरे शय्या से रत्न की पेटी लाओ दान देकर अग्नि में प्रवेश करूंगा। वह कहता है हे देव! यदि यह निश्चय है तो मैं भी पीछे–पीछे प्रवेश कर लूंगा। मैंने कहा जो तुम्हें अच्छा लगे करना इस रहस्य को मत खोलना शीघ्र आओ। तब वह गया जैसी आपकी आज्ञा "कहकर" मैंने अनाथ मृतक को रखकर चिता जला दी। श्मशान में छोड़े हुए एक कागज के टुकड़े को लेकर क्षमापना लेख लिखी भाई और पत्नी को–"सुद्धस्वभाव होने पर भी नागरिकों से मैला हुआ" ऐसा निवेदन करके "वसुदेव अग्नि में चला गया'' श्मशान के खंभे पर पत्र को बांधकर शीघ्र भागता हुआ रास्ता भूलने से दूर जाकर मार्ग से उत्तर गया। और एक तरुण युवती ससुराल से पीहर यान से आ रही थी, वह मुझे देखकर दूसरे तीसरे (अन्य दो) बूढ़ों से कहती है हाय! यह ब्राह्मण पुत्र बहुत कोमल, थका हुआ है, वाहन में चढ़ जाए। हमारे घर विश्वस्त होकर सुख से चला जाएगा। बूढ़े न मुझे कहा। स्वामी गाड़ी में चढ़ो थके हुए हो इसलिए। मैंने सोचा यान में छिपकर चला जाऊंगा मैं चढ़ गया। सूर्यास्त के समय सुग्राम पहुंचा वहां नहा धोकर भोजन करके ठहर गया। उसके घर के पास ही यक्ष मंदिर में लोग इकट्ठे हुए। नगर से पुरुष आए थे। उन्होंने कहा–आज की नगर वार्ता सुनो। वसुदेव कुमार अग्नि में प्रविष्ट हो गया उसका वल्लभ नाम का (अच्छा मित्रवत्) सेवक था। उसको चिता जलते हुए देखकर चिल्लाता हुआ कहता है वसुदेव जनापवाद के कारण अग्नि में प्रविष्ट हो गया। इनकी रोती हुई आवाज सुन राजा के भाई बाहर आए और उन्होंने कुमार का हस्तलिखित पत्र देखा पढ़कर रोते हुए घी और मधु से चिता को सींचा, श्रेष्ठ चंदन और देवदारु काष्ठ से आच्छादन कर चिता को जलाया। प्रेतकार्य करके अपने घर में प्रविष्ट हुए। यह सुनकर चिंता उत्पन्न हो गई कि गूढ़ रहस्य है। मेरा भाई 'मर गया' इस प्रकार खोज नहीं करेंगे इसलिए स्वच्छन्द निर्विघ्न हो गया। रात बिताकर विचरण प्रस्थित हो गया क्रम से विजयखेट नगर में पहुंचा। नगर के पास ही पहुंचने पर एक पेड़ पर दो पुरुष। वे मुझे पूछते है। स्वामी विश्राम करो। मैं बैठा। उन्होंने पूछा–तुम कौन हो अथवा कहां से आए हो? मैंने कहा मैं गोतम ब्राह्मण कुशाग्रपुर से विद्या प्राप्त करने निकला हूं।

Jain Vishva Bharati Institute (Deemed University), Ladnun

**कठिन शब्दों के अर्थ**

झय——ध्वज
नेवत्थेहिं——वस्त्रों को पहनकर
खुज्जा——लेप
अब्भत्थिया——प्रसन्न हुई
साहइ——कहती है
णेगमेहिं——व्यापारियों द्वारा
तक्कम्मो——उसके पीछे
तण्णं (तत् णं)——इसलिए
अणाहमयगं——अनाथ मशतक
दारुगाणि——लकड़ी
करिस्सं——करूंगा
वच्च——जाओ
निच्छओ——निश्चय
वोत्तूण——कहकर
आदीविया——दीपित किया, जलाया
मलत्तगं——कागज
मइलिओ——मैला किया गया
उम्मग्गे——उल्टे रास्ते में
मग्गमोहण्णो——सन्मार्ग में चला गया
आरुभउ ——चढ जाये
जाहिइ——चला जायेगा
पच्छण्णं——गुप्त रूप से
सूरत्थमणवेलाए——सूर्यास्त के समय
मज्जिय–जिमिओ——स्नान–भोजन करके।
अच्छामि——रहता हूं
संठिओ——एकत्रित हुए
पेयकज्जा——प्रेत्यकर्म, परलोक संबंधी कार्य
रत्तिमतिवाहयित्ता——रात बीताकर
पट्ठिओ——प्रस्थान किया
वीसमह——विश्राम करो।

**1. वस्तुनिष्ठ प्रश्न**

(क) लेप ..... पीस रही थी।
(ख) मया पुच्छिया– साह केण ..... रुद्धो मि।
(ग) कुमार ..... की तरह निकलता था।
(घ) सब्जी आदि खरीदते हुए ..... ऐसा कहती।
(ङ) वल्लभग ..... ही था।

**2. निबन्धात्मक प्रश्न**

1. वसुदेव को विलेपनादि क्यों नहीं दिया जाता था।
2. क्या वसुदेव का चरित्र विचारणीय है?
3. प्रस्तुत पाठ के आधार पर नारी–चरित्र का वर्णन करें।
4. पाठ का सारांश लिखें।

## 17. नलकहा

नलेण वुत्तंकृ'देवि! जोयणसयं अरण्णं एयं। अज्जवि पंच जोयणाइ लंघियाइं। धीरा होहि।' एवं उल्लवंताणं ताणं पहे वच्चंताणं पडियारं काउं असक्को अक्को लज्जंतो व निलुक्को अत्थगिरिसिहरं। काणणेसु कंकेल्लिपल्लवेहिं विहिओ पसत्थो सत्थरो नलेण। भणिया दमयंती–'देवि! सुविऊण एत्थ देहि दिन्नदुक्खमुद्दाए निद्दाए अवसरं। अलं आयंकसंकाए, अहं ते पाहरिओ' त्ति खित्तं सत्थरे नलेण नियनिवसणद्धं। वंदिऊण देवं अरहंतं सरिऊण पंचपरमिट्ठिमंतं पसुत्ता तत्थ दमयंती। निद्दायंतीए तीए नलेण चिंतियं–

**"जेसिं ससुरो सरणं लहंति पुरिसा न ते पुरिसलीहं।**
**दमयंतीइ पिइहरं ता कह वच्चामि निब्भग्गो।।1।।**
**काऊण कुलिसकढिणं हिययं सुत्तुं पियं ति दमयंति।**
**रंको व्व कहिं पि अन्नत्थ जामि घेत्तूण अत्ताणं।।2।।**
**दमयंतीइ अवाओ न कोवि सतिप्पभावओ होही।**
**सव्वंगरक्खणकरं कवयं सीलं चिय सईणं।।3।।"**
**तओ छुरिएण छिन्नं वसणद्धं। दमयंतीवत्थंचले लिहियाइं नियरुहिरेण अक्खराइं**
**"वडरुक्खह दाहिणदिसिहिं जाइ विदब्भिहिं मग्गु।**
**वामदिसिहि पुण कोसलिहि जहि रुच्चइ तहिं लग्गु।।4।।"**

Jain Vishva Bharati Institute (Deemed University), Ladnun

'अहं पुण अन्नत्थ वच्चिस्सं।' तओ असद्दं रुयंतो व्व निहुयक्कमो गंतुं पयट्टो नलो। पियपणइणिं पसुत्तं वलियकंधरं पलोयंतो गंतूण केत्तियं पि भूमिभागं चिंतिउं पवत्तो–'आहारत्थी पसुत्तं बालं एयं अणाहं वग्घो सिंघो वा जइ भक्खेज्ज तो मे का गई? अओ सूरुग्गमं जाव रक्खामि एयं। पच्चूसे वच्चउ एसा सइच्छाए' त्ति। तओ पडियरित्थो पुरिसो व्व नियत्तो तेहिं चेव पएहि नलो। भूमिसुत्तं दट्ठूण दमयंतिं चिंतियं तेण–"हा! दमयंती एगवत्था एगागिणी सुवइ सुन्नारण्णे। अहो! अंतेउरं असूरियंपस्सं। मम कम्मदोसेण इमं अवत्थं गया एसा कमललोयणा। ता किं करेमि, हयासो हं। अणाहं पिव पिययमं महिवीढलुढियं वि जं न निल्लज्जो विलज्जामि ता नूणं वज्जघडियो म्हि। एसा अरण्णे मए मुक्का पडिबुद्धा समाणी मम पाडिसिद्धीए जीविएणावि मुच्चिस्सइ। तो पइव्वयं एयं मुत्तूण अन्नत्थं गंतुं न उच्छहइ मे मणं। जीवियं मरणं वा मे इमीए समं होउ। अहवा अवायसयसंकुले अरण्णे अहमेव दुहभायणं होमि एसा पुण वत्थलिहियं मम आएसं मुणंती गंतूण सयणभवणे सुहेण चिट्ठिस्सइ।" एवं कयनिच्छओ गमिऊण रयणिं पिययमापडिबोहसमए तिरोहिओ तुरियपयक्खेवं नलो।उन्निद्दकमलामोयसुरहिसमीराभिरामे रयणीविरामे दमयंतीए दिट्ठो सुविणो (जहा) आरूढा अहं फलफुल्लमणहरे चूयपायवे। भक्खियाइं मए तस्स पेसलाइं, फलाइं, सहस त्ति वणहत्थिणा उम्मूलिओ सो तो पडिया अहं अंड व्व पक्खिणो खोणीयले। तओ पडिबुद्धा दमयंती नलं अपेच्छिऊण जूहब्भट्ठा हरिणि व्व दिसाओ पलोयंती चिंतिउं पवत्ता–"हा! अच्चाहियं पडियं जं अरण्णे असरणा पिएण विमुक्कम्हि। अहवा पहाए मह वयणसुद्धिसलिलाणयणत्थं कत्थ वि जलासए गओ भविस्सइ पिययमो। अहवा निरुवमरूवलुद्धाए कीए वि खेयरीए रमणत्थं नीओ भविस्सइ नलो। ते दुमा, ते पव्वया, तं च अरण्णं, एक्को चेव चंदसुंदरमुहो न दीसइ नलो।" एवं अणप्पवियप्पपज्जाउलमणा कयादिसालोया नलं अपेच्छंती भीया सुविणत्थं भाविउं पवत्ताकृजो चूयदुमो पुम्फफलसमद्धिो, सो नलो राया। जं मए फलासाओ कओ, तं रज्जसुहमाणणं। जं च सो वणहत्थिणा उम्मूलिओ, तं दिव्वेण रज्जब्भंसं लहाविओ नलो। जं पुण पडिय म्हि तत्तो, तं नलाओ चुक्कम्हि। तो इमिणा सुविणेण दुल्लहं मे दंसणं ति।

**ता रोविउं पवत्ता दमयंती मुक्ककंठमुच्चसरं।**
**कायरमणाण इत्थीण धीरिमा होइ न हि वसणे।।5।।**
**"हा नाह! किं तए हं चत्ता! किं तुज्झ होमि भारकरी।**
**नहि भोगिणो कयावि हु नियकंचुलिया कुणइ भारं।।6।।**

भो वणदेवयाओ! पत्थेमि तुब्भे दंसेह मे पाणनाहं, तस्स पयपंकएहिं पवित्तियं पहं वा। अहवा पक्कवालुकं व फुट्टेहि धरणि! जेण तव्विवरेण पविसिऊण पायाले पावेमि निव्वुइं।" एवं विलवंती बाहजलसारणीहि अरण्णदुमे सिंचंती नलं विणा जले थले कत्थ वि रइं अपावंती सिंचयंचले अक्खराइं दट्ठूण दमयंती वियसंतवयणा वाएइ–"नूणं पिययमेण चत्ता अह देहमित्तेण न चित्तेण। कह अन्नहा आएसदाणेण अणुग्गहिय म्हि ता गुरुवयणं पइणो न आणं कुणतीए से निम्मलो इहलोओ। अओ वच्चामि पिउणो घरं। जं पइणो भवणं तं पइं विणा पराभवभवणं चेय नारीणं" ति निच्छिऊण चलिया वडदुमस्स दाहिणदिसामग्गेण नलं व पासट्ठियं पिच्छंती नलक्खराणि। तीए विमलसीलप्पभावेण पहवंति कदा नोवद्दवा।

## 17. नलकथा

नल ने कहा–देवी यह अरण्य सौ योजन का है। अब तक पांच योजन चले हैं। धीर होओ (धैर्य धारण करो) इस प्रकार कहते हुए उनके मार्ग में जाते हुए सेवा करने के अशक्य सूर्य मानो लज्जा करते हुए पर्वत की शिखर पर छुप गया। जंगल में कंकेली के पत्तों से नल ने प्रशस्त बिछौना किया। दमयंती से कहा–देवी! यहां सोकर दीन और दुःखी मुद्रा वाले नींद को अवसर दो। आतंक की शंका मत करो, मैं तुम्हारा पहरेदार (रक्षक) हूं, ऐसा कहकर नल ने अपने वस्त्र के आधे भाग को बिछा दिया। अरहंत देव की वंदना कर पंचपरमेष्ठी का स्मरण कर, वहां दमयंती सो गई। दमयंती के सो जाने पर नल ने सोचा–

"जो व्यक्ति श्वसुर के गृह में शरण लेते हैं वे प्रसंशा प्राप्त नहीं करते हैं। अतः दमयंती के पितृगृह में भाग्यहीन कैसे जाऊं।"

"हृदय को व्रज के समान बनाकर प्रिय–दमयंती को छोड़कर, रंक (गरीब) की तरह स्वयं को लेकर कहीं भी अन्यत्र चला जाता हूं।"

Jain Vishva Bharati Institute (Deemed University) Ladnun

"शील के प्रभाव के कारण दमयंती को किसी प्रकार की आपत्ति नहीं होगी। सर्वांग का रक्षा करने वाला शील ही स्त्रियों का कवच है।"

तब छुरी से वस्त्र के आधे भाग को काट दिया। दमयंती के वस्त्रांचल पर नल ने अपने रक्त से अक्षर लिखे–

**"वटवृक्ष के दक्षिण (दाहिने) दिशा में बिदर्भ का मार्ग जाता है**
**और बायीं दिशा में कौशल के जहां जाना ठीक लगे वहीं चली जाना।"**

मैं कहीं अन्यत्र जाऊंगा। तब निःशुद्ध रोते हुए चुपचाप पैरों को रखते हुए नल जाने के लिए प्रवृत्त हुआ। सोये हुए प्रिय प्रणयिनी को गरदन घूमाकर देखता हुआ कुछ ही दूर गया था कि सोचने लगा–सोये हुए अनाथ इसको अगर कोई आहार का अर्थी (इच्छुक) बाघ अथवा सिंह खा जायेगा तो मेरी क्या गति होगी। अतः सूर्योदय तक इसकी रक्षा करता हूं। यह प्रातः अपनी इच्छा से कहीं चली जाएगी। तब गिर गया है धन जिसका ऐसे व्यक्ति के समान नल उन्हीं कदमों से लौट आया। भूमि पर सोये हुए दमयंती को देखकर सोचा–हा! दमयंती एक वस्त्र में अकेली ही सुनसान अरण्य में सोयी है। अहो! नल के अन्तःपुर में अशूर्यंपश्या (सूर्यमपि न पश्यति) अर्थात् कभी सूर्य को भी नहीं देखने वाली, मेरे कर्म के दोष के कारण यह कमललोचना इस अवस्था को प्राप्त हुई है। तो क्या करूं, मैं हताश हो गया हूं। अनाथ की तरह प्रियतमा को पश्थिवी पर सोये हुए देखता हुआ भी जो निर्जल्ल में लज्जा नहीं करता तो निश्चित ही मैं वज्र से बनाया गया हूं। अरण्य में मेरे द्वारा छोड़ी गयी यह प्रतिबुद्ध (जागकर) होने पर मेरे न मिलने पर जीवन को छोड़ देगी। अतः प्रतिव्रता इसे छोड़कर अन्यत्र जाने के लिए मेरा मन उत्साहित नहीं हो रहा है। जीवन अथवा मरण इसी के साथ होवे अथवा सैंकडों विपत्तियों से भरे हुए इस जंगल में मैं ही दुःख का पात्र होऊंगा। यह पुनः वस्त्र  में लिखे हुए मेरे आदेश को समझती हुई अपने भवन में जाकर सुखपूर्वक रहेगी। इस प्रकार निश्चय करके रात्रि बीताकर प्रियतमा के जागने के समय शीघ्र ही पैरों को रखते हुए नल तिरोहित (छुप गए) हो गया।

खिले हुए कमल के पराग के सुरभि की हवा से सुगन्धित रात्रि के अन्त में दमयंती ने स्वप्न देखा–(यथा) मैं फल–फूल से मनोहर आम्रवश्क्ष में चढ़ी हुई हूं। उसके पके फलों को मैंने खाये, सहसा ही वनहस्ति ने मूल सहित उसे उखाड़ दिया तब मैं पक्षी के अण्डे की तरह पश्थ्वी तल पर गिर पड़ी।

तब दमयंती जाग जाती है और नल को नहीं देखने के कारण अपनी यूथ से भ्रष्ट हुए हथिनी के समान दिशाओं को देखती हुई सोचने लगती है–हा! महान भय आ पड़ा है, जो जंगल में अशरण पति ने मुझे छोड़ दिया अथवा प्रातः मेरे मुख धोने के लिए पानी लेने के लिए किसी जलाशय में प्रियतम गये होंगे अथवा अनुपम रूप से लुब्ध कोई खेचरी रमण के लिए नल को ले गई हो। वे वश्क्ष, वे पर्वत और वही जंगल है एक मात्र चन्द्रमा के समान सुन्दर मुखवाले वह नल नहीं दिखाई दे रहे। इस प्रकार अत्यधिक विकल्पों से आकुल मनवाली दमयंती ने दिशाओं को देखा। नल को नहीं देखती हुई भयभीत होकर स्वप्न के बारे में सोचने लगी–जो पुष्पफल से समृद्ध आम का वश्क्ष था, वह नल राजा, जो मैंने फल का आस्वादन किया वह राज्य–सुख था और जो वह वन हस्ति के द्वारा से उखाड़ दिया गया वह देवर ने राज्य से नल को भ्रष्ट कर दिया। और वहां से जो मैं गिरी, वह नल से मैं छोड़ी गयी। तो इस स्वप्न के आधार पर मेरे लिए दर्शन दुर्लभ है अर्थात् नल का मिलना कठिन है।

**"तब मुक्तकंठ से तथा उच्चस्वर से दमयंती रोने लगी।**
**विपत्ति में कायर मन वाले स्त्रियों के धैर्य नहीं होता।"**
**हे नाथ! तुम मुझे क्यों छोडे! क्या मैं तुम्हारे लिए भार थी।**
**सर्प कभी भी अपनी केंचुली को भार नहीं मानता।**

हे वनदेवताओं! मैं तुमसे प्रार्थना करती हूं मेरे प्राणनाथ का दर्शन करादो अथवा उसके चरण–कमलों के ही मार्ग बता दो अथवा पके हुए धूल के समान हे धरती! फट जाओ जिससे कि उसके विवर (छेद) में प्रवेशकर पाताल में सुख प्राप्त करूं। इस प्रकार विलाप करती हुई अश्रुजल से अरण्यवृक्षों को सींचती हुई नल के बिना स्थल पर कहीं भी सुख नहीं पाती हुई वस्त्र के आंचल पर अक्षरों को देखकर दमयंती विकसित मुख से पढती है–निश्चित ही पति से छोड़ी गई मैं देहमात्र से छोड़ी हूं मन से नहीं। अन्यथा कैसे आदेश के दान से अनुग्रहीत होती, जो (स्त्री) गुरुओं के वचन और पति की आज्ञा को मानती है उससे यह लोक निर्मल है अतः पिता के घर जाती हूं। जो पति का भवन है वह पति के बिना वह नारी के पराभव का भवन है ऐसा निश्चयकर वटवश्क्ष के दाहिनी दिशा के मार्ग में मानो पास में नल ही हैं इस प्रकार नल के अक्षरों को देखती हुई चल पड़ी। उसके पवित्र शील के प्रभाव से उपद्रव कभी प्रभावी नहीं होते।

Jain Vishva Bharati Institute (Deemed University), Ladnun

**कठिन शब्दों के अर्थ**

उल्लवंताणं——कहते हुए
पहे——मार्ग में
पडियारं——सेवा
निलुक्को——छिप गया
खित्तं——फैला दिया
पसुत्ता——सो गई
मग्गु——मार्ग
लग्गु——लगो
निहुयक्कमो (निभश्तक्रम)——
अवाओ——आपद् (विपत्ती)
पाडिसिद्धीए——प्रतिस्पर्धा में
तिरोहिओ——तिरोहित हो गया
आरुढा——चढ़ी हुई
चूयपायवे——आम्रवश्क्ष
उम्मूलिओ——उखाड़ दिया
लहाविओ——प्राप्त कराया गया
फुट्टेहि——फूट जाये
निव्वुइं——शांति

**1. वस्तुनिष्ठ प्रश्न**

(क) असक्को ..... लज्जंतो व निलुक्को।
(ख) वटवश्क्ष के ..... विदर्भ का मार्ग जाता है।
(ग) दमयंती ..... में रोने लगी।
(घ) दमयंती नल के द्वारा ..... मात्र से त्यक्त थी।
(ङ) पति का घर पति के बिना ..... का भवन है।

**2. निबन्धात्मक प्रश्न**

1. नल के चरित्र को पाठ के आधार पर वर्णन करें।
2. नल द्वारा दमयंती को अकेला छोड़ देना क्या औचित्य था, अपना विचार प्रस्तुत करें।
3. प्रस्तुत पाठ का सारांश अपने शब्दों में लिखिए।

## 18. महुबिंदु–दिट्ठंतं

कोइ पुरिसो बहुदेसपट्टणवियारी अडविं सत्थेणं समं पविट्ठो। चोरेहिं य सत्थो अब्भाहओ। सो पुरिसो सत्थपरिभट्ठो मूढदिसो परिब्भमंतो दाणदुद्दिणमुहेण वणगएण अभिभूओ। तेण पलायमाणेण पुराणकूवो तणदब्भपरिच्छन्नो दिट्ठो। तस्स तडे महंतो वडपायवो। तस्स पारोहो कूवमणुपविट्ठो।

सो पुरिसो भयाभिभूओ पारोहमवलंबिऊण ठिओ कूवमज्झे, आलोएइ य अहोकृतत्थ अयगरो महाकाओ वियारिमुहो गसिउकामो तं पुरिसमवलोएइ। तिरियं पुण चउद्दिसिं सप्पा भीसणा डसिउकामा चिट्ठंति। पारोहमुवरिं किण्हसुक्किला दो मूसया छिदंति। हत्थी हत्थेण केसग्गं परामुसइ। तम्मि य पायवे महापरिणाहं महुं ठियं। गयसंचालिए य पायवे वायविहूया महुबिंदु तस्स पुरिसस्स केइ मुहमाविसंति, ते य आसाएइ। महुरा य डसिउकामा परिवयंति समंतओ।

Jain Vishva Bharati Institute (Deemed University), Ladnun

तस्स एवंगयस्स किं सुहं होइ? जे महुबिंदु अहिलसइ तत्तियं तस्स सुहं सेसं दुक्खं ति। उवसंहारो पुण दिट्ठंतस्स–

जहा सो पुरिसो, तहां संसारी जीवो। जहा सा अडवी, तहां जम्मजरारोगमरणबहुला संसाराडवी। जहा वणहत्थी, तहा मच्चू। जहा कूवो, तहा देवभवो मणुस्सभवो य। जहा अयगरो, तहा नरगतिरियगईओ। जहा सप्पा, तहा कोहमाणमायालोहा चत्तारि कसाया दोग्गइगमणनायगा। जहा पारोहो, तहा जीवियकालो। जहा मूसगा, तहा कालसुक्किला पक्खा राइंदियदसणेहिं परिक्खिवंति जीवियं। जहा दुमो, तहा कम्मबंधणहेऊ अन्नाणं अविरई मिच्छत्तं च। जहां महुं, तहा सद्दफरिसरसरूवगंधा इंदियत्था। जहा महुयरा, तहा आगंतुगा सरीरुग्गया य बाही।

तस्सेव भयसंकडे वट्टमाणस्स कओ सुहं? महुबिंदुरसासायओ केवलं सुहकप्पणा।

## 18. मधुबिंदु दृष्टान्त

अनेक देश और नगर में विचरण करने वाला कोई व्यक्ति सार्थ (व्यापारियों के दल) सहित जंगल में प्रवेश किया। चोरों ने सार्थ को लूट लिया। सार्थ से अलग हुआ दिशामूढ वह व्यक्ति घूमता हुआ मदजल से व्याप्त मुखवाले वनहस्ति से आक्रान्त हुआ। भागता हुआ वह घासादि से ढके हुए एक पुराने कुएं को देखा। उसके तट पर एक बहुत बड़ा वट का वृक्ष था। उसकी शाखाएं कुएं के भीतर तक प्रविष्ट थीं।

वह व्यक्ति भय से अभिभूत होकर शाखाओं का आलम्बन लेकर कुएं के बीच स्थित हो गया और देखता है–अहो! एक बहुत बड़ा अजगर मुख खोलकर खाने का इच्छुक होकर उस व्यक्ति को देख रहा था। पुनः चारों दिशाओं में भयंकर सर्प दश लेने के इच्छुक होकर बैठे थे। शाखा को काले और सफेद दो चूहे काट रहे थे। हाथी अपनी सूंड से वालों को छू रहा था और उस वृक्ष पर (बहुत ज्यादा) परिमाण में ज्यादा शहद था और हाथी के द्वारा वृक्ष के हिलाए जाने पर हवा से शहद के कुछ बूंद उस व्यक्ति के मुख में प्रवेश करते हैं और वह व्यक्ति उनको चखता है, आस्वाद लेता है और डसने के इच्छुक भंवरे चारों ओर घूम रहे थे।

ऐसी अवस्था को प्राप्त उस व्यक्ति को क्या सुख होगा? जो वह मधु का आस्वाद ले रहा था उतना ही सुख शेष सारे दुःख ही दुःख है।

दृष्टान्त का उपसंहार–जैसा वह व्यक्ति, वैसा संसारी जीव है। जैसा वह जंगल, वैसा ही जन्म–बुढ़ापे रोग–मृत्यु बहुल संसार रूपी जंगल हूं। जैसा वन हस्ति वैसी मृत्यु है। जैसा कुआं वैसा देवभव और मनुष्यभव है। जैसा अजगर वैसा नरक तिर्यञ्च गति है। जैसे सर्प, वैसे क्रोध मान माया और लोभ ये–चार कषाय हैं जो दुर्गतिगमन के नायक हैं। जैसी शाखाएं हैं, वैसा ही जीवनकाल है। जैसे चूहे, वैसे ही कृष्ण–शुक्ल पक्ष से युक्त रात और दिन डसते हुए जीवन को समाप्त कर रहे हैं। जैसा वृक्ष वैसे ही कर्मबंधन के हेतुरूप अज्ञान, अविरति और मिथ्यात्व है। जैसा मधु वैसे शब्द स्पर्श, रस, रूप और गंध ये इन्द्रियों के विषय हैं। जैसे मधुकर वैसे ही आगन्तुक शरीर में उत्पन्न बीमारी है।

इस प्रकार भय के संकट में रहते हुए उसको सुख कहां? सिर्फ मधु के बुंद का रसास्वादन मात्र सुख की कल्पना करना है।

**कठिन शब्दों के अर्थ**

पट्टण——नगर
सत्थेणं——व्यापारियों के साथ
अब्भाहओ——(अभ्याहत) आघात प्राप्त
वणगएण——वन हस्ति से
परिच्छन्नो——ढका हुआ
तडे——तट में
मंहतो——बड़ा
पारोहो——शाखा

Jain Vishva Bharati Institute (Deemed University), Ladnun

वियारियमुहो——(विस्फारित मुख) मुंह खोलकर
गसिउकामो——ग्रसित करने की इच्छावाला
तिरियं——टेढ़ा, तिरछा
मूसया——चूहे
परामुसइ——स्पर्श कर रहा था
वायविहूया——हवा से हिलाये जाने पर
आविसंति——प्रवेश करते हैं
आसाएइ——स्वाद लेता है
महुरा——मधुकर, भंवरे
तत्तियं——उतना
पक्खा——पक्ष
राइंदिय दसणेहि——रात–दिन डसते हुए
इंदियत्था——इन्द्रियों के विषय
महुयरा——भौंरा
सरीरुग्गया——शरीर में उत्पन्न
बाही——रोग
वट्टमाणस्स——वर्तन करते हुए का
सुहकप्पणा——सुख की मात्र कल्पना है।

**1. वस्तुनिष्ठ प्रश्न**

(क) एक व्यक्ति ..... में प्रवेश करता है।
(ख) उसने ..... का आलम्बन लिया।
(ग) कुएं में ..... था।
(घ) दो ..... शाखा को छेद रहे थे।
(ङ) जैसे भंवरे वैसे ..... ।

**2. निबन्धात्मक प्रश्न**

1. संसार असार है इस बात को स्पष्ट करें।
2. सांसारिक सुख को मधुबिंदु के दृष्टान्त से स्पष्ट करें।
3. प्रस्तुत पाठ से प्राप्त शिक्षाओं को समझाइये।

## 19. सुभद्दापत्तलेहणं

**(ततः प्रविशत्युपविष्टा सोत्कण्ठा सुभद्रा मन्दारिका च)**

**सुभद्रा**=(दीर्घं निःश्वस्य सखेदमात्मगतम्) अइ मूढहिअअ, तस्स जणस्स सुमरणं तुह एक्कंतसंतावइत्तअं जाणंतो वि कीस तुमं पुणो वि तं चेअ सुमरेसि। अम्मो चवलाइ लोअणाइ, जस्सिं दाव संणिहिदे संपुण्णं दंसणं पि कादुं ण पहवेह, तं चेअ दाणिं दंसिदुं, अहिलसंताइ कुदो मं आआसेध। हंहो दुव्विदद्धहत्थ, जेण गहिदो तुमं दुम्माणवसणपरवंतो मोएदुकामो आसी, तस्सपुणो वि फंससुहं णिल्लज्जो कहं इच्छसि। अंग वम्मह, अण्णाणुराअपराहीणे वि जणे मं खलीकरंतो किं ति तुह सराणं विणोदलक्खीकरेसि।

**मन्दारिका**–पिअसहि, किं चिंतेसि?

Jain Vishva Bharati Institute (Deemed University), Ladnun

**सुभद्रा**–ण किं वि।
**मन्दारिका**–किं तदो अण्ण।
**सुभद्रा**–कुदो।
**मन्दारिका**–जं तुए अविच्छिण्णं चिंतिज्जइ।
**सुभद्रा**–(सलज्जम्) जाणंती एव्व कुदो मं पुच्छेसि।
**मन्दारिका**–पण्हो वि तहिं विसए तुह रमइत्तओ त्ति।
**सुभद्रा**–हला, पराहीणे तस्सिं जणे समुस्सुअं कीस मं उवहसेसि।
**मन्दारिका**–सहि, दक्खिण्णमेत्तदिण्णुत्तरं, तं किं ति पुण ण पत्तेसि। (सस्मितम्) अहव विरुद्धोवण्णासच्छलेण असाहारणिं तुवम्मि तस्स बहुमइं अघाडेंती अत्ताणं सलाहेसि।
**सुभद्रा**–(सविलक्षस्मितम्) पिअसहि, एसो अंजली। मा खु मं उवहसेसि।
**मन्दारिका**–इअं म्हि तुण्हिका।
**सुभद्रा**– (सखेदमात्मगतम्) हंत, किं णु खु एअस्स मअणरोअस्स अवसाणं। जेण णिद्दअपीडिआए भारो मे सरीरं चंपणाअ पडिभाइ। अहव कुदो मे तारिसा भाअवेआ जदो एदं कल्लाणं परिणमिस्सदि। (रोदिति)
**मन्दारिका**–सहि, कुदो दे ओवाअसंका। अहरहं सिज्झंति णिमित्ताइ।
**सुभद्रा**–पिअभासिणीओ खु सहीओ।
**मन्दारिका**–मा तह चिंतिअ। सव्वहा ण विसंवदंति णिमित्ताइ।
**सुभद्रा**– होदु।
**मन्दारिका**–पिअसहिं, किं ते मणो लिहइ?
**सुभद्रा**–हला, सुट्ठु भणिअं। लेक्खं चेअ खु तं।
**मन्दारिका**–किं अणंगलेहकव्वं?
**सुभद्रा**–(सलज्जम्) तं विअ।
**मन्दारिका**–सहि, भणाहि भणाहि।
**सुभद्रा**–जइ ण मं उवहसिस्ससि, एसा भणिस्सं।
**मन्दारिका**–ण एअं उवहासट्ठाणं।
**सुभद्रा**–तेण हि सुणाहि।
**मन्दारिका**–अवहिद म्हि।
**सुभद्रा**–(अनुस्मश्त्य) लज्जदि भणिदुं जीहा।
**मन्दारिका**–तेण हि अहिलिहिअ दंसेहि।
**सुभद्रा**–सहि, तह।
**मन्दारिका**–कुदो दाणिं उवअरणाइ।
**सुभद्रा**– हला, एक्कं असोअपल्लवं उवणेहि। जदो तहिं णिवडतबाहसलिलोल्लिएण इमिणा थणंगरा–अहरिचदंणरसेण णहग्गतूलिआधरिएण लिहिस्सं।
**मन्दारिका**–सहिं, सोहणाइ अणंगलेहोवअरणाइ। ता एसा आणेमि। (उत्थाय नाट्येन निकृत्योपनयति)।

**(सुभद्रा आदाय तथा बिलिखति)**

**मन्दारिका**=सहिं, देहि, वाचस्सं।
**सुभद्रा**=बाहेदि मं लज्जा। जाव तुण्हिक्का मणेण बाएहि।
**मन्दारिका**=तह करिस्सं। (लेखामादाय, निरीक्ष्य, मनसा वाचयित्वा) सहि, साहु साहु। गहीरमहुरा वाचोजुत्ती। (तथा करिष्यामि)

Jain Vishva Bharati Institute (Deemed University), Ladnun

**सुभद्रा**=पसंसा वि उवहासो मे पडिभासइ।

**मन्दारिका**=एसा अहं ण पसंसिस्सं। सो एव्व परं पसंसेदु।

**सुभद्रा**=(सलज्जम्) किं तेण वि जणेण एदं दक्खिदव्वं।

**मन्दारिका**=अण्णहा कहं अणंगलेहो भवे।

**सुभद्रा**=हला, कुदो मं लहूकरेसि।

**मन्दारिका**=(लेखं विलोक्य) जह एदाइ अक्खराइ सुत्थिदाइ भविस्संति तह एअं करअलफंसासहं एत्थ एव्व असोअक्खंधे मुहुत्तअं पि समप्पिस्सं।

**सुभद्रा**=हला, कदमं खु सो भूमिं महाभाओ अलंकरेदि।

**मन्दारिका**=जा वा का वा होदु णिवासभूमि। किं तेण। तं पुण महाभाअं इह एव दक्खिस्ससि। जदो तुह दंसणादो पहुदि एसा तस्स विणोदभूमि।

**सुभद्रा**=(आत्मगतम्) अवि णाम पिअसहीवअणं समस्सासणमेत्तं ण हवे।

## 19. सुभद्रा का पत्रलेखन

**(उसके बाद उत्कण्ठा से युक्त बैठी हुई सुभद्रा और मन्दारिका का प्रवेश)**

**सुभद्रा**=(दीर्घ निःश्वास लेकर खेदपूर्वक मन में सोचती है) अरे! मूढहृदय! उस व्यक्ति का स्मरण करना तुम्हारे लिए एकान्त रूप से संताप उत्पन्न करने वाला है, यह जानते हुए भी क्यों तुम पुनः उसको याद करते हो? हे चंचल आंखें! जिसके निकट होने पर पूर्णतया दर्शन करने के लिए भी समर्थ नहीं थे, उसी को ही अभी देखने की अभिलाषा करते हुए क्यों मुझे दुःख दे रहे हो? अरे दुर्विदग्ध हाथों जिनके द्वारा तुम ग्रहण किए गए थे वे अदुरभिमान एवं व्यसन से परतंत्र होकर तुम्हें छोड़ने की इच्छा वाले हो गए हैं फिर भी उसी के स्पर्शसुख की इच्छा निर्लज्ज होकर क्यों करते हो? हे कामदेव! अन्य के प्रति अनुराग के कारण उस व्यक्ति के पराधीन होने पर मुझे पीड़ा देते हुए क्यों तुम्हारे बाणों के विनोद का लक्ष्य कर रहे हो?

**मन्दारिका**=प्रियसखी! क्या सोच रही हो?

**सुभद्रा**=कुछ भी नहीं। (अलग अनमनी)

**मन्दारिका**=फिर अन्य सी क्यों हो।

**सुभद्रा**=कहां?

**मन्दारिका**=जिसके बारे में तुम लगातार सोच रही हो।

**सुभद्रा**=(लज्जापूर्वक) जानते ही हो फिर मुझे क्यों पूछती हो।

**मन्दारिका**=उसके लिए प्रश्न भी तुम्हारी प्रसन्नता के लिए है।

**सुभद्रा**=सखि! पराधीन उस व्यक्ति में उत्सुक मेरा क्या उपहास करती हो।

**मन्दारिका**=सखि! चतुरता से उत्तर दिया है, क्या उसको पुनः प्राप्त नहीं करोगी। (हंसकर) अथवा विरुद्ध वर्ण–विन्यास के बहाने तुम्हारे ऊपर उसके असाधारण बहुमान को प्रकट करती हुई अपनी प्रशंसा करवाती हो।

**सुभद्रा**=(लज्जापूर्वक मुस्कराती हुई) प्रियसखी! यह हाथ जोड़ती हूं। मेरी उपहास मत करो।

**मन्दारिका**=यह लो मैं चुप हो गई।

**सुभद्रा**= (खेदपूर्वक मन में) खेद है, कब इस कामरोग का अवसान (अंत) होगा। जिसके निर्दयता की पीड़ा से भारी बना हुआ मेरा शरीर चंप का इच्छुक प्रतीत हो रहा है। अथवा कहां है मेरा जो इस के कल्याण (सुख) में परिणमित करेगा। (रोती है)

**मन्दारिका**=सखी, कहां तुम्हारी अपशकुन! प्रतिदिन तुम्हारे निमित्त सिद्ध हो रहे हैं।

**सुभद्रा**=निश्चय ही सखियां प्रियभाषी होती हैं।

**मन्दारिका**=ऐसा मत सोचो। निमित्त सर्वथा गलत नहीं बोलते।

Jain Vishva Bharati Institute (Deemed University), Ladnun

**सुभद्रा**=अच्छा।

**मन्दारिका**=प्रियसखी! तुम्हारा मन क्या चाहता है?

**सुभद्रा**=हला (सखी) अच्छा कहा। उसके लिए लेख ही हो।

**मन्दारिका**=क्या प्रेम–संदेश काव्य है।

**सुभद्रा**=(लज्जापूर्वक) वैसा ही है।

**मन्दारिका**=सखी, बोलो बोलो।

**सुभद्रा**=यदि मेरा उपहास नहीं करोगी तो यह मैं बोलूंगी।

**मन्दारिका**=यह उपहास का स्थान नहीं है।

**सुभद्रा**=तो सुनो।

**मन्दारिका**=मैं सजग हूं।

**सुभद्रा**=(स्मरण करके) कहने के लिए मेरा जीह्वा लजा रही है।

**मन्दारिका**=तो लिखकर दिखा दो।

**सुभद्रा**=सखी, वैसा ही।

**मन्दारिका**=इस समय उपकरण कहां हैं।

**सुभद्रा**= सखी, एक अशोक के पत्ते लाओ। जिससे उसमें गिरते हुए अश्रुजल से, इस स्तनांग पर लगाये गये हरिचन्दन से नख को तूलिका के रूप में धारण करके लिखूंगी।

**मन्दारिका**=सखी, कामपत्र के लेखन की सामग्री अच्छी है। तो यह मैं लाती है।

(उठकर नाटकपूर्वक तोड़कर लाती हूं)

(सुभद्रा लेकर लिखती है)

**मन्दारिका**=सखी दो, पढूंगी।

**सुभद्रा**=मुझे लज्जा रोक रही है। अतः चुपचाप मन में पढ़ना।

**मन्दारिका**=वैसा करूंगी। (लेख लेकर, देखकर, मन में पढ़कर) सखी, अच्छा अच्छा। गंभीर और मधुर वाणी की युक्ति है। (वैसा करूंगी)

**सुभद्रा**=प्रशंसा भी मुझे उपहास प्रतीत हो रही है।

**मन्दारिका**=यह मैं प्रशंसा नहीं कर रही हूं। वह भी प्रशंसा करेगा।

**सुभद्रा**=(लज्जापूर्वक) क्या उसे भी यह दिखाया जाना चाहिए।

**मन्दारिका**=अन्यथा कामपत्र कैसे होगा।

**सुभद्रा**=सखी! मुझे क्यों छोटा बना रही हो।

**मन्दरिका**=(पत्र देखकर) जब तक यह अक्षर सुस्थित (सुख) न हो जायें तब तक करतल के स्पर्श करने में असमर्थ इसे यहीं पर ही अशोक के स्कन्ध पर क्षणभर के लिए रख देती हूं।

**सुभद्रा**=सखी! वह महाभाग किस स्थान को अलंकृत करते हैं अर्थात् किस स्थान पर बैठते हैं।

**मन्दारिका**=निवासभूमि जो भी हो। उससे क्या? उस महाभाग को यहीं पर ही देखोगे। क्योंकि तुमको देखने के बाद से लेकर यहीं उनका विनोद का स्थान है।

**सुभद्रा**=(मन ही मन) प्रियसखी का वचन मात्र समाश्वासन देने वाला न हो।

**कठिन शब्दों के अर्थ**

कीस——क्यों

संणिहिदे——निकट होने पर

कुदो——कैसे, क्यों

दक्खिण्णमेत्तदिण्णुत्तरं——चतुरता से उत्तर दिया है।

Jain Vishva Bharati Institute (Deemed University), Ladnun

चंपणाअ——दबाने के लिए
भाववेआ——भाववेत्ता
अहरहं——प्रतिदिन
विसंवदंति——उल्टा बोलते हैं
होदु——अच्छा
अवहिद——सावधान
दसंहि——दिखाओ
वाचइस्सं——पढूंगी
कदमं——कौनसी
पहुदि——(प्रभशति) लेकर

## 20. कूरो चेडो य पहसणं

**क्रूरः**=(मदं नाटयन्, सबहुमानम्)

**अवि जश्श णामहेयं शुलाशुला निशमिऊण वेवंति।**
**एशे शेखुक्कूले विज्जाहलभेलवे अहके।।1।।**

अह य=

**मंतेण व जंतेण व तंतेण व णत्थि दुक्कलं णाम।**
**मह एत्तियम्मि लोए के अण्णे मालिशे पुलिशे।।2।।**

**चेटः**=(उपसृत्य) शामिअ एशे अहके पणवेमि।

**क्रूरः**=पियशिश्शा, जावज्जीवं मं शुश्शूशेहि।

**चेटः**=एशे दाशे अणुगहिदे। एदाइ णवुउप्पलाइ।

**क्रूरः**=अले हिंतालअ, एत्तिअं, वेलं किं ति तुमे विलंबिअं?

**चेटः**=शामिअ अय्ये खु लद्धहूदी जिण्णुज्जाणए दाणिं तुमं पडिवालेंते चिट्ठइ। तं खु दट्ठूण चिलाइदं।

**क्रूरः**=किं ति एण्हि तुण्हिक्के चिट्ठशि? वाशेहि दाव उप्पलेहिं (प्रकाशम्) जं शामी आणवेदि। (यथोक्तमनुतिष्ठति)

**चेटः**= (हास्यं निरुधन्, आत्मगतम्) शु कहाणं जाणिदे मए अवशले (प्रकाशम्) जं शामी आणवेदि (यथोक्तमनुतिष्ठति)

**क्रूरः**=अले हिंतालअ, एहि दाव।

**उल्लाशंते तिशूलअ णच्चंते अ जहाशमीहिअं।**
**गाअंते महुलं धुवं विहिए विहलेमि शंपदं।।3।।**

(परिक्रमतः)

**क्रूरः**=(सहर्ष गायति)

**शुहं पिबंतए शाहुपशण्णअं पए पए खलंते अ विशंथुलं।**
**महाणुभावए णिब्भलमत्तए शदा विजेदु विज्जहलभेलवे।।4।।**

अह अ=

**शलशं णिहिदुप्पलअं शुलअं पिबिऊण मए वि घडंतशुभे।**
**विहलेमि चलेमि खलेमि अले अहके कुलुले कुलुले कुलुले।।5।।**

(स्खलन्)

Jain Vishva Bharati Institute (Deemed University), Ladnun

अले कहं चलेदि पुढवी=

(सहासम्)

**होदि बिइअं खु एदं मं बलिअं मदभलेण णिब्भलिअं।**
**अशमत्था धालेदुं शच्चं खु वशुंधला चलइ।।6।।**

अले हिंतालअ, आवज्जेहि एत्थ आपाणअचशअम्मि कुंभएण वालुणिं। अहव तेण एव्व कुंभएण आअलं पिबिश्शं। (तथा कृत्वा) अले शविशेशं खु शुलशा एशा शुला। (मदं नाटयन्) कहं मं विणा एक्कं महापुलिशं शामण्णमाणुशं शुलोएदि वलाए लोए। ता पडिबोहिश्शं दाव।

**शुणुथ शुणुथ शव्वे शव्वहा शज्जणा ए।**
**मह चिअ चलणाणं शाहु शुश्शूशएह।।**
**पिविअ पिविअ हालं खेलखेलं खलंते।**
**विहलइ चलअंते ते शलीलं शलीलं।।7।।**

**चेटः**=(निर्वर्ण्य) कहं अदिभूमिं आलूढे शामिणो मदभले।
तह हि=

**गंडूशिअ शंपदं शुलं मुह णिट्ठीवइ शीहलच्छडं।**
**विज्जाहलभेलवे शअं शशलीले शअले पिहं पिहं।।8।।**

**क्रूरः**=(परितोऽवलोक्य) अले कहं पलिदो वि पलावेदि शुलाशमुद्दए।
**चेटः**=कहं शुलामअभावदाए शव्वदो इमश्श पलाशमुद्दए पडिहाअइ।
**क्रूरः**=(वीचिसम्पातं नाटयति) कहं उव्वेलआ एदे तलंगआ। अले हिंतालअ, एहि तलिश्शम्ह। (तरणं नाटयन्)

**शमुच्चलंते लहलीशदेहिं शुलासमुद्दे शहशम्हि मग्गे।**
**अले अले किं अहकं कलिश्शं कहं तलिश्शं अहवा पिबिश्शं।।9।।**

(श्रम नाटयन्) अले बलिअ खु दाणिं अहकं पलिश्शंते। ता एद पलिश्शमं इमिणा मंतजवेण शमइश्शं।

**शुंडा शुला पशन्ना कल्ला काअंबली महू शीहू।**
**मइला मज्जं महुला मेलेई वालुणी हाला।।10।।**

(पुनः पुनः पठति)

**चेटः**=कहं पलिश्शते दाणिं शामी।
**क्रूरः**=अले कुत्थ एण्हि विश्शमिश्शं।
**चेटः**= (आत्मगतम्) पलिश्शते विअ शामिणो मदे। ता विण्णविश्श दाव। (प्रकाशम्) शामिआ, अज्जे खु लद्धहूदी जिण्णुज्जाणम्मि को कालो शामिणं पडिवालेदि।
**क्रूरः**=अले हिंतालअ, किं ति खु एत्तिअं वेलं तुम्हे ण भणिदं।
**चेटः**=शामिआ, भणिदं खु मए पुव्वं। शामिणा मदभलपलवशेण ण आअण्णिदं।
**क्रूरः**=हूं, मे पमादे। जाव तहिं गमिश्शामो।
**चेटः**=इदो इदो।
**चेटः**=शामिआ, एअं खु जिण्णुज्जाणं।

(उभौ प्रविशतः)

**चेटः**=(अङ्गुल्या निर्दिश्य) शामिआ, एशे खु अज्जलद्धहूदी तुह आअमणं पडिवालेदि।

Jain Vishva Bharati Institute (Deemed University), Ladnun

जिसका नाम सुनकर सुर–असुर भी कांपते है।
यह वह ही मैं क्रूर विधाधर भैरव हूं।।

और भी=

मंत्र से यंत्र से तंत्र से मेरे लिए कुछ भी दुष्कर नहीं है।
क्योंकि, इस लोक में मेरे समान दूसरा पुरुष कौन हैं?।।

**चेट**=(पास जाकर) स्वामी! यह मैं प्रणाम करता हूं।

**क्रूर**=प्रियशिष्य! यावज्जीवन मेरी सेवा करो।

**चेट**=यह दास अनुग्रहीत हुआ। यह नये नीलकमल हैं।

**क्रूर**=अरे हिंतालक, इतना बिलम्ब कैसे किया?

**चेट**=स्वामी, आर्य लब्धभूति जिन उद्यान में इस समय आपकी प्रतिक्षा कर रहे हैं। उनके दर्शन करने में देरी हो गई।

**क्रूर**=तुम इस समय चुपचाप क्यों बैठे हो? तब तक कमलों के द्वारा घड़े में भरी हुई शराब को सुगंधित करो।

**चेट**=(हंसी रोककर, मन ही मन) मैंने अच्छी बात कहने का अवसर जान लिया है। (प्रकाश में प्रकट रूप में) जो स्वामी की आज्ञा। (जैसा कहा वैसा करता हुआ)

**क्रूर**=अरे हिंतालक, इधर आओ।

त्रिशुल को उछालते हुए इच्छानुसार नाचते हुए।
विधिपूर्वक मधुर ध्रुवपद को गाते हुए अब मैं विचरण कर रहा हूं।

(घूमते हुए)

**क्रूर**=(हर्ष पूर्वक गाता है)

सुखपूर्वक पीता हुआ अत्यन्त प्रसन्न विषम भूमि पर पद–पद पर स्खलित तथा विह्वल।
महानुभाव एवं पूर्ण उन्मत्त विद्याधर भैरव जयशील हो विजय हो।।

और भी=

सरस, नीलकमल से युक्त, शराब को पीकर मैंने शुभ कार्य किया है।
अरे! मैं क्रूर विचरण करता हूं, चलता हूं, लढ़खड़ाता हूं।।

(गिरता हुआ)

अरे! पश्थ्वी कैसे चल रही है=

(हास्यपूर्वक)

निश्चित ही अत्यधिक मद के भार से भरे हुए मुझ बलवान को धारण करने में असमर्थ पश्थ्वी चल रही है, ऐसा मुझे विदित हो रहा है।

अरे हिंतालक! शराब के प्याले में घड़े से शराब भर कर लाओ अथवा उस घड़े से ही गले आकण्ठ पीलूं। (वैसा करके) अरे! यह शराब विशिष्ट सरस है। (मद का नाटक करता हुआ) एक मुझ महापुरुष के बिना इस बेचारे लोक में सामन्य पुरुष कैसे प्रशंसित होंगे।

विशंथुलं——ऊबड़–खाबड़, अव्यवस्थित

**हे सज्जनो! सभी सर्वथा (पूर्णतया) सुनो सुनो।**
**मेरे ही चरणों की अच्छी तरह से सेवा करो।।**

शराब को पी पीकर पग–पग पर स्खलित होते हुए जो विलासपूर्वक अपने शरीर को चलाते हुए विचरण कराते हैं।

**चेट**=(देखकर) स्वामी मद के भार से कैसे भूमि पर आरूढ़ हो गये? (अर्थात् गिर गये)

इसीलिए ही=

इस समय विद्याधर भैरव अत्यधिक शीतल छटावाली शराब का कुल्ला करके मुहं से अपने शरीर के भिन्न भिन्न अंगों पर थूक रहा है।

**क्रूर**=(चारों ओर देखकर) अरे चारों ओर शराब का समुद्र कैसे लहरा रहा है? (उमड रहा है)

**चेट**=शराब के मद के प्रभाव से इसको सब और शराब का समुद्र प्रतिभासित हो रहा है।

**क्रूर**=(लहरों के आने का नाटक करता है) ये कितनी उद्वेलित तरंगे हैं।

हिंतालक! आओ तैरते हैं (तैरने का नाटक करता हुआ) उछलती हुई सैंकड़ों लहरों वाले सुरा समुद्र में सहसा ही मग्न हो रहा हूं।

Jain Vishva Bharati Institute (Deemed University), Ladnun

अरे अरे! मैं क्या करूं तरूं अथवा पी जाऊं? (श्रम का नाटक करके) अरे, मैं इस समय अत्यधिक थक गया हूं। तो इस परिश्रम को इस मंत्र जप से शांत करता हूं।

शुंडा, सुरा, प्रसन्ना, कल्या कादम्बरी मधु शीधु।
मदिरा मद्य मद्युरा मैरेयी वारुणी हाला।।

(बार–बार पढ़ता है)

**चेट**=इस समय कैसे थक गये?

**क्रूर**=अरे! इस समय कहां विश्राम करूं?

**चेट**=(मन में) मद में स्वामी थक गये हैं। अब तो निवेदन करता हूं (प्रकट रूप में) स्वामी! आर्य लब्धभूति जिन उद्यान में कितने समय से स्वामी का प्रतीक्षा कर रहे हैं।

**क्रूर**=अरे हिंतालक! इतनी देर तुमने क्यों नहीं कहा?

**चेट**=स्वामी! मैंने पहले ही कहा था। किन्तु स्वामी ने मद के प्रभाव के कारण नहीं सुना।

**क्रूर**=अच्छा, मेरा प्रमाद है। अब मैं वहीं जाऊंगा।

**चेट**=इधर, इधर।

**चेट**=स्वामी!यह जिन उद्यान है।

(दोनों प्रवेश करते हैं)

**चेट**=(अंगुली से निर्देश करके) स्वामी! यही आर्य लब्धभूति आपके आगमन का प्रतिक्षा कर रहे हो।

**कठिन शब्दों के अर्थ**

शे (सः)——वह
क्कूले——क्रूर
भेलवे——भैरव
अहके——मैं
मालिशे (मादश्शः)——मेरे जैसा
शुश्शूशेहि——सेवा करो
अय्ये——आर्य
दाणिं——इस समय
पडिवालेंते——इन्तजार कर रहे हैं।
अवशले——अवसर पर

Jain Vishva Bharati Institute (Deemed University), Ladnun

# जैन विश्वभारती संस्थान

(मान्य विश्वविद्यालय)

**लाडनूं – 341 306 (राजस्थान)**

**दूरस्थ शिक्षा निदेशालय**

## पाइयगज्जसंगहो (सम्पूर्ण)
## (हिन्दी अनुवाद सहित)

**बी.ए. स्नातक (द्वितीय वर्ष)**

**विषय आगम विद्या एवं प्राकृत साहित्य**

**द्वितीय पत्र–अर्द्धमागधी आगम एवं प्राकृत कथा साहित्य**

**अनुवादिका–समणी संगीतप्रज्ञा**

Jain Vishva Bharati Institute (Deemed University), Ladnun

**प्रिय विद्यार्थियों,**

इस संग्रह में पूर्व में गद्य खण्ड तदनन्तर उसका हिन्दी अनुवाद दिया गया है। आशा है इससे आपके अध्ययन में सुविधा होगी। पाठों की अनुक्रमणिका निम्न प्रकार है :


| विषय | पृष्ठ संख्या |
|---|---|
| 1. पंच सालिकणाणं सत्ति | 1 |
| 2. रमणीए पराभूय–सिकंदरस्स कहा | 3 |
| 3. विउसीए पुत्तबहुए कहाणगं | 7 |
| 4. कस्सेसा भज्जा | 11 |
| 5. ससुर गेहवासीणं चउजामायराणं कहा | 13 |
| 6. सिप्पिपुत्तस्स कहा | 17 |
| 7. अमंगलिय पुरिसस्स कहा | 19 |
| 8. गेहेसूरो | 21 |
| 9. गमिल्लओ सागडिओ | 23 |
| 10. पुत्तेहिं पराभविअस्स पिउस्स कहा | 25 |
| 11. भारियासीलपरिक्खा | 28 |
| 12. छक्खंडागमलेहणकहा | 32 |
| 13. उज्जममेव फलदाणे पमाणेइ | 35 |
| 14. कुमार मंतिस्स दंडविहि | 37 |
| 15. चोरिक्कविसए दुण्हं विउसाणं कहा | 39 |
| 16. वसुदेवस्स गिहच्चओ | 41 |
| 17. नलकहा | 44 |
| 18. महुविंदु–दिट्ठंतं | 47 |
| 19. सुभद्दापत्तलेहणं | 49 |
| 20. कूरो चेडो पहसणं | 53 |


Jain Vishva Bharati Institute (Deemed University), Ladnun